TIGHT BINDING BOOK

UNIVERSAL
LIBRARY
OU_182452
UNIVERSAL
LIBRARY

SMANIA UNIVERSITY LIBRARY

H
82
SS6A

Accession No. H 4089

शेक्सपियर
आग्रे तो

his book should be returned on or before the date
rked below.

हिन्दी शेक्सपियर

ऑथेलो

शेक्सपियर

अनुवादक: डा॰ रांगेय राघव

पाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

मूल्य : १७५ नये पैसे
प्रथम संस्करण : जुलाई १६५७
आवरण : नरेन्द्र श्रीवास्तव
प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली
मुद्रक : हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली

शेक्सपियर विश्व-साहित्य के गौरव, अंग्रेजी भाषा के अद्वितीय नाटककार शेक्सपियर का जन्म २६ अप्रैल, १५६४ ई० में स्ट्रैटफोर्ड-आन्-ऐवोन नामक स्थान में हुआ। उसकी बाल्यावस्था के विषय में बहुत कम ज्ञात है। उसका पिता एक किसान का पुत्र था, जिसने अपने पुत्र की शिक्षा का अच्छा प्रबन्ध भी नहीं किया। १५८२ ई० में शेक्सपियर का विवाह अपने से ८ वर्ष बड़ी ऐनहैथवे से हुआ और सम्भवतः उसका पारिवारिक जीवन सन्तोषजनक नहीं था। महारानी एलिज़ाबेथ के शासनकाल में १५८७ ई० में शेक्सपियर लन्दन आकर नाटक कम्पनियों में काम करने लगा। हमारे जायसी, सूर और तुलसी का प्रायः समकालीन यह कवि यहीं आ कर यशस्वी हुआ और उसने अनेक नाटक लिखे, जिनसे उसने धन और यश दोनों कमाये। १६१२ ई० में उसने लिखना छोड़ दिया और अपने जन्मस्थान को लौट गया और शेष जीवन उसने समृद्धि तथा सम्मान से बिताया। १६१६ ई० में उसका स्वर्गवास हुआ।

इस महान् नाटककार ने जीवन के इतने पहलुओं को इतनी गहराई से चित्रित किया है कि वह विश्व-साहित्य में अपना सानी सहज ही नहीं पाता। मारलो तथा बेन जानसन जैसे उसके समकालीन कवि उसका उपहास करते रहे, किन्तु वे तो लुप्त-प्रायः हो गये, और यह कविकुल-दिवाकर आज भी देदीप्यमान है।

शेक्सपियर ने लगभग ३६ नाटक लिखे हैं, कविताएँ अलग।

उसके कुछ प्रसिद्ध नाटक हैं—जूलियस सीजर, ग्रॉथेलो, मैकबैथ, हैमलेट, लियर, रोमियो जूलियट (दु:खान्त); ग्रीष्म-मध्यरात्रि का स्वप्न, वेनिस का सौदागर, बारहवीं रात, तिल का ताड़ (मच एडू ग्रबाउट नथिंग), शीतकाल की कथा, तूफ़ान (सुखान्त)। इनके ग्रतिरिक्त ऐतिहासिक नाटक हैं तथा प्रहसन भी हैं। प्राय: उसके सभी नाटक प्रसिद्ध हैं।

शेक्सपियर ने मानव-जीवन की शाश्वत भावनाग्रों को बड़े ही कुशल कलाकार की भाँति चित्रित किया है। उसके पात्र ग्राज भी जीवित दिखाई देते हैं। जिस भाषा में शेक्सपियर के नाटकों का ग्रनुवाद नहीं है वह भाषाग्रों में कभी नहीं गिनी जा सकती।

भूमिका

ऑथेलो एक दु:खांत नाटक है। शेक्सपियर ने इसे सन् १६०१ से १६०८ ई० के बीच लिखा था। यह समय शेक्सपियर के नाट्य-साहित्य के निर्माण-काल में तीसरा काल माना जाता है जबकि उसने अपने प्रसिद्ध दु:खांत नाटक लिखे थे। इस काल के नाटक प्राय: निराशा से भरे हैं।

ऑथेलो की कथा संभवत: शेक्सपियर से पहले भी प्रचलित थी। दरबारी नाटक मंडली ने राजा जेम्स प्रथम के समय में पहली नवम्बर १६०४ ई० को सभा में 'वेनिस का मूर' नामक नाटक खेला था। शेक्सपियर ने भी ऑथेलो नाटक का दूसरा नाम—'वेनिस का मूर' ही रखा है। संभवत: यह शेक्सपियर का ही नाटक रहा हो। कथा का मूल स्रोत संभवत: १५६६ ई० में वेनिस में प्रकाशित जिराल्डी चिन्थिओ की 'हिकैतोमिथी' पुस्तक से लिया गया है। अंगरेज़ी साहित्य को इस कथा का शेक्सपियर के अतिरिक्त कहीं विवरण प्राप्त नहीं होता। शेक्सपियर की कथा और चिन्थिओ की कथा में काफी अन्तर है।

इस कथा में मेरी राय में खलनायक इआगो का चित्रण इतना सबल है कि देखते ही बनता है। प्राय: प्रत्येक पात्र अपना सजीव चित्र छोड़ जाता है। विश्व-साहित्य में ऑथेलो एक महान् रचना है क्योंकि इसके प्रत्येक पृष्ठ में मानव-जीवन की उन

गहराइयों का वर्णन मिलता है, जो कि सदैव स्मृति पर खिंच कर रह जाती हैं

मैंने अपने अनुवाद को जहाँ तक हुआ है सहज बनाने की चेष्टा की है। कुछ बातें हमें याद रखनी चाहियें कि शेक्सपियर के समय में स्त्रियों का अभिनय लड़के करते थे। दूसरे उसके समय में नाटकों में पर्दों का प्रयोग नहीं होता था, दर्शकों को काफ़ी कल्पना करनी पड़ती थी। इन बातों के बावजूद शेक्सपियर की कलम का जादू सिर पर चढ़ कर बोलता है। यदि आपको इस नाटक में कोई कमी लगे तो उसे शेक्सपियर पर न मँढ कर, मेरे अनुवाद पर मँढिये, मैं आभारी होऊँगा।

—रांगेय राघव

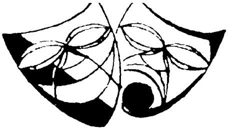

पात्र-परिचय

ऑथेलो : मूर*
ब्रैबेन्शियो : डैसडेमोना का पिता
कैसियो : एक सम्मानित सैन्य पदाधिकारी (लेफ्टिनेंट)
इआगो : खलनायक : सेना में 'ऐन्शेन्ट' पद पर है
रोडरिगो : वेनिस का एक नागरिक, डैसडेमोना का प्रेमी
ड्यूक : वेनिस का शासक
मोनटानो : साइप्रस का राज्यपाल (गवर्नर)
लोडोविको } वेनिस के संभ्रांत नागरिक
ग्रेशियानो } ब्रैबेन्शियो के संबंधी
विदूषक : ऑथेलो का सेवक
डैसडेमोना : ब्रैबेन्शियो की पुत्री, ऑथेलो की पत्नी
इमीलिया : इआगो की स्त्री
बियान्का : कैसिओ की रखैल

[साइप्रस के नागरिक दूत, संवादवाहक, अफ़सर, जहाज़ी लोग (मांझी), गायक तथा सेवकगण, सिनेट (विधान-परिषद्) के सदस्य—सिनेट इत्यादि]

मूर—उत्तरी अफरीका के निवासी का एक वंशज जो ईसाई है और इटली का वासी है। वह रंग का काला है क्योंकि उसमें हब्शी जाति का-सा रंग बाकी है, वैसी ही आकृति है। एक समय मध्यकाल में मूर बड़े महत्त्वपूर्ण होते थे।

पहला अंक

दृश्य १

[रोडरिगो और इआगो का प्रवेश]

रोडरिगो : क्या बात करते हो ! मुझसे बहाने और चालें और वह भी तुम करोगे इआगो ! इसकी तो मुझे आशा न थी ! मेरे धन के बटुए की तनियों को तो तुमने सदैव अपना समझ कर खोला-बंद किया है और तब भी सब कुछ जान-बूझ कर तुमने मुझसे दुराव किया ?

इआगो : भगवान की सौगंध, कुछ मेरी भी सुनोगे या अपनी-अपनी कहे जाओगे ? मुझे तो सपने में भी इसका गुमान नहीं था ! अगर जान कर छिपाता तब तो तुम्हारी घृणा भी उचित होती !

रोडरिगो : तुम नहीं कहते थे कि तुम्हें उससे घृणा थी !

इआगो : यदि मैं उससे घृणा न करता होऊँ तो तुम मुझसे घृणा करो ! वेनिस नगर के तीन-तीन संभ्रांत नागरिक व्यक्तिगत रूप से उसके पास गये कि वह मुझे अपना लेफ़्टिनेन्ट बनाये, मेरे ही लिये उन्होंने उससे सविनय प्रार्थना की ! और क्या मैं अपना मूल्य नहीं जानता कि किसी भी परिस्थिति में मैं उस पद के लिये बिल्कुल योग्य था ! किन्तु उसके अहं को ठेस लग गई। वह तो स्वार्थी ठहरा। उसने फौजी काम की बारीकियों के बारे में वह बड़ी-बड़ी बातें कीं, वह उलझनें पेश कीं कि सुनने योग्य था ! उसने उनसे साफ़ इंकार कर दिया। नतीजा क्या निकला ! मेरी सिफारिश करने वालों को उसने बताया कि उक्त पद के लिये अफ़सर का चुनाव तो वह पहले ही कर चुका था। और किसका नाम बताया

उसने, जानते हो ? फ़्लोरेन्स का माइकिल कैसियो, एक महान गणितज्ञ[1] का, शायद उसे एक सुंदर स्त्री ने बरबाद भी कर दिया है।[2] कभी उसने युद्धभूमि में सेना का संचालन नहीं किया, सिवाय इसके कि उसे किताबी जानकारी हो, शायद एक अनुभवहीन अविवाहित स्त्री से अधिक युद्ध के विषय में वह कुछ नहीं जानता। उसका सारा सैनिकत्व अभ्यासहीन वितण्डामात्र है। और उस आदमी को किसकी जगह चुना गया है जानते हो ? मेरी जगह, मैं—जिसकी योग्यता को रोह्ड्स और साइप्रस ही नहीं, अनेक ईसाई तथा विधर्मी भूमियों में हज़ारों आँखों ने देखा है। मैं तो इस पर हैरान हूँ कि मेरी जगह लेने वाला व्यक्ति सिर्फ़ बही-खाते लिखने के योग्य है। वह मुनीम उसका लेफ़्टिनेन्ट बने, और मूर-महाराज का पुराना सेवक मैं एक अनुचरमात्र ही बना रहूँ ! ईश्वर क्या तू नहीं देखता ? यही मेरी पुरानी सेवाओं का फल है ?

रोडरिगो : मैं तो, भगवान की सौगंध, उस मूर का बधिक होना चाहता हूँ.... फाँसी लगा दूं उसे ....

इआगो : लेकिन और कोई चारा भी तो नहीं, नौकरी का यह अभिशाप तो है ही कि उन्नति पक्षपात और सिफ़ारिश पर ही निर्भर रहती है। (अफ़सर खुश तो रास्ता साफ़) वर्ना यह कौन देखता है कि योग्यता क्या है ?) नौकरी करते कितना समय निकल गया, कितना अनुभव प्राप्त हुआ ! इस तरीके में तो एक गया उसके पीछे वाले

---

१. व्यंग्य में कहता है, वैसे वह उसे आगे मुनीम से अधिक नहीं समझता।

२. इसका अर्थ वैसे स्पष्ट नहीं है। कुछ लोगों का मत यों है—शायद अब वह एक सुंदर स्त्री के चक्कर में पड़ने वाला है, जो उसे बरबाद कर देगी। एक और मत है—अब वह सुंदर स्त्री को पत्नी बनायेगा, तो वह अवश्य ही उसे खोखला करके बरबाद कर डालेगी।

को अपने आप जगह मिल गई ! अब देखो न, तुम ही न्याय करो, क्या ऐसी हालत में मैं उस मूर से कभी भी प्रेम कर सकता हूँ ?

रोडरिगो : मैं तो उसके आधीन कभी नौकरी ही नहीं करता ।

इआगो : भाई मेरे, इस तरफ से फिक्र छोड़ दो । मैं उसकी सेवा करता हूँ, क्यों ? सिर्फ़ अपनी योजना को उसके विरुद्ध पूरा करने को । सब तो स्वामी बन नहीं सकते, न सब स्वामियों की सेवा भी उसी भक्ति से की जा सकती है ! तुमने बहुत-से कर्त्तव्यरत सेवक देखे होंगे जो अपने स्वामियों के लिये रोटी और वेतन के लिये ही अपने जीवन तक को खपा देते हैं ! गधे की तरह बुढ़ापे तक खटते हैं और अन्त में अशक्त हो जाने पर निकाल दिये जाते हैं । ऐसे ईमानदार नीचों को तो कोड़े लगाने चाहियें । कुछ ऐसे नौकर होते हैं जो दिखाई तो बड़े कर्त्तव्यरत और ईमानदार देते हैं पर अपने मतलब में चौकस होते हैं । इस तरह मालिक को दिखावे से प्रसन्न करके अपना घर भरते हैं । यही लोग असल में मज़ा लूटते हैं । वे अपने स्वामी के बल पर धन प्राप्त करते हैं और साहसी होते हैं । मैं ऐसों में से ही हूँ । अगर तुम रोडरिगो हो, उसी प्रकार यदि मैं मूर हूँ तो कभी इआगो न रहूँ । ईश्वर साक्षी है कि ऑथेलो की सेवा मैं प्रेम और कर्तव्यवश नहीं, बल्कि अपनी स्वार्थसिद्धि के लिये करता हूँ । मेरा ध्येय विचित्र है, जिसमें बाहरी रूप से मैं कुछ और हूँ और मेरे भीतर कुछ और ही है । अगर मैं इतना मूर्ख हो जाऊँ कि मेरे बाह्य व्यवहार से ही मेरे मन की बात का पता चल जाये तो समझ लेना कि मैं संसार में उपहास का पात्र बन जाऊँगा, जिसका भीतर-बाहर एक होता है उसका तो हर मूर्ख उपहास करता है । सचाई यह है कि मैं वह नहीं हूँ जिसका कि दिखावा करता हूँ ।

रोडरिगो : लेकिन इस बात को यदि ऐसा ही माना जाये कि वह सफल हो गया तो वह मोटे होठों वाला मूर कितनी प्रसन्नता नहीं पा गया ?

इग्रागो : बढ़ो, उसके पिता को जगाग्रो, उसे सूचना दो। फिर ग्रॉथेलो का पीछा करो, उसकी प्रसन्नता का नाश करो। पथों पर पुकार-पुकार कर उसके ग्रपराधों की घोपरणा करो। डैसडेमोना के रिश्तेदारों को उस मूर के विरुद्ध भड़काग्रो। हालाँकि वह इस समय हरियाली में है, उसके चारों ग्रोर भयंकर मरुभूमि पैदा करने का यत्न करो। यद्यपि चारों ग्रोर उसे प्रसन्नता ही प्रसन्नता दिखाई दे रही है, फिर भी तुम उसे दुख ग्रौर विषाद में ले जाने की चेष्टा करो। ऐसा करो कि उसके ग्रानंद की चमक धुँधली पड़ कर बुझ जाये।

रोडरिगो : यह रहा उसके पिता का घर, मैं उसे पुकार कर बुलाता हूँ।

इग्रागो : ऐसी तड़पती ग्रावाज़ में पुकारो, ऐसा चीत्कार उठाग्रो, जैसे महानगर में ग्रनजाने ग्राग लग जाने पर रात को भीपरण कोलाहल होता है।

रोडरिगो : जागो··· जागो··· ब्रैबेन्शियो··· श्रीमान् ब्रैबेनशियो, उठो····

इग्रागो : उठो, ब्रैबेन्शियो···चोर···चोर···ग्रपने घर को देखो··· जागते रहो···कहाँ है तुम्हारी पुत्री···तुम्हारा धन···चोर··· चोर····

[ब्रैबेन्शियो एक खिड़की से झाँकता है।]

ब्रैबेन्शियो : यह कौन मुझे इस बुरी तरह चिल्ला कर बुला रहा है ? ग्राखिर बात क्या है ?

रोडरिगो : श्रीमान् क्या ग्रापका सारा परिवार घर में है ?

इग्रागो : क्या ग्रापके द्वारा सब सुरक्षित हैं ? बंद हैं ?

ब्रेबेन्शियो : लेकिन इन सवालों के पूछे जाने का मतलब क्या है ?

इआगो : श्रीमान्, आप लूटे जा रहे हैं और आपको पता भी नहीं है ? अपनी इज्ज़त को ढँकने का प्रयत्न करिये। आपका हृदय फट गया है, क्योंकि आपकी आत्मा की छाया आपकी लड़की आपको छोड़ गई है। इस समय, हाँ इसी समय, अभी भी। एक अधेड़ काला मेंढा[1] तुम्हारी लाड़ली गोरी भेड़ को फुसला रहा है। जागो, जागो, बजा दो घंटा और जगा दो इन नींद में खुर्राटे भरते हुए नागरिकों को, वर्ना वह शैतान आपको नाना बना कर छोड़ेगा। मैं कहता हूँ जागिये !

ब्रेबेन्शियो : क्या कहा ! पागल हो गये हो क्या ?

रोडरिगो : अहे सम्मानित श्रीमन्त ! आप मेरी आवाज़ पहचानते हैं ?

ब्रेबेन्शियो : नहीं, कौन हो तुम ?

रोडरिगो : मेरा नाम रोडरिगो है।

ब्रेबेन्शियो : इस नाम से तो तुम्हारा स्वागत और भी कम होगा। मैंने तुमसे कह दिया है कि मेरे घर के चक्कर मत लगाया करो। मैं साफ़ शब्दों में तुमसे कह चुका हूँ कि मेरी लड़की तुम्हारे लिये नहीं है। और अब खाना खाकर, डट कर शराब पी कर तुम नशे में यहाँ आये हो कि अपनी ईर्ष्या, प्रतिहिंसा और नीचता का प्रदर्शन करते हुए तुम मेरा विरोध करो और मेरी नींद बिगाड़ो !

रोडरिगो : शांत होइये श्रीमन्त ! शांत होइये।

ब्रेबेन्शियो : लेकिन याद रखो कि मेरी शक्ति और मेरी आत्मा इतनी निर्बल नहीं कि तुम्हें इसका कड़वा फल न चखा सकें !

रोडरिगो : धीरज धरिये श्रीमान्।

---

१. हिन्दी में मेंढे की मादा के लिये भेड़ के अतिरिक्त शब्द नहीं है। और इस भाव का कोई समानान्तर भी नहीं है।

ब्रैबेन्शियो : तो बताओ यह चोरी-डकैती की बकवास क्या है ? यह वेनिस है और मैं किसी बियाबान में तो नहीं रहता ?

रोडरिगो : परम सम्भ्रांत ब्रैबेन्शियो ! मैं आपके पास बड़े ही सच्चे दिल से आया हूँ। मेरी आत्मा बिल्कुल शुद्ध है।

इआगो : श्रीमान् ! आप उन लोगों में से हैं जो शैतान के कहने से भगवान की भक्ति भी नहीं कर सकते, क्योंकि आप जानते हैं कि बुराई में से अच्छाई कभी नहीं निकल सकती। क्योंकि हम आपकी सहायता करने आये हैं, आप हमें गुण्डा समझते हैं ? आपकी लड़की को एक मस्ताने घोड़े ने घेर लिया है, आप अपनी संतान को हिनहिनाता देखना पसंद करेंगे ? आप अपनी लड़कियों के लिये मूर[1] घोड़ों का प्रबंध करेंगे ?

ब्रैबेन्शियो : ज़रूर ही तू ऊँचा बदमाश है।

इआगो : आप ज़रूर हैं, सिनेटर जो हैं।[2]

ब्रैबेन्शियो : इसका तुझे जवाब देना होगा। रोडरिगो, तुझे तो मैं जानता हूँ।

रोडरिगो : श्रीमान् ! मैं हर बात का जवाब दूँगा। लेकिन कृपया यह बतायें कि क्या आपकी भी इसमें कुछ रज़ामंदी थी कि आपकी लाड़ली बेटी इस रात की अंधेरी बेला में, सिर्फ़ एक माँझी के साथ, न सिपाही, न रक्षक, एक किराये के टट्टू नीच माँझी के साथ[3] वासनामत्त मूर के आलिंगन में बद्ध होने के लिये गई है ? अगर ऐसा हो तो बता दें। शायद आपकी भी ऐसी कुछ इच्छा इस कार्य्य

---

१. मूर ऑथेलो भी है, अफरीका घोड़ा भी। उस समय के साहित्य में कितनी मुखरता का उदाहरण मिलता है !

२. यह व्यंग्य है।

३. वेनिस में नहरें बहुत हैं, जिनमें नावें चलती हैं।

में रही हो ! अगर आप इसे जानते हों तो हम अवश्य इस कोलाहल के लिये अपराधी हैं, घोर अपराधी हैं। लेकिन अगर आपको इस विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं है, तो जहाँ तक शिष्टाचार का मेरा ज्ञान है, मैं यही कह सकता हूँ कि आप हमारे प्रति अशिष्ट रहे हैं। आप यह न समझें कि आप जैसे सम्भ्रांत और ऊँची स्थिति के व्यक्ति से ऐसे विषय में हम कोई मज़ाक कर जायेंगे, इतनी बुद्धि और शिष्टता हम भी जानते हैं। मैं फिर दुहराता हूँ कि यदि आपकी पुत्री ने आपकी कोई आज्ञा इसमें प्राप्त नहीं की है, तो उसने आपके प्रति जघन्य अपराध किया है क्योंकि उसने अपने कर्त्तव्य, सौंदर्य्य, बुद्धि और वैभव को एक अमितव्ययी, भटकते हुए वासनामत्त पुरुष के साथ बाँध दिया है, जो आज यहाँ है कल कहीं और है। आप मेरी बात की सचाई की जाँच करें। अगर वह अपने कमरे में हो, या आपके सारे घर में कहीं हो, तो राज्य के विधान के अनुसार आप मेरे इस धोखा देने के प्रयत्न के लिये मुझे कड़े से कड़ा दण्ड दें, मैं तैयार हूँ।

ब्रेबेन्शियो : बत्ती जलाओ ! अरे कोई है ! मुझे रोशनी दो ! कहाँ हैं मेरे आदमी, उन्हें बुलाओ, क्या जो मैंने सुपना देखा था यह दुर्घटना उसकी सचाई की ओर उंगली नहीं उठाती ! अभी से मुझे भय होता है कि यह सत्य ही है। अरे रोशनी दो, मुझे बत्ती दो ![1]

[**प्रस्थान**]

इआगो : अब मुझे बिदा दो ! मुझे जाना है। मूर की सेवा में रहते हुए मेरे लिये यह उचित नहीं है कि इस प्रकार आम तरीके से मैं उसके विरुद्ध खड़ा हुआ पाया जाऊँ। मैं जानता हूँ कि इस हरकत के लिये राज्य उसे कितनी भी कड़ी फटकार क्यों न दे, लेकिन राज्य का

१. **बत्ती—मशाल।**

भी इतना साहस नहीं होगा कि उसे नौकरी से निकाल दे, क्योंकि इस समय उसके बिना राज्य का काम भी नहीं चल सकता। साइ-प्रस युद्ध शीघ्र ही प्रारम्भ होने वाला है, और वही उस युद्ध का संचालन करने की क्षमता रखता है। उसकी जगह ले सके ऐसा कोई धीर-वीर दिखाई नहीं देता। इसलिये मैं उससे कितनी भी घृणा क्यों न करूँ, चाहे उसके पास रहने को नरक-यातना के बरा-बर ही क्यों न मानूं, लेकिन वर्त्तमान की विवशता के कारण बाहरी तौर पर मुझे स्वामिभक्ति और प्रेम दिखाते रहना आवश्यक है। पक्की तौर से पकड़वाने के लिये तुम इन्हें सराय[1] की ओर ले चलो, मैं तुम्हें वहाँ उसके साथ ही मिल जाऊँगा। अच्छा, मैं चलता हूँ।

[प्रस्थान। रात का चोग़ा पहने ब्रैबेन्शियो, मशालें उठाये हुए नौकरों के साथ प्रवेश करता है।]

ब्रैबेन्शियो : कितनी जघन्य बात सत्य हो गई! वह चली गई है। मेरे जीवन से अब आनन्द की घड़ियाँ भी चली ही गई समझो। मेरे लिये कटुता के अतिरिक्त अब बचा ही क्या है? बताओ रोडरिगो! तुमने उसे कहाँ देखा? अरी अभागिन! मूर के साथ, यही न कहा था तुमने! हाय! अब भी क्या कोई पिता होने की इच्छा करेगा? तुम्हें कैसे पता चला कि वह डैसडेमोना ही थी! मुझे वह ऐसा धोखा दे गई? तुमसे उसने कुछ कहा था क्या? और रोशनियाँ ले लो, मेरे सारे सम्बन्धियों को जगा लो! क्या समझते हो, उन दोनों ने शादी कर ली होगी?

रोडरिगो : मुझे तो यही लगता है।

---

१. सैगिटरी का अर्थ यहाँ सराय लिया गया है, वैसे जी० बी० हैरिसन का मत है कि इस नाम की कोई इमारत कभी भी वेनिस में रही हो, इसका प्रमाण नहीं मिलता।

ब्रैबेन्शियो : हे भगवान ! वह घर से भाग कैसे निकली ? मेरा रक्त ही मुझे धोखा दे गया ? अरे पिताओ ! आज से कभी बाहरी बातों को देखकर ही अपनी पुत्रियों पर विश्वास मत कर बैठना। रोडरिगो ! ऐसे भी तो कुछ जादू-टोने होते हैं न जिनसे क्वारी लड़कियों की मति फेर दी जाती है, क्या तुमने ऐसी बातों के बारे में नहीं पढ़ा ?

रोडरिगो : हाँ श्रीमान्, पढ़ा है।

ब्रैबेन्शियो : अरे मेरे भाई को जगा दो। रोडरिगो ! अच्छा होता कि तुम ही उससे विवाह कर लेते ! अरे, कुछ इधर जाओ, कुछ उधर ढूंढो। (**नौकरों से कह कर फिर रोडरिगो से**) तुम्हें भी कुछ पता है कि वह कहाँ होगी ? कहाँ होगा वह मूर !

रोडरिगो : शायद मैं बता सकूं, लेकिन और रक्षक अपने साथ कर लीजिये और मेरे साथ चलिये।

ब्रैबेन्शियो : कृपया तुम्हीं बताओ। मैं हर घर को बुलाऊँगा। शायद ही मेरे बुलाए से किसी घर से लोग मेरे साथ चलने को न निकलें। अरे शस्त्र बाँध लो ! और हथियार ले लो ! रात के लिये कुछ विशेष अफसरों को भी तत्पर करो। चलो मेरे अच्छे रोडरिगो ! तुम जो कष्ट मेरे लिये उठा रहे हो, तुम देखना, मैं कभी तुम्हें उसका बदला चुकाये बिना यों ही नहीं छोड़ दूंगा।

[**प्रस्थान**]

दृश्य २

[**आँथेलो, इआगो का मशालें लिये हुए अनुचरों के साथ प्रवेश**]

इआगो : यद्यपि युद्ध-व्यापार में मैंने हत्याएँ की हैं, लेकिन इसे मैं अपनी चेतना का सार तत्त्व मानता हूँ कि कभी ठंडे दिल से खून न किया

जाये। कभी-कभी मुझे अपने भीतर उस नीचता का अभाव-सा मालूम देता है, जो मेरे लिये सांसारिक रूप से बड़ी लाभदायक होती। दस-बीस बार तो मेरी इच्छा प्रबल तक हो उठी कि उसकी पसलियों में गहरा वार कर दूं।

ऑथेलो : अच्छा यही है कि तुम अपने को रोको और जैसा है वैसा ही चलने दो।

इआगो : लेकिन मैं भी तो देवता नहीं हूँ कि वह आपके विरुद्ध इतनी गंदी बातें करते रहें, गालियों पर उतर आयें, नीच से नीच शब्दों का प्रयोग करें कि श्रीमान्! मुझे क्रोध ही न आये? आख़िर कब तक मेरा क्रोध भड़क न उठे? मुझे तो अपने को रोकना भी बड़ा कठिन हो गया। किन्तु मुझे बतायें श्रीमान्? क्या आपकी कानूनन शादी हो गई? यह निश्चित जानिये कि श्रीमती के पिता बड़े प्रभावशाली और प्रभुत्व वाले व्यक्ति हैं, उनका बड़ा सम्मान है और ड्यूक की आज्ञा[1] से उनकी आज्ञा में दुगना बल है। अगर कानून में ज़रा भी कसर रह गई तो वे आपके विवाह को रद्द करा देंगे और जितनी भी उनमें ताक़त होगी लड़ा देंगे कि आप पर गहरी से गहरी मुसीबत बरपा कर सकें!

ऑथेलो : उन्हें अपनी यथाशक्ति बुराई करने दो। मैंने जो राज्य की सेवाएँ की हैं, वे ही उनके दोषारोपण को असिद्ध कर देंगी। यह तो लोग जानते ही नहीं, और अगर मुझे विश्वास हो जायेगा कि इस पर भी गर्व किया जा सकता है, तब मैं घोषणा कर दूंगा कि मेरी धमनियों में भी साधारण रक्त नहीं, कुलीन राजवंशीय रक्त बहता है। मेरे गुण ही मेरे लिये इस अवस्था के भी साक्षी बनेंगे जो कि आज मैंने प्राप्त की है। इआगो, यह सत्य है कि मैं सुंदरी

१. वोट की शक्ति

डैसडेमोना से प्रेम करता हूँ। यदि मैं उसे सचमुच प्यार न करता होता तो क्या एक स्त्री के लिये अपनी स्वतंत्रता खो देता, सारे समुद्र की अपार संपत्ति भी क्या उसकी बराबरी कर सकती है ? वह देखो ! वह मशालें इधर कैसी बढ़ी आ रही हैं ?

[**कैसियो का मशालों के साथ प्रवेश**]

इआगो : वे शायद श्रीमती के पिता और संबंधी हैं, जो जाग उठे हैं। आप, बेहतर हो, भीतर चले जायें।

आॅथेलो : कभी नहीं। मैं यहीं बाहर रहूँगा। मैं अपनी स्थिति, सरल हृदय और सहज स्वभाव के अनुरूप ही उनसे मिलूँगा। क्या ये वही हैं ?

इआगो : जेनस[1] की सौगन्ध, यह तो वह लोग नहीं।

आॅथेलो : यह तो ड्यूक के सेवक और मेरा लेफ़्टिनेंट कैसियो है। दोस्तो, नमस्ते[2] ! क्या संवाद है ?

कैसियो : जनरल ! ड्यूक ने आपकी शुभकामना की है, और वे चाहते है कि आप तुरन्त उनके सन्मुख उपस्थित हों।

आॅथेलो : क्यों ? बात क्या है ?

कैसियो : जहाँ तक मेरा ख़याल है, साइप्रस के बारे में कोई बात है। है विषय महत्त्वपूर्ण ही, क्योंकि जहाज़ों से एक के बाद एक करके

१. जेनस : एक रोमन देवता—जिसके दो सिर थे। जनवरी महीने का नाम इसी जेनस के नाम पर पड़ा है क्योंकि वह महीना गत वर्ष और नये वर्ष दोनों को देखता है।

२. गुड नाइट अंगरेजी में किसी भी स्थिति का व्यक्ति अपने से नीचे वाले से कहता है। हिन्दी में नमस्ते ही इस प्रकार का पर्य्याय है, यद्यपि नमस्ते के अपने बंधन हैं। आगे से हम भी गुड मार्निग, गुड नाइट आदि शब्दों का प्रयोग करेंगे, क्योंकि वे भी प्रायः प्रचलित हैं।

बारह दूत आ चुके हैं और नींद में से जगा-जगा कर सिनेट के कई सदस्य ड्यूक के निवासस्थान पर एकत्र भी कर लिये गये हैं। आपकी उपस्थिति की अत्यन्त आवश्यकता है। जब आप अपने निवासस्थान पर नहीं मिले तब सिनेट ने तीन दल वना कर लोगों को आपको भिन्न-भिन्न स्थानों में खोजने को रवाना किये हैं।

ऑथेलो : अच्छा हुआ तुम मुझे मिल गये। मैं ज़रा घर में एक बात कह कर अभी तुम्हारे साथ चलता हूँ।

[**प्रस्थान**]

कैसियो : ऐन्शेन्ट ![1] जनरल यहाँ क्या कर रहे हैं !

इआगो : मानो न मानो, आज जनरल ने बड़ी दौलत से भरा जहाज़ जीता है, समुद्र का नहीं, धरती का। यदि यह इनाम कानूनी मान लिया गया तो समझ लो कि हमेशा के लिये खज़ाना हाथ आ गया।

कैसियो : मैं समझा नहीं।

इआगो : जनरल ने विवाह कर लिया है।

कैसियो : किससे ?

इआगो : शादी की है····

[**ऑथेलो का पुनरागमन। इआगो सहसा वह वाक्य छोड़ कर···**]

इआगो : चलो कैप्टन ! तुम चलने को तैयार हो ?

ऑथेलो : हाँ मैं संग चल सकता हूँ।

कैसियो : शायद सैनिकों का दूसरा दल आपको खोजता हुआ आ पहुँचा है।

[**ब्रैबेन्शियो, रोडरिगो, अन्य अफ़सरों के साथ मशालें लिये आते हैं।**]

१. पद का नाम। लेफ़्टिनेंट से नीचे इआगो का पद है। शब्दार्थ है पुरातन।

इआगो : यह तो ब्रैबेन्शियो है। जनरल ! सावधान रहें। इनका उद्देश्य अच्छा नहीं है।

ऑथेलो : ठहरो ! रुक जाओ !

रोडरिगो : श्रीमान्, यह मूर ही है।

ब्रैबेन्शियो : उस चोर का सर्वनाश हो !

[**दोनों ओर से तलवारें खिचती हैं।**]

इआगो : इधर बढ़िये श्रीमान् रोडरिगो ! आपसे मेरे दो-दो हाथ हो जायें, मैं आपके लिये तैयार हूँ।

ऑथेलो : अपनी चमचमाती तलवारों को म्यान में रख लीजिये, कहीं ओस के कारण उनमें जंग न लग जाये। सम्मानित श्रीमान् ! आपके शस्त्रों से कहीं अधिक सम्मान पाने की अधिकारिणी आपकी आयु है !

ब्रैबेन्शियो : ओ धूर्त चोर ! कहाँ छिपा दी है तूने मेरी पुत्री ? ओ अभिशप्त ! अवश्य तूने उस पर जादू कर दिया है ! यदि उस पर कोई इन्द्रजाल न डाला गया होता तो कल्पना के किसी छोर को पकड़ कर भी यह विचार नहीं आता कि डैसडेमोना जैसी सुंदरी, विदुषी, और प्रसन्नचित्त लड़की, कभी ऐसा काम कर गुज़रती ! जिसने अपनी जाति के अनेक घने घुँघराले केशों वाले धनी और संपन्न तरुणों से विवाह करना अस्वीकार कर दिया, वह क्या क़भी जगहँसाई कराने को, अपने अभिभावकों का संरक्षण छोड़ कर, तुझ जैसे काले भुजंग की भुजाओं में गिरने को आ जाती ? तुझे देख कर उसे आनंद तो दूर, उल्टे भय ही होता। सारा संसार देखे क्या यह प्रगट बात असम्भव हो सकती है कि तूने ही अपने कुटिल जादू से उसकी चेतना का हरण कर लिया है ? तूने जड़ी-बूटियों और धातुओं के धूर्त्त प्रयोग से उस कुमारी की बुद्धि

नष्ट करके उसे पराजित कर दिया है। मैं इस मामले का न्याय के सामने ले जाऊँगा। तू जादू और तंत्र-मंत्र करने का अपराधी है। मैं तुझ पर निषिद्ध क्रियाओं और जघन्य कार्य्यों में रत रहने का अभियोग लगाता हूँ, जो धर्म्म-विरुद्ध हैं और समाज के लिये हानि-कारक हैं। इसको गिरफ़्तार कर लो और यदि यह विरोध करता है, तो उससे स्वयं ही हानि उठायेगा, उसका उत्तरदायित्व हम पर नहीं होगा। पकड़ लो इसे।

ऑथेलो : हाथ मत उठाओ, न मेरे रक्षक लड़ें, न मुझ पर आक्रमण करने वाले। यदि युद्ध ही करना होता तो विना किसी के भड़काने से भी मैं युद्ध कर सकता था। आप मुझे अपने इस अभियोग का उत्तर देने के लिये कहाँ ले जाना चाहते हैं?

ब्रैबेन्शियो : जब तक कचहरी नहीं लगती, तब तक के लिये हम तुझे बंदीगृह में डाल देना चाहते हैं।

ऑथेलो : मान लो मैं बंदी भी हो गया, लेकिन उससे ड्यूक को संतोष कैसे होगा जिनके भेजे हुए आदमी इस समय भी मुझे घेरे खड़े हैं, ताकि राज्य के एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य्य के लिये मुझे अपने साथ ले जा सकें।

अफ़सर : परम आदरणीय श्रीमन्त! यह नितांत सत्य है। ड्यूक अपनी कांउसिल (परिषद्) के साथ हैं और उन्होंने जनरल को तुरंत ही बुलवाया है।

ब्रैबेन्शियो : क्या कहा? ड्यूक परिषद् के साथ! रात के इस समय विचारों में डूबे हुए हैं? बहुत अच्छा! चलो। इसे वहीं ले चलो। मैं अभी अपने मामले को वहीं तय कराऊँगा। मेरा मसला कोई मामूली और बेकार मसला नहीं है। ड्यूक और सिनेट के सदस्य मेरे प्रति की गई बुराई को अपने साथ की हुई बुराई की तरह ही

समझेंगे । अगर ऐसी हरकतों के लिये सज़ाएँ नहीं दी गई तो विधर्मी और गुलाम हमारे राजनीतिज्ञ और शासक ही जो बन बैठेंगे !

[प्रस्थान]

दृश्य ३

[ड्यूक और सिनेट के सदस्य एक मेज़ के चारों ओर बैठे हैं । (सामने नहीं) मेज़ पर बत्तियाँ हैं । (पास में) सेवक हैं ।]

ड्यूक : इन संवादों में कोई गुरुत्त्व नहीं है कि इन्हें कोई महत्त्व दिया जाये !

सिनेट का एक सदस्य : ठीक कहते हैं । यह तो एक दूसरे से मेल भी नहीं खाते । इन पत्रों में जो खबरें मुझे मिली है, उनके हिसाब से शत्रु की शक्ति एक सौ सात जहाज़ों की है ।

ड्यूक : और जो सूचना मुझे मिली है उसके अनुसार शत्रु के पास १४० जहाज़ हैं ।

सिनेट का दूसरा सदस्य : यह लीजिये । मेरे पास २०० जहाज़ों की ख़बर है । हालाँकि विगतवार से देखने पर यह ख़बरें एक दूसरी से पूरी तरह नहीं मिलतीं, लेकिन ऐसा भेद होना कोई आश्चर्य्य का विषय नहीं है । आख़िर तो यह सारी ख़बरें अंदाज़ नहीं हैं फिर भी एक बात सच है और वह यह कि साइप्रस की तरफ़ तुर्की जहाज़ी बेड़ा बढ़ता आ रहा है ।

ड्यूक : हाँ, ध्यान से देखने पर यह विल्कुल संभाव्य ही प्रतीत होता है । संख्या की गलती हो सकती है, लेकिन संवादों की मुख्य बात, मुझे डर है, कहीं सच ही न निकल आये ?

जहाज़ी[1] **(भीतर से)** : क्या हुआ ? क्या हुआ ? अरे क्या है !

[जहाज़ी का प्रवेश]

अफ़सर : यह लीजिये ! जहाज़ों से एक दूत आया है ।

ड्यूक : क्या बात है ?

जहाज़ी : तुर्की बेड़ा रोह्ड्स की ओर बढ़ रहा है, इसलिये श्रीमान् एंजिलो ने मुझे राज्य के अधिकारियों को सूचना देने की आज्ञा दी है ।

ड्यूक : साइप्रस की जगह रोह्ड्स ! यहाँ तो गंतव्य ही बदल गया । इसके विषय में आप लोगों की क्या राय है ?

सिनेट का एक सदस्य : यह संवाद सत्य नहीं हो सकता । जो हो, इसके औचित्य पर विचार कर लिया जाये । यह तो केवल एक छलावा दिखाई देता है ताकि हम भ्रम में पड़ जायें और जब कि हमें साइप्रस की रक्षा का प्रबंध करना चाहिये, हम रोह्ड्स की ओर ध्यान बँटा बैठें । तुर्कों के लिये साइप्रस का महत्त्व देखते हुए और यह भी कि उनके लिये रोह्ड्स की तुलना में साइप्रस को जीतना आसान होगा, क्योंकि उसमें न वैसे कोई प्राकृतिक लाभ ही हैं, न उसकी भाँति कोई रक्षा का ही अच्छा प्रबंध है, हमें इन सब बातों पर ध्यान देना चाहिये और यह नहीं समझना चाहिये कि तुर्क बेवक़ूफ़ हैं, उनमें योग्यता नहीं है जो वे उसे अंत के लिये त्याग देंगे जो कि वास्तव में अपना पहला महत्त्व रखता है, न यही मानना चाहिये कि एक आसान और लाभदायक योजना को छोड़ कर वे ऐसे कार्य्य पर उतारू होंगे जिसमें खतरा तो है ही साथ ही जिसमें हानि की भी संभावना है ।

---

१. सेलर—खलासी—या माँझी ।

ड्यूक : नहीं, किसी भी हालत में तुर्क रोह्ड्स की ओर उन्मुख नहीं लगता।

[**एक दूत का प्रवेश**]

दूत : सम्मानित और आदरणीय सज्जनो! श्रीमंतो! रोह्ड्स की ओर बढ़ते हुए तुर्कों से एक जहाज़ी बेड़ा और मिल गया है।

सिनेट का एक सदस्य : अच्छा! यही तो मैं भी सोचता था। संख्या में कितने जहाज़ होंगे?

दूत : तीस जहाज़ हैं। अब उन्होंने अपना छलावा छोड़ दिया है, और रास्ता बदल कर वे स्पष्टतया ही साइप्रस की ओर बढ़ रहे हैं। आपके वीर और विश्वसनीय पदाधिकारी श्रीमान् मोनटानो ने यह संवाद अत्यंत विनम्रता के साथ भेजा है और उनकी प्रार्थना है कि इस पर पूर्णतया विश्वास किया जाये।

ड्यूक : तब तो यह निश्चित हो गया कि शत्रु साइप्रस की ओर आ रहा है। क्या मार्कस लुक्किकोस नगर में उपस्थित नहीं हैं?

सिनेट का एक सदस्य : वे इस समय फ़्लोरेन्स में हैं।

ड्यूक : कृपया हमारी ओर से उन्हें पत्र लिखें और शीघ्रातिशीघ्र डाक लगाकर हमारा संवाद भेजें।

सिनेट का एक सदस्य : यह लीजिये ब्रैबेन्शियो और महावीर मूर आ रहे हैं।

[**ब्रैबेन्शियो, ऑथेलो, कैसियो, इआगो, रोडरिगो, और अफ़सरों का प्रवेश**]

ड्यूक : महावीर ऑथेलो, राज्य के आम दुश्मन तुर्कों के खिलाफ़ हमें तुम्हारी सेवाएँ फ़ौरन हासिल करनी चाहियें। मैं आपको देख नहीं पाया, स्वागत श्रीमान् ब्रैबेन्शियो, आज रात आपकी अमूल्य राय से हम अभी तक वंचित थे, अब आप भी सहायता करें।

ब्रेबेन्शियो : वही तो मैं आपसे चाहता हूँ : श्रीमानों के श्रीमंत, मुझे क्षमा करें। न तो मेरी स्थिति ने ही, न राज्यकार्य्य में से किसी बात ने आज की रात मुझे नींद में से जगाया है। राज्य के इस आम खतरे ने भी मुझमें दिलचस्पी पैदा नहीं की है। क्योंकि मेरा अपना दुख ऐसी भीषण बाढ़ की तरह है जो सारे दुखों को निगलने की सामर्थ्य रखता है, किंतु स्वयं अभी तक वैसा ही प्रचंड है।

ड्यूक : क्यों ? क्या हुआ।

ब्रेबेन्शियो : मेरी पुत्री ! आह मेरी पुत्री !

सिनेट के सदस्य : क्या वह नहीं रही ? (मर गई ?)

ब्रेबेन्शियो : हाँ मेरे लिये वह मर चुकी है। उसे धोखा दिया गया है। मुझसे चुरा लिया गया है, नीम-हकीमों से ख़रीदी गई जड़ी-बूटियों और जादू से उसकी बुद्धि हर ली गई है। क्योंकि कोई भी साधारण बुद्धि वाला भी जिसकी कि बुद्धि अपाहिज, अंधी और अभावग्रस्त नहीं है, बिना जादू के जाल में फँसे, ऐसी भयंकर भूल नहीं कर सकता।

ड्यूक : कौन है वह आदमी जिसने गैरक़ानूनी तरीके से तुम्हारी पुत्री को विवेक से और तुमको तुम्हारी पुत्री से अलग किया है ? कानून के कठोर हाथ को तो आप स्वयं समझकर लागू करने का अधिकार रखते हैं, भले ही दण्ड पाने वाला व्यक्ति मेरा पुत्र ही क्यों न हो ?

ब्रेबेन्शियो : आह ! श्रीमंत ड्यूक का मैं सादर अभिवादन करता हूँ। यह है वह आदमी, यही है वह मूर, जिसे आपने विशेष आज्ञा देकर राज्यकार्य्य के सम्बन्ध में यहाँ बुलाया है।

सब : हमें इसके लिये खेद है ।

ड्यूक : तुम्हें इस बारे में क्या कहना है ?

ब्रैबेन्शियो : कुछ नहीं, सिवाय इसके कि जो मैंने कहा है उसे स्वीकार कर लें।

ऑथेलो : सम्भ्रांत, शक्तिशाली और विचक्षण श्रीमन्तो ! आप मेरे कुलीन, विश्वसनीय और अच्छे स्वामी हैं। यह बिल्कुल सत्य है कि मैंने इस वृद्ध महोदय की पुत्री को अपने पास रख लिया है। हाँ, मैंने उससे विवाह किया है यह भी सत्य है। यही मेरा एकमात्र अपराध है। मेरी वाणी कठोर है, मैं मुखर हूँ, और प्रेम से मीठे बोल बोलना मुझे नहीं आता, क्योंकि सात वर्ष की आयु से केवल नौ मास पहले तक मेरी भुजाओं ने अपना सबसे अच्छा समय शिविरों से ढँकी हुई युद्धभूमियों में बिताया है। इस विशाल संसार के बारे में, युद्ध और युद्ध की लोमहर्षक घटनाओं के अतिरिक्त, संभवतः मैं कुछ भी जानकारी नहीं रखता, जिस पर बात कर सकूँ ! अपनी रक्षा करने के प्रयत्न में मुझे अधिक सफलता की आशा नहीं है। किन्तु आपने मुझे दया करके आज्ञा दी है, तो मैं बिल्कुल स्पष्टतया बिना नमक-मिर्च लगाये अपनी सारी प्रेम-कथा सुनाऊँगा, ताकि आप स्वयं जान सकें कि किस जादू, किस जड़ी-बूटी के प्रभाव से, किस कौशल से, इनकी पुत्री का प्रेम प्राप्त किया है; क्योंकि मुझ पर यही तो अभियोग लगाया गया है !

ब्रैबेन्शियो : वह एक लजीली कुमारी है, शांत उसका चित्त है, कभी उसमें कृत्रिमता नहीं झलकती, लाज स्वयं उस पर लजाती है। क्या यह विश्वास किया जा सकता है कि वह अपनी प्रकृति के विरुद्ध, अपने देश, अपनी आयु, अपनी जाति की परंपरा, लोक-मर्यादा का भय, सब कुछ की उपेक्षा करके ऐसे व्यक्ति से प्रेम करेगी, जिसकी कि सूरत देख कर उसके हृदय में भय उत्पन्न होने की संभावना अधिक प्रतीत होती है ? डैसडेमोना जैसी पूर्णता

अपना स्वभाव भूल कर प्रकृति के विरुद्ध भी ऐसा कर सकती है—ऐसा निर्णय देने वाला न्याय स्वयं अपूर्ण ही कहलायेगा। ऐसी अस्वाभाविक बात क्यों हुई, यह जानने के लिये अवश्य इसे स्वीकार करना पड़ेगा कि इस विषय में कोई न कोई जघन्य नारकीय तरीका अवश्य अपनाया गया होगा, वर्ना ऐसा हो कैसे सकता था? इसलिये मैं आपके सामने फिर सशक्त शब्दों में दुहराता हूँ कि अवश्य उस पर किसी जादू की वस्तु का प्रयोग किया गया है और उसके रक्त पर गहरा प्रभाव पड़ा है, अवश्य ही कोई जड़ी-बूटी है जिसे तांत्रिक ढंग से सिद्ध किया गया होगा।

ड्यूक : लेकिन विश्वासपूर्वक दुहरा देना तो प्रमाण नहीं बन जाता। जब तक और ठोस और गहरे प्रमाण इन संभावनाओं और योजनाओं के विषय में प्रस्तुत नहीं किये जाते, मैं कैसे इनसे विश्वस्त हो सकता हूँ?

सिनेट का एक सदस्य : कहो ऑथेलो! बताओ! क्या तुमने इस कुमारी को किसी कुटिल और अनुचित रीति से अपने वश में किया है या जैसी कि दो व्यक्तियों में प्रेम-संभाषणों में प्रार्थनाएँ होती हैं, मीठी बातें होती हैं, उनसे उसे प्रभावित कर लिया है?

ऑथेलो : मैं प्रार्थना करता हूँ कि सैगिटरी से डैसडेमोना को यहाँ बुलवा लिया जाये। और अपने पिता की उपस्थिति में वही मेरे विषय में बताये। यदि अपनी बात में वह कहे कि मैंने किसी अनुचित रीति को अपनाया है तो न केवल यह विश्वास, यह पद, जो आपने मुझे दिये हैं, मुझसे ले लिये जायें, वरन् आपका भीषण दण्ड मुझे जीवन से ही वञ्चित कर दे।

ड्यूक : डैसडेमोना को यहाँ बुलवाया जाये।

[दो या तीन व्यक्तियों का प्रस्थान]

ऑथेलो : एन्शेन्ट ! (इआगो) तुम उन्हें रास्ता बताओ, क्योंकि तुम इन सबसे अधिक परिचित हो····

[इआगो का प्रस्थान]

और जब तक वह आती है, जिस ईमानदारी से मैं परमात्मा के सामने अपने अपराधों को स्वीकार करता हूँ, उसी भाँति आपके गंभीर विचारार्थ, बताऊँगा कि मैंने किन उपायों से उस सुन्दरी के प्रेम को प्राप्त किया, किस प्रकार वह मेरी बनी ।

ड्यूक : ठीक है ऑथेलो ! बता सकते हो !

ऑथेलो : उसके पिता मुझसे स्नेह करते थे, और बहुधा अपने यहाँ निमंत्रित करते थे । किस प्रकार मेरा पवित्र जीवन व्यतीत हुआ यह बार-बार पूछा करते थे । वे विभिन्न युद्ध, घेरे, और दुस्साहस के वर्णन सुनते थे । वे सब जो मैंने जीवन में स्वयं देखे थे; मैं अपने लड़कपन से अब तक की कहानियाँ उन्हें सुनाया करता था । और इसी में कभी मैं उन भयानक खतरों की बात सुनाता जिनमें मे बाल-बाल बचा था । कभी भूमि और समुद्र के वक्ष पर किये गये दुस्साहसों को सुनाता । विकराल घेरों में से जीवन-रक्षा के लोमहर्षक वर्णन सुनाता कि कब मैं बंदी बना, किस प्रकार वहाँ से छूटा और इन यात्राओं में मुझ पर क्या कुछ गुज़रा । मुझे तो गुलाम बना कर बेचा गया था । और इन्हीं यात्रा-विवरणों में बहुधा मुझे विशाल गुहाओं, रेगिस्तानों, अनगढ़ चट्टानों, खानों और गगनचुम्बी पर्वतों के वर्णन भी सुनाने पड़ते । वे नरभक्षी जो एक दूसरे को खाते थे, और वे मनुष्य जिनके सिर उनके वक्ष-स्थल में से उगते थे, कभी-कभी मेरा विषय बन जाते । डैसडेमोना को इन बातों में बड़ी रुचि थी । वह बड़े ध्यान से सुनती थी । और जब कभी घरेलू धंधों के लिये बुला भी ली जाती थी तो

जहाँ तक हो सके जल्दी से जल्दी काम समाप्त करके आने की चेष्टा करती और मेरे जीवन की कथा को बड़े ध्यान से सुनती थी। अपने में उसकी इतनी दिलचस्पी देखकर एक बार मैंने ऐसा सुअवसर पाया जब वह मेरी जीवन-गाथा सुनने को तत्पर थी। उस समय उसने मुझसे प्रार्थना की कि मैं उसे अपनी पूरी जीवन-कथा सुनाऊँ, क्योंकि अभी तक वह जहाँ-तहाँ से ही सुन पाई थी, सो भी पूरा ध्यान देकर नहीं। मैंने स्वीकार कर लिया और तब अपने तारुण्य में झेले हुए कुछ दुखद घटनाएँ सुनाईं। वह रोने लगी। जब मेरी कथा समाप्त हुई, उसके मुख से लंबी आहें निकलीं, मानो वे ही मेरे लिये उपहार थीं। उसने अत्यंत गद्गद स्वर से स्वीकार किया कि मेरी कथा अत्यंत रोचक, विचित्र ही नहीं, वरन् अद्भुत रूप से करुण भी थी। उसने कहा, अच्छा होता वह उसे नहीं सुनती, और फिर भी वह यही चाहती थी कि ऐसा व्यक्ति ही परमात्मा की असीम कृपा से उसका पति हो। उसने मुझे हृदय से धन्यवाद दिया और आभार स्वीकार करके कहा कि यदि मेरा कोई मित्र ही उसे प्यार करता हो तो मैं मित्र को ही यह कहानियाँ सुना दूं, और यह कथाएँ ही उसका प्रेम जीतने के लिये काफी थीं। इससे मुझे प्रगट रूप से इंगित मिल गया और मैंने उसके सामने प्रेम प्रगट कर दिया। स्पष्ट ही जो खतरे मैंने उठाये थे, उनके कारण वह मुझसे प्रेम करती थी और मैं इस भावना से पराभूत हो गया कि वह मुझ पर करुणा करती थी। यही है वह जादू, जिसका मैंने उस पर प्रयोग किया था। यह लीजिये, डैसडेमोना आ गई है, जो कुछ मैंने कहा है, वही उसका समर्थन करेगी।

[डैसडेमोना, इआगो और सेवकों का प्रवेश]

ड्यूक : ऐसी कथा तो निश्चित रूप से मेरी लड़की को भी मोहित कर लेती श्रेष्ठ ब्रैबेन्शियो ! अब तो जहाँ तक हो इस उलझे हुए मामले को सुलझाइये ! खाली हाथों से न लड़कर इंसान अपने टूटे हथियारों का ही प्रयोग करते हैं ।

ब्रैबेन्शियो : मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि उसकी बात भी सुन लें । यदि वह स्वीकार कर लेती है कि इस प्रेम को उकसाने में उसका आधा हाथ रहा है, और तब यदि मैं इस पुरुष को तनिक भी दोष दूं, तो मेरा सर्वनाश हो जाये। आ मेरी सरलहृदये पुत्री ! इस कुलीन सभा में, बता तो सही, ऐसा कौन है जिसकी आज्ञा का पालन करना तेरा कर्त्तव्य है ?

डैसडेमोना : आदरणीय पिता ! मेरा कर्त्तव्य विभाजित हो गया है । यह शिक्षा जो मुझे एकाग्रचित्त से आपके प्रति श्रद्धा करना सिखाती है और यह जीवन, इनके लिये मैं आपका आभार मानती हूँ । इसलिये आपकी पुत्री के रूप में आपकी आज्ञा का पालन मेरा कर्त्तव्य है । किंतु इस ओर मेरे पति हैं, और अपने पिता की तुलना में मेरी माता ने आपके अर्थात् अपने पति के प्रति जो कर्त्तव्य निवाहा है, पिता पर पति को अन्यतम स्थान दिया है, वही अपने पति मूर के प्रति निबाहना मैं अपना कर्त्तव्य समझती हूँ, क्योंकि वह उनका भाग है ।

ब्रैबेन्शियो : भगवान तुम्हारा भला करे ! आज से मेरे-तुम्हारे संबंध समाप्त ! (**ड्यूक से**) आप अपने राज्यकार्य्य की ओर ध्यान दें । पिता होने से तो अच्छा होता कि मैं किसी को गोद ले लेता । सुनो ऑथेलो ! डैसडेमोना को तुमसे अलग रखने की मैं प्राणपण चेष्टा करता, किन्तु तुम उसे अब जीत चुके हो तो मैं भी अब अपने हृदय से कहता हूँ कि मैं उसे तुम्हें देता हूँ । पुत्री ! डैसडेमोना ! तुम्हारा

चरित्र देख कर मैं प्रसन्न हूँ कि मेरे और कोई संतान नहीं है, अन्यथा तुम्हारा यह आज्ञा भंग करना मुझे उनके प्रति कठोर और अत्याचारी बना देता। मैं उन्हें दारुण बंधनों में जकड़ देता। हो चुका ड्यूक श्रेष्ठ! हो चुका, मेरा व्यक्तिगत कार्य्य हो चुका।

ड्यूक : जो कुछ आपने स्वयं कहा, उसका समर्थन करते हुए, मैं भी अपना निर्णय देना चाहता हूँ और इन प्रेमियों से आपका समझौता कराना चाहता हूँ। जिसका इलाज ही नहीं, उसे तो अच्छा हुआ-सा ही समझना चाहिये, क्योंकि तब हम उसका निकृष्टतम रूप देख लेते हैं और फिर किसी मिथ्या धारणा के आधीन नहीं रहते। जो दुर्भाग्य आ गया है, उसके लिये खेद करना तो वास्तव में व्यर्थ होगा। यदि बुराई ठीक नहीं हो पाती, तो उसके परिणाम में और भी अधिक दाह हृदय में बस जाता है। किंतु दुर्भाग्य की मार सहते समय यदि हम धैर्य्य धारण कर लेते हैं और केवल मुस्कराते भी रहते हैं तो अपने सुखों के अपहरण करने वाले की उस शक्ति को हर लेते हैं जो हमें कुचल देती है। किन्तु जो उसके लिये बिसूरने बैठ जाता है, वह स्वयं अपने को लुटा देता है।

ब्रेबेन्शियो : जिस तर्क से आप मुझे सांत्वना दे रहे हैं, उसे ही राज्य-कार्य्य पर भी लागू कर दीजिये। मान लीजिये, तुर्क हमसे साइप्रस छीन लेते हैं तो हमें मुस्कराना चाहिये और तब शायद हमें इस हानि का भी अनुभव नहीं होगा। जिस पर स्वयं नही आ पड़ती वह तो पर उपदेश में कुशल ही होता है। किंतु जो स्वयं भोगी होता है उसे दुख के साथ इन सिद्धांत-वाक्यों को भी सहन करना पड़ता है, क्योंकि दुख के निवारण के लिये धैर्य्य से भिक्षा माँगनी पड़ती है, जो स्वयं ही अत्यंत दरिद्र होता है। यह वचन तभी तक ठीक हैं जब तक व्यथा अपनी नहीं होती, धैर्य्य पर बात करना और

टीस का अनुभव न करना सहज है, किंतु यह मर्म पर दुधारे की भाँति चलने वाले शब्द, मीठेभी होते हैं, कड़वे भी, यह तो अवसर की बात है। किंतु शब्द अंततोगत्वा शब्द ही होते हैं, मैंने कभी नहीं सुना कि घायल हृदय पर कभी श्रवण-मार्ग से कोई प्रभाव पड़ा हो। मैं आपसे सविनय यही प्रार्थना करता हूँ कि आप अपने राज्यकार्य्य में लगें और अपने कार्य्य को आगे चलायें।

ड्यूक : तुर्क पूर्ण सैन्य सज्जा और तत्परता के साथ साइप्रस की ओर बढ़ रहे हैं। ऑथेलो! तुम परिस्थिति के पूर्ण ज्ञाता हो। यद्यपि हमारे पास ऐसा व्यक्ति है जो इस कर्त्तव्य का पूर्णतया निर्वाह कर सकता है, किंतु फिर भी जनमत जो कि बहुत बड़ा महत्त्व रखता है, तुम्हारी ही ओर अधिक बोल रहा है और तुम्हें ही अधिक विश्वसनीय और योग्य मानता है। इसलिये आवश्यक है कि अपने आनंद की इस बेला में तुम अपने को नियंत्रित करो और इस कठोर और घोर यात्रा के लिये तत्पर हो जाओ!

ऑथेलो : आदरणीय सिनेट के सदस्यगण! सुनें! मैं युद्ध-जीवन का इतना अधिक आदी हो गया हूँ कि संग्राम-भूमि का कठोर और दारुण विस्तार मेरे लिये फूलों की शैय्या के समान हो गया है। यह स्वीकार करना मेरे लिये सहज है कि मैं दुख और कठोरता के पथ पर तुरंत पांव रख देता हूँ। इसलिये मैं तुर्कों से युद्ध करने को तत्पर हूँ, मैं इस तुमुल संग्राम का नेतृत्व करने को उद्यत हूँ, किंतु चाहता हूँ कि मेरी पत्नी के लिये उचित प्रवंध कर दिया जाये, और उसकी स्थिति और पद के अनुकूल स्थान, धन, तथा अन्य वस्तुओं का प्रवन्ध हो जाये।

ड्यूक : क्यों? वह अपने पिता के पास रह सकती है।

ब्रेबेन्शियो : नहीं, मैं उसे नहीं रखूंगा।

ग्रॉथेलो : न मैं ही।

डैसडेमोना : न मैं ही वहाँ रहूँगी कि उनकी ग्राँख के सामने बनी रहकर काँटे-सी गड़ा करूँ। परमदयालु ड्यूक ! मेरी दयनीय प्रार्थना पर ध्यान दीजिये। मैं तो सीधी-सादी ग्रौर ग्रचतुर हूँ। ग्रापकी वाणी मेरी सहायता करने का ग्राश्वासन दे !

ड्यूक : क्या चाहती हो तुम डैसडेमोना ?

डैसडेमोना : मूर के साथ जीवन व्यतीत करने के लिये ही तो मैंने उनसे प्रेम किया है। जो विद्रोह मैंने किया है ग्रौर जिस प्रकार मैंने ग्रापत्तियों का सामना किया है, मैं संसार में घोषणा कर सकती हूँ कि मैं उन पर पूर्णतया ग्रासक्त हूँ ग्रौर उनकी वीरता तथा ग्रोज गुण ने ही मुझे इतना प्रभावित किया है। वे युद्ध में चले जायें ग्रौर मैं घर पर छूट जाऊँ, तो जिस लिये मैंने उनसे प्रेम किया, वह मूल कारण ही झुठा दिया जायेगा। उनकी ग्रनुपस्थिति मुझे ग्रत्यंत उदास ग्रौर विरक्त बना देगी। कृपया मुझे उनके साथ जाने की ग्राज्ञा दें।

ग्रॉथेलो : स्वामी ! डैसडेमोना की प्रार्थना को निष्फल नहीं करें। ईश्वर साक्षी है कि मैं यह दया इसलिये नहीं चाहता कि वासना मेरे मुख में बोल रही है। यौवन के वे प्रारंभिक उन्माद ग्रब मेरे लिये ग्राकर्षक नहीं रहे हैं क्योंकि मैं उफान की सीमा से ग्रागे ग्रा गया हूँ। केवल मेरी पत्नी को इसका ग्रानंद प्राप्त होगा, इसलिये मैं ग्रापसे करुणा ग्रौर दया की भिक्षा चाहता हूँ। ईश्वर न करे, ग्राप निश्चित ही रहें, उसके साथ होने के कारण ग्राप मुझे राज्यकार्य्य के प्रति उदासीनता दिखाते हुए नहीं पायेंगे। यदि कभी चंचल कामदेव की चपलता मेरी दृष्टि से कर्त्तव्य-पथ को धुंधला भी कर दे, ग्रौर मैं लोल वासनाग्रों के ग्रावर्त्त में पड़ जाऊँ, ग्रौर मेरी शुद्ध

चेतना, मेरी बुद्धि मलिन पड़ जायें तो मेरा शिरस्त्राण कुलवधुओं के हाथ में एक पात्र मात्र बनकर रह जाये और लोक में विद्यमान समस्त विपदाएँ और अपमान मेरे यश पर आक्रमण करके मेरा सर्वनाश कर दें।

ड्यूक : तब तुम उसे ले जाओ या छोड़ जाओ तुम्हारा व्यक्तिगत विषय ही रहे। कार्य्य बहुत गंभीर है और तुरंत कर्त्तव्य चाहता है, उस पर अपना सारा ध्यान केन्द्रित कर दो। कार्य्य पुकारता है, गति और वेग को उत्तर देना होगा।

सिनेट का सदस्य : आप आज रात ही को प्रयाण करें।

ऑथेलो : जैसी आज्ञा हो। अवश्य।

ड्यूक : हम कल प्रातःकाल नौ बजे फिर मिलेंगे। ऑथेलो अपना कोई आदमी हमारे पास छोड़ जाओ, वह हमारी लिखित आज्ञा तथा तुम्हारे सम्मानित पद के अनुरूप अन्य आवश्यक वस्तुएँ ले जायेगा।

ऑथेलो : जैसी आज्ञा महाराज! मेरा ऐन्शेन्ट बड़ा ईमानदार आदमी है, और बड़ा ठोस भी है। मैं अपनी पत्नी को उसके संरक्षण में छोड़ूँगा। मेरे जाने के बाद जो भी आवश्यक वस्तुएँ आप भेजना चाहें उन्हें साथ लेकर वह मेरी पत्नी को साइप्रस पहुँचा देगा।

ड्यूक : यही सही। गुडनाइट! सबको गुडनाइट! और आदरणीय श्रीमान् (**ब्रेबेनशियो से**) यदि अच्छाई एक ऐसी वस्तु है जिसमें लोक का समस्त सौंदर्य्य निहित होता है, तब आपका दामाद भी सुन्दर है, उसका कालापन अखरता नहीं, क्योंकि वह सबको प्रसन्न करता है।

सिनेट का सदस्य : बिदा! वीर मूर! डैसडेमोना को कोई कष्ट न देगा!

ब्रेबेन्शियो : मूर! यदि तुम्हारे आँखें हैं तो उसे अवश्य देखना, उसने अपने पिता को धोखा दिया है, कौन जाने वह तुम्हें धोखा न देगी?

[**ड्यूक, सिनेट का सदस्य, अफ़सर इत्यादि का प्रस्थान**]

ऑथेलो : उसके प्रेम पर मेरा जीवन न्यौछावर है। मेरे अच्छे इआगो ! मैं अपनी डैसडेमोना तुम्हारे पास छोड़ना चाहता हूँ, मैं चाहता हूँ कि तुम्हारी पत्नी इनकी देखभाल करे। ज्यों ही अवसर मिले, तुम दोनों को लेकर मेरे पास आ जाना। चलो डैसडेमोना ! केवल एक घंटे का ही समय मेरे पास है, मुझे उसी में तुमसे अपने हृदय की बातें भी कहनी हैं और यात्रा का प्रबंध करते हुए सांसारिक विषयों पर बातें करनी हैं। समय कम है, आओ इसका अधिक से अधिक उपयोग करें।

[**ऑथेलो और डैसडेमोना का प्रस्थान**]

रोडरिगो : इआगो !

इआगो : ओ महान हृदय वाले मित्र ! कहो, क्या हुआ ?

रोडरिगो : तुम ही बताओ, अब मैं क्या करूँ ?

इआगो : जाओ, और आराम से सोओ।

रोडरिगो : इच्छा तो होती है कि अब जाकर डूब मरूँ।

इआगो : अगर तुम ऐसा करोगे तो क्या कभी मेरे प्रेम के अधिकारी बन सकोगे ? तुम्हें ऐसी मूर्खता करने की आवश्यकता ही क्या है ?

रोडरिगो : जब जीवन ही यातना बन जाये तब जीवित रहना भी क्या मूर्खता नहीं है ? और जब मौत ही हकीम बन जाये तो मरने के नुस्खे में बुराई भी क्या है ? दर्द तो नहीं रहेगा।

इआगो : धिक्कार है तुम्हें जो ऐसी क्षुद्र बातें करते हो ! २८ वर्ष के लंबे अनुभव में मैंने जीवन को परखा है और जब से अच्छे और बुरे की मुझे पहँचान हुई है, मैंने कोई ऐसा व्यक्ति नहीं देखा जो केवल अपने को ही प्रेम करता हो। एक दुश्चरित्र स्त्री के लिये डूब मरने के स्थान पर मैं तो मनुष्यत्व को तज कर बंदर तक बन जाना अच्छा समझता हूँ।

रोडरिगो : तो मैं करूँ भी तो क्या ? मैं अपनी इस आसक्ति पर स्वयं लज्जित हूँ, किंतु इसका निवारण मेरे वश की बात नहीं है, इतनी अच्छाई मुझमें नहीं है, यह मैं स्वीकार करता हूँ।

इआगो : अच्छाई ! क्या बेकार की बात है। मैं ऐसा ही या वैसा यह तो मेरे ही बस की बात है न ? हमारा शरीर उपवन है और हमारी इच्छाशक्ति ही उसका माली है। हम उसमें कुछ भी बोयें या न उगायें यह तो हमारे ही श्रम पर निर्भर है, हमारी ही रुचि और रुझान की बात है ? यही तो हम मनुष्यों का स्वभाव भी है, जिसमें इच्छाशक्ति ही सबका संचालन और निर्माण करती है। यदि मनुष्य के पास विवेक न होता तो इन भटकती वासनाओं और आदेशों का नियंत्रण कौन करता ? प्रकृति की क्षुद्रता बिना अंकुश के तो भयानक परिणाम दिखाने की भी क्षमता रखती है। तुम जिसे प्रेम कहते हो वह तो वेगवती वासनामात्र है, जिसमें भयानक विषदंश की सामर्थ्य है। विवेक ही उसे बाँध सकता है।

रोडरिगो : यह नहीं हो सकता।

इआगो : सोचकर देखो। इच्छाशक्ति की लगाम हट गई है और उन्मत्त वासना ही तुममें ऐसा भाव उत्पन्न कर रही है। गंभीर बनो, आत्मसंयम रखो, डूब मरना, बिल्लियों और पिल्लों का ही काम है। मैंने सदैव स्वीकार किया है कि मैं तुम्हारा गहरा मित्र हूँ और मै तुमसे स्नेह के गाढ़े बंधनों में बँधा हुआ हूँ। अपने बटुए में पैसे भरो और मेरे साथ युद्धभूमि में चलो। एक नकली दाढ़ी लगाकर अपने चेहरे को ढँक लो। यह निश्चित है कि डैसडेमोना ऑथेलो से अधिक समय तक अटकी नहीं रहेगी, न वही अपने प्रेम में इतना दृढ़ बना रहेगा। जो इतने आवेश और आवेग से प्रारंभ हुआ है वह उसी वेग से अंत भी हो जायेगा। लेकिन तुम बटुए में

धन भर कर ले चलना। इन मूर लोगों की इच्छाएँ परिवर्तनशील होती हैं, अपने बटुए में धन भरा रहना चाहिये। आज जिसे वह बहुत स्वादिष्ट भोजन समझ कर खा रहा है, कल ही वह उसे अत्यन्त कड़वा लगने लगेगा। डैसडेमोना भी कल किसी नवयुवक को अपनी तृष्णा का केन्द्र बनायेगी। जब ऑथेलो से उसकी वासनाएँ तृप्त हो जायेंगी तब उसे अपनी भूल का अनुभव होगा और तब उसमें मोड़ आयेगा। लिहाज़ा, बटुए में पैसा भरे रहो। यदि नरक की यातना ही चाहते हो तो डूब मरने से भी अच्छा एक तरीका है। जितना धन इकट्ठा कर सकते हो कर लो। यदि डैसडेमोना पवित्रता और सतीत्व के चक्कर भी बीच में डालती है, तब भी एक घुमन्त्त बर्बर मूर और एक अत्यन्त सुसंस्कृत वेनिस की स्त्री डैसडेमोना के बीच की एक निर्बल शपथ कोई ऐसी बड़ी समस्या नहीं है, जो मुझ जैसे ज़मीन-आसमान के कुलाबे मिलाने वाले, शैतान से मदद पाने वाले व्यक्ति के लिये ऐसी कठिन साबित हो कि बुद्धि और कौशल से मैं उसका हल नहीं निकाल सकूँ। मैं कहता हूँ, वह तुम्हें मिलेगी और तुम उसका आनंद से भोग करोगे। लिहाज़ा धन ले चलो। डूब मरने की बात को आग लगा दो, वह तो सवाल ही नहीं उठता। हाँ यदि तुम अपनी इच्छा की वस्तु को प्राप्त करने के प्रयत्न में फाँसी पर झूल जाने की बजाय मरना ही अच्छा समझते हो, तो भले ही डूब जाओ और सदा के लिये उससे हाथ धो बैठो।

रोडरिगो : अच्छा मान लो मैं अड़ा रहूँ, तो तुम विश्वास दिलाते हो कि अंत तक मेरा साथ दोगे?

इआगो : मेरे बारे में पक्की समझो। जाओ! धन एकत्र करो। मैं तुम्हें कई बार बता चुका हूँ, और फिर-फिर कहता हूँ, कि मुझे मूर से

घृणा है। मेरी घृणा का कारण मेरे हृदय में जमा हुआ है और तुम्हारा कारण भी कम नहीं है। आओ, हम प्रतिहिंसा के लिये अपने हाथ मिलायें और उसका विनाश सोचें। यदि तुम उसकी पत्नी को अपवित्र करके आनंद ले सकोगे तो इसमें मेरा आनंद कम नहीं समझना। समय के गर्भ में अनजानी घटनाएँ हैं, जिनका भविष्य में ही जन्म होगा। जाओ, धन लाओ। कल फिर और बातें होंगी। अब विदा।

रोडरिगो : तो कल सुबह मुलाकात कहाँ होगी ?

इआगो : मेरे निवासस्थान पर।

रोडरिगो : मैं ठीक वक्त पर आ पहुँचूंगा।

इआगो : विदा, रोडरिगो ! याद है न ?

रोडरिगो : क्या ?

इआगो : डूबना नहीं है, यह तो पक्की हुई न ?

रोडरिगो : मैं अपनी सारी ज़मीन बेच दूंगा।

[प्रस्थान]

इआगो : इसी तरह मैं मूर्खों से अपनी आवश्यकताएँ पूरी करता हूँ। हाय ! अपने अगाध और अत्यंत परिश्रम से उपार्जित ज्ञान से यदि मैं इस मूर्ख के कार्य्य के लिये अपने लाभ और स्वार्थ का त्याग करके समय और शक्ति का दुरुपयोग करता तो कितने दारुण दुख की बात होती। मैं उस मूर से घृणा करता हूँ। लोग तो यह भी कहते हैं कि उसने मेरी स्त्री को भी अपवित्र किया है। मैं इसकी सचाई के बारे में कह नहीं सकता, किंतु संदेहमात्र के आधार को ही मैं ऐसे विषय में प्रमाण मान कर कार्य्य कर सकता हूँ। जितना ही ऑथेलो मुझे अच्छा समझता है, उतनी ही मुझे अपनी योजना को कार्य्यान्वित करने में सफलता मिलेगी। कैसियो सुन्दर पुरुष है।

देखूँ। कैसियो भी निकले और मेरा भी काम बने। दुधारी कुटिलता के लिये क्या करना उचित होगा! सोचता हूँ। कुछ दिन बाद ऑथेलो के कान भरना शुरू करूँ कि कैसियो तुम्हारी डैसडेमोना से बहुत अधिक घुलामिला हुआ है। कैसियो सुन्दर है, उस पर संदेह किया जाना उचित है। उस स्त्री को मिथ्याडंबर रचने की प्रेरणा दे सकता हूँ। दूसरी ओर ऑथेलो मुक्त हृदय का व्यक्ति है, दयालु भी है। जो अपने को ईमानदार दिखाते हैं, वह उन्हीं को सच्चा समझता है, और कोई भी नकेल पकड़ कर उसे गधे की तरह चला सकता है। यही ठीक है। यही बीज है जिसे धरती में से फूट कर निकलना है। कुटिलता और रहस्य का अंधकार इसकी रक्षा करें ताकि इस भयानक दानवी षड्यंत्र का जन्म हो सके।

[प्रस्थान]

दूसरा अंक

दृश्य १

[साइप्रस के गवर्नर मोनटानो तथा दो नागरिकों का प्रवेश]

मोनटानो : क्या अंतरीप से समुद्र के बारे में कुछ पता चल रहा है ?

एक नागरिक : कुछ नहीं। केवल एक भयानक वाढ़ ही आकाश और पृथुल तरंगों के बीच में दीखती है, कोई पाल नहीं झलकती।

मोनटानो : मुझे लगता है, धरती पर यह तूफ़ान और भी तेज़ होगा। अपने युद्ध-परिवेशों पर मैंने ऐसा भीषण प्रभंजन टूटते कभी नहीं देखा। यदि समुद्र पर भी ऐसी ही अवस्था है तो कौन-सा काठ का जहाज होगा जो आँधी का ऐसा वेग झेल सकेगा और यह हवा की चपेट कि चट्टानों को पिघलाने की शक्ति लिये चिघाड़ती फिरती है ? पता नही इस सबका परिणाम क्या होगा ?

दूसरा नागरिक : होगा क्या ? तुर्की जहाज़ी बेड़ा नष्ट हो जायेगा, बिखर जायेगा। फेनों से ढँके हुए तीर पर खड़े होने पर लगता है कि आकाश की ओर थपेड़ा मारती अजगर-सी भीमाकार तरंगें भीषण वायु के चपेटे खाकर ऐसी घुमड़ती हुई बढ़ती दिखाई देती हैं जैसे वे ध्रुव तारे के रक्षक ज्योति-प्रहरी सप्तर्षियों को ही निगल जायेंगी। मैंने तो समुद्र पर ऐसे तूफान को कभी गरजते नहीं देखा !

मोनटानो : यदि तुर्की जहाज़ी बेड़े ने किसी खाड़ी में घुस कर अपनी रक्षा नहीं कर ली है, तो निश्चय ही वह डूब गया होगा। ऐसे तूफ़ान में वह बच जाये, यह तो असम्भव लगता है।

[तीसरे नागरिक का प्रवेश]

तीसरा नागरिक : सुनो भाइयो! मैं खबर सुनाता हूँ। युद्ध समाप्त हो गया। इस भयानक तूफान ने तुर्कों को ऐसा उखाड़ फेंका है कि उनकी साइप्रस पर हमले करने की सारी योजना ही छिन्न-भिन्न हो गई है। अभी-अभी वेनिस का एक बड़ा जहाज़ आया है, और उसके लोगों ने स्वयं तुर्की जहाज़ी बेड़े के एक बहुत बड़े भाग को तूफ़ान में नष्ट-भ्रष्ट होते देखा है।

मोनटानो : क्या यह सच है ?

तीसरा नागरिक : वह जहाज़ वेरोना से बन्दरगाह में आ गया है। ऑथेलो के लेफ्टिनेंट माइकिल कैसियो किनारे पर आ गये हैं। मूर अभी समुद्र पर हैं और उन्हें अब साइप्रस के गवर्नर का स्थान दिया गया है।

मोनटानो : बड़ी प्रसन्नता की बात है। वे इस आदर और सम्मान के योग्य हैं।

तीसरा नागरिक : किन्तु तुर्की जहाज़ी बेड़े के विनाश का संवाद लाने वाले कैसियो अभी तक मूर के विषय में चिंतित दिखाई दे रहे हैं और ईश्वर से उनकी सुरक्षा की प्रार्थना कर रहे हैं। तूफ़ान ने ही उन दोनों को अलग कर दिया था।

मोनटानो : परमात्मा उनकी रक्षा करे। मैं स्वयं उनके आधीन काम कर चुका हूँ। वे तो पूर्ण योद्धा हैं। संग्राम-भूमि में उन्हें देखना चाहिये। चलो, हम समुद्र-तीर पर चल कर उस जहाज़ को देखें जो बंदरगाह में आया है और ऑथेलो के आने तक आकाश और लहरों के बीच में तब तक अपनी आँखें गड़ाये खड़े रहें जब तक लहरों पर उनके जहाज़ की पाल फरफराती न दिखाई दे जाये।

तीसरा नागरिक : चलिये। वहीं चलें। अभी तो हर क्षण नये जहाज़ों के आने की आशा है।

[**कैसियो का प्रवेश**]

कैसियो : मैं आप सब लोगों को मूर के प्रति इतना आदर दिखाने के कारण धन्यवाद देता हूँ। वे सचमुच वीर हैं। समुद्र भीषण हो गया था। तूफान ने ही मुझे उनसे विलगा दिया। ईश्वर उनकी रक्षा करे।

मोनटानो : वे जिस जहाज़ में हैं, है तो वह अच्छा न ? मज़बूत तो है ?

कैसियो : वैसे तो वह मज़बूत लकड़ी का बना है। उस जहाज़ का चालक भी बड़ा कुशल और अनुभवी है। अभी मेरी आशाएं मिट नहीं गई हैं। मृत्यु की छाप ने मुझे ग्रस नहीं लिया है जो मैं हताश हो जाऊँ।

[नेपथ्य में—पाल ! जहाज़ ! पाल ! चौथे नागरिक का प्रवेश]

कैसियो : यह कैसा शोर है ?

दूसरा नागरिक : सारा नगर तो खाली पड़ा है। समुद्र-तीर पर खड़ी भीड़ें चिल्ला रही हैं—पाल ! पाल ! जहाज !

कैसियो : मुझे तो लगता है कि यह नये गवर्नर ही होंगे।

[तोपों की सलामी सुनाई देती है।]

दूसरा नागरिक : सलामी देने का मतलब है कि दोस्त जहाज़ ही आया है।

कैसियो : मेरी विनय है कि स्वयं जाकर आप ठीक पता चलायें कि कौन आये हैं।

दूसरा नागरिक : मैं जाता हूँ।

[प्रस्थान]

मोनटानो : क्यों लेफ़्टिनेंट ! क्या तुम्हारे जनरल का विवाह हो गया है ?

कैसियो : निश्चय ! उनका विवाह तो बड़ा आनंददायी रहा है उन्हें। जिस स्त्री से उन्होंने विवाह किया है उसका मैं किन शब्दों में वर्णन करूँ ? रूप और यौवन की जितनी सुंदर कथाएँ आपने

सुनी हैं वे तो पीछे रह गईं; वह इतनी सुंदर है कि कल्पना के पंख भी उसे उड़ कर पार नहीं कर पाते। कवियों के कलम उनके वर्णन नहीं कर सकते। चित्रकारों की तूलियाँ वे रंग नहीं दर्शा सकतीं।

[**दूसरे नागरिक का पुनः प्रवेश**]

कैसियो : बताइये ! कौन आये हैं ?

दूसरा नागरिक : यह तो कोई इआगो हैं। जनरल के एन्शेन्ट है।

कैसियो : अवश्य उनकी यात्रा बड़ी अच्छी रही होगी। भयानक तूफान और गरजती आंधियाँ, समुद्र के गर्भ में छिपे प्रतारक जंतु जो अनजाने जहाज़ों का सब कुछ नष्ट करने को विह्वल रहते हैं, और न सिर्फ़ अनगढ़ चट्टानें ही, परन्तु सर्वग्राहिणी दलदलें भी, इन सब की भी विध्वंसक प्रकृति जैसे नष्ट हो गई है क्योंकि डैसडेमोना के सौदर्य्य ने मानों उन पर जादू कर दिया है, तभी तो उसका जहाज़ इतनी सुगमता से बिना किसी हानि के इतनी शीघ्र आ पहुँचा है ?

मोनटानो : यह डैसडेमोना कौन है ?

कैसियो : वही तो, जिसके बारे में मैंने अभी कहा, हमारे संचालक का संचालन करने वाली शक्ति। वह इसी वीर इआगो की संरक्षता में भेजी गई थी और आशा से एक सप्ताह पूर्व ही आ पहुँची है। देवाधिदेव जूपीटर ! ऑथेलो की रक्षा करो। तुम ही उसकी पालों में अपना प्रचंड श्वास भर कर उसे फुला दो, ताकि उसका शानदार जहाज़ सुरक्षित-सा इस खाड़ी में आ पहुँचे ! वह आये और डैसडेमोना की बाहुओं में शांति पाये। हमारे बुझे हुए हृदयों को फिर से ज्योतित कर दे और सारे साइप्रस में हर्ष और सुख फैला दे।

[**डैसडेमोना, इमीलिया, इआगो और रोडरिगो का प्रवेश**]

कैसियो : वह देखिये ! जहाज़ का खजाना किनारे पर उतर आया है। अरे साइप्रस के निवासियो ! आदर और प्रेम से उसके सामने घुटने टेक कर प्रणाम करो ! स्वागत ! देवी ! स्वागत ! ईश्वर की असीम अनुकम्पा आपको कवच की भांति घेरे रहे !

डैसडेमोना : धन्यवाद वीर कैसियो ! मेरे स्वामी के बारे में क्या संवाद है ?

कैसियो : वे अभी नहीं आये हैं और सिवाय इसके कि वे सकुशल हैं और शीघ्र ही आ पहुँचेंगे, मैं तो कुछ भी नहीं जानता।

डैसडेमोना : मुझे चिंता हो रही है। आप उनके साथ थे ? अलग कैसे हो गये ?

कैसियो : समुद्र की भयानक लहरों और तूफ़ान के झकोरों ने हमें अलग कर दिया।

[**नेपथ्य में : पाल ! जहाज़ ! तोपों का गर्जन**]

सुनिये ! कोई जहाज़ आया लगता है।

दूसरा नागरिक : तोपों की सलामी दी जा रही है। इसका मतलब है कि यह भी दोस्त जहाज़ है।

कैसियो : संवाद लाइये।

[**नागरिक का प्रस्थान**]

कैसियो : आह वीर एन्शेन्ट ! स्वागत ! (**इमीलिया से**) आप भी यहाँ हैं श्रीमती ? (**इआगो से**) बुरा न मानना मित्र, यदि मैं स्वागत के उपलक्ष्य में तुम्हारी स्त्री का चुबन करता हूँ, यह साहस मेरी कुलीन परम्पराओं का प्रभाव है, न कि किसी कलुषित भावना का।

[**चुंबन करता है।**]

इआगो : जितना यह तुम्हें अपना अधर-दान देती हैं उतना ही यदि यह तुम्हें अपनी जीभ देतीं, जैसे कि मुझे देती हैं, तो अवश्य ही तुम भर पाते।

डेसडेमोना : लेकिन वह तो बात ही नहीं करतीं !

इआगो : लेकिन मेरा कटु अनुभव मुझे बताता है कि जब मैं सोने को होता हूँ तो यही जीभ कतरनी की तरह चलती है। मेरी की शपथ[1] यह मैं मानता हूँ कि आपके सामने यह अपने विक्षोभ को जीभ से व्यक्त नहीं करती, मन ही मन कोसती रहती है।

इमीलिया : आपको ऐसा कहने का कोई कारण नहीं।

इआगो : अरे रहने दो। सबके सामने तुम बड़ी मधुर, मिलनसार और सुंदर दिखाई देती हो, जैसे कोई आकर्षक चित्र हो, और भीतर लोगों से मिलने के समय अवश्य तुम्हारी आवाज़ इतनी मीठी सुनाई देती है। लेकिन रसोईघर में तुम जंगली बिल्ली की तरह खोंखियाती हो; जब तुम्हारे दिल में किसी का नुकसान करने का इरादा पैदा होता है तब तुम भगतिन बन जाती हो, किंतु जरा किसी ने छेड़ दिया तो शेरनी की तरह बफर उठती हो। जब घर-गिरस्ती के काम की ज़रूरत होती है उस समय तो तुम पर आलम छा जाता है, पर जब रात को बिस्तर पर होती हो, तब ज़रूर तुम घरवाली के कामों में ज़रूरत से ज़्यादा दिलचस्पी लेती हो।

डेसडेमोना : धिक्कार है तुम पर ! नारी की निंदा कर रहे हो !

इआगो : नहीं, किंतु है यह सत्य ही, भले ही आप मुझे इसके लिये तुर्क कह लें—विधर्मी कह लें, बर्बर कह लें। जागने पर तुम्हारा मन व्यर्थ के आनंदों की प्राप्ति की ओर जाता है, क्रीड़ारत रहता है, पर जब बिस्तरे की ओर जाती हो, तो मानों कोई बड़ा काम करने जाती हो !

इमीलिया : आपको मेरी प्रशस्ति गाने की ज़रूरत ही क्या है ?

इआगो : बेहतर हो, क्योंकि जो मैं कहूँगा वह प्रगट ही है।

---

१. ईसा मसीह की माता का नाम मेरी था।

डैसडेमोना : अच्छा ! अगर मैं कहूँ कि मेरा वर्णन करो तो तुम क्या कहोगे ?

इआगो : रहने दें देवी ! मुझे कहने को विवश न करें, क्योंकि आलोचना में मैं बड़ा मुँहफट हूँ।

डैसडेमोना : कोई बात नहीं। कहो तो ! हाँ कोई बंदरगाह की ओर उस जहाज़ की खबर लाने गया है या नहीं, जिसको अभी तोपों ने सलामी दी थी ?

इआगो : हाँ देवी !

डैसडेमोना : मैं प्रसन्न नहीं हूँ। मैं अपने हृदय की भावनाओं को छिपाने के लिये ही इधर-उधर की बातों में मन लगाये रहने की चेष्टा कर रही हूँ। अच्छा। चलो ! मेरा वर्णन करने का प्रयत्न करो।

इआगो : मैं समझ नहीं पाता कि कैसे कहूँ ? मेरे विचारों को मेरे मस्तिष्क में से निकालने में उतना ही कष्ट हो रहा है जितना ऊन में से लासा निकालते समय होता है। सारा दिमाग ही उखड़ता-सा लगता है। किंतु मेरी म्यूज़[1] श्रमरत है। लीजिये सुनिये, वह कहती है : यदि वह सुदरी और विदुषी है, तो सौंदर्य्य आनंद प्राप्त करने के लिये है और वुद्धि उसकी अपनी वस्तु है, जिससे वह अपने सौदर्य्य को और भी सुंदर बनाती है।

डैसडेमोना : खूब कहा। किंतु यदि वह काले रंग की है और चतुर भी है तो ?

इआगो : काली होने पर भी यदि वह चतुर है तो उसे एक गोरा प्रेमी अवश्य मिलेगा जो उसके कालेपन के उपयुक्त होगा।

डैसडेमोना : ऊहुँ, यह तो अच्छा नहीं।

इमीलिया : अच्छा ! यदि वह गोरी हो पर मूर्ख हो !

१. म्यूज़—कला की देवी।

इआगो : गोरी और सुंदर स्त्री को आज तक किसने मूर्ख कहा ? उसकी तो मूर्खता भी उसे सदैव उत्तराधिकारी प्राप्त करा देती है।

डेसडेमोना : यह तो शराबखानों में बेवकूफ़ों को हँसाने वाली पुरानी घिसी-घिसाई कहमुकरियाँ और कहावतें हैं। बताओ तुम उस स्त्री के लिये क्या कहोगे जो काली और कुरूप ही नहीं, मूर्ख भी हो !

इआगो : ऐसी मूर्ख और कुरूप तो कोई स्त्री होती ही नहीं, जिसमें इतनी भी बुद्धि न हो कि सुदरी और चतुर स्त्रियों की तरकीबों की नकल नहीं कर सके।

डेसडेमोना : ऐसा अज्ञान तो वास्तव में दयनीय है। जो सबसे खराब है उसकी ही तुमने सबसे अधिक प्रशंसा की है। किंतु उस प्रशंसा की वास्तविक पात्री के बारे में तुम क्या कहोगे,जिसकी अच्छाइयाँ इतनी गहरी बुनियाद पर टिकी होती हैं कि वे ईर्ष्या और संदेह को भी उखाड़ फेंक सकती हैं।

इआगो : जो सदैव सुंदरी है और कभी अभिमान नहीं करती, वह वाक्कुशल होती है, किंतु कभी वाचाल नहीं होती। जिसके पास काफ़ी धन होता है, किंतु कभी तड़क-भड़क को पास नहीं आने देती, जो इच्छाओं को वश में रख कर समय आने पर ही उनकी पूर्ति करती है, जो क्रुद्ध होने पर प्रतिहिंसा का सुयोग पाकर भी अपने प्रहार को रोक देती है और क्रोध को दूर करती है, सहन करने की सामर्थ्य रखती है, जो कभी इतनी-अचतुर नहीं होती कि बुरे के लिये अच्छे को बदल डाले, जो सोच सकती है फिर भी अपने भावों को व्यक्त नहीं करती, जिसके पीछे प्रेमियों की भीड़ चलती है, किंतु जो पलट कर नहीं देखती, वह स्त्री यदि कभी ऐसी स्त्री हो सकती है····

डेसडेमोना : वह करती क्या है ?

इआगो : अधिक से अधिक बच्चों को दूध पिला सकती है और घर-गिरस्ती का हिसाब रख सकती है।

डैसडेमोना : छि : ! क्या चिंतन है ! क्या निष्कर्ष है ! इमीलिया ! ये तुम्हारे पति हैं अवश्य, परन्तु इनके विचारों को स्वीकार मत करना। कैसियो ! तुम्हारा इस विषय में क्या विचार है ? इआगो तो बड़े अश्लील और मुँहफट सलाहगीर हैं। हैं न ?

कैसियो : देवी ! वे मतलब की बातें हैं, और कोई लगाम नहीं लगाते। आप तो इन्हें विचारक के रूप में न देख कर एक सैनिक के रूप में देखें तो अधिक अच्छा हो।

इआगो : (**स्वगत**) अरे ! यह तो डैसडेमोना का हाथ पकड़ कर उसके कान में बात करता है। यह तो बहुत अच्छा है। इसी ज़रा से जाले में तो कैसियो जैसी बड़ी मक्खी को फँसा दूँगा। अच्छा ! कैसियो ! तू डैसडेमोना के साथ मुस्करा रहा है ! मुस्करा ले। तेरे इस प्रेम-प्रदर्शन में से ही तो तेरी बेड़ियाँ मैं पैदा करूँगा जो तुझे बाँध लेंगी। ठीक कहता है, ऐसा ही होगा। अगर तेरी इन तरकीबों से ही तेरी लेफ़्टिनेंटी न छिनवा दूँ तो कहना। अरे ! कैसे इसकी उँगलियों को बार-बार चूम रहा है ! इस चुंबन से ही तो तू अपनी कुलीनता और अच्छाइयों के आडम्बर को प्रगट कर रहा है ! फिर चुंबन लिया ? वाह रे स्त्री के सम्मान करने के प्रयोग ! फिर ले गया उंगलियों को होठों की ओर ! (**तुरही बजती है।**) मूर ! मूर की तुरही बजी !

कैसियो : यह तो आवाज़ मेरी पहॅचानी है। उनके साथ ही बजाई जाती है।

डैसडेमोना : चलो हम उनका स्वागत करें।

कैसियो : लीजिये, वे आ गये।

[ऑथेलो और सेवकों का प्रवेश]

ऑथेलो : आह ! मेरी आज्ञादायिनी स्वामिनी !

डेसडेमोना : मेरे प्रिय ऑथेलो !

ऑथेलो : अपने सामने तुम्हें देख कर मुझे अपार हर्ष हो रहा है। तुम मेरे प्राणों का आनंद हो ! यदि हर तूफ़ान के बाद ऐसा सुख मिले, तो यह प्रचण्ड पवन तब तक चले जब तक मुर्दे करवटें न बदल डाले, कोई चिंता नही यदि उटती हुई लहरें आकाश में स्वर्ग को छू लें या नरक तक पृथ्वी के नीचे धँस जायें। यदि मुझे कभी मरना है, तो मै इस क्षण मर जाऊँ, क्योंकि इस क्षण मै पूर्ण तृप्त हूँ और अज्ञात भविष्य में संभवत: ऐसी परितृप्ति कभी भी नहीं मिल सकेगी !

डेसडेमोना : ईश्वर न करे, यह इच्छाएँ पूर्ण हों। जैसे-जैसे समय बीते, परमात्मा करे हमारा प्रेम और आनंद नित्य परिवर्द्धित हों।

ऑथेलो : भाग्य के देवताओ ! तथास्तु कहो ! आज में ऊपर तक आनंद प्लावित हो गया हूँ। कैसे कहूँ। मेरा आनंद तो शब्दों में समा नहीं पा रहा है ! गिरा अनयन है, नयनों में वाणी नहीं है, मैं इस गूँगे की मिठास का वर्णन कैसे करूँ ? **(चुंबन लेते हुए)** यह···· और यह···· सच, यदि हमारे जीवन मे टकराहट हो तो यही उसका रूप हो····[1]

इआगो : **(स्वगत)** इस समय तो तुम्हारे तार मिले हुए हैं, लेकिन मै तो इस सामंजस्य को तोड़ ही दूँगा, फिर देखना कैसा बेसुरा राग निकलता है। मैं झूठ नहीं कहता, ईमानदार आदमी हूँ।

ऑथेलो : चलो दुर्ग की ओर चलें। मेरे पास बड़ी खुशखबरियाँ हैं। हमारा युद्ध समाप्त हो गया है। और तुर्क डूब गये हैं। मेरे मित्रो ! द्वीप

---

१. अर्थात् चुंबन ही टकराहट का रूप हो।

के निवासियो ! आप लोग तो सकुशल हैं ? प्रिये ! साइप्रस की प्रजा तुम्हें बड़ा स्नेह और सम्मान देगी। यह सदैव मुझे बहुत चाहती है। प्रियतमे ! मैं वाचाल हो गया हूँ और अपने ही सुखों में रम गया हूँ न, कि मुझे कुछ ध्यान नहीं रहा ! मेरे अच्छे इआगो ! ज़रा खाड़ी तक चले जाओ और मेरे बक्स इत्यादि जहाज से उतरवा लो। जहाज़ के कप्तान को दुर्ग में ले आना। वह बड़ा योग्य और सम्माननीय व्यक्ति है। चलो डैसडेमोना, साइप्रस में मुझसे मिलकर आनंद आ गया।

[ऑथेलो, डैसडेमोना और सेवकों का प्रस्थान। केवल इआगो और रोडरिगो रह जाते हैं।]

इआगो : क्या तुम कुछ समय बाद मुझसे बंदरगाह पर मिलोगे ? यदि तुम वीर हो, और जैसा कि कहा जाता है कि क्षुद्र व्यक्ति भी प्रेम में इतने उदात्त हो जाते हैं, जितने कि वे होते नहीं, तो मेरी बात सुनो ! आज रात लेफ्टिनेट की ड्यूटी है—रात्रि-प्रहरियों और रक्षकों की देखभाल करना। एक बात पहले बता दूं कि डैसडेमोना और कैसियो में गहरी प्रीति है।

रोडरिगो : उससे ? यह कैसे हो सकता है ?

इआगो : चुपचाप मेरी बात सुनो और अपने मुँह को बंद ही रखो। याद है न ? शुरू में ऑथेलो की बड़ी-बड़ी बातें सुनकर डैसडेमोना ने किस आवेश से उससे प्रेम किया था ? लेकिन बातों के कारण तो वह सदैव वैसा ही प्रेम नहीं कर सकती ? अगर तुममें थोड़ी भी बुद्धि है, तो शायद तुम भी ऐसा नहीं समझोगे। अपने हृदय की इच्छाओं को पूर्ण करने के लिये उसे कोई सुंदर पात्र चाहिये। भला ऐसे शैतान के-से कुरूप मूर को देखकर वह सुख कैसे पा सकती है ? जब पहली वासना का आवेश शांत हो जाता है, तब

उस अग्नि को भड़काने के लिये किसी नयी वस्तु की आवश्यकता होती है—समवयस्कता, सुंदर मुख, अच्छा स्वभाव और रुचियाँ, इनमें से कोई भी ऐसी उत्तेजना दे सकता है। मूर में तो ऐसा कोई गुण नहीं। अतः यह स्पष्ट ही है कि जब ऐसी कोई बात डैसडेमोना को नहीं मिलेगी, जिसमें उसका मन रम सके, तो उसका कोमल स्वभाव उचाट खायेगा और उसकी आँखों से सारे पर्दे उतर जायेंगे। उसे लगेगा, वह सब कुछ खो चुकी है। वह उससे ऊबने लगेगी और तब वह अपने स्वभाव से मेल खाने वाले प्रेमी की खोज करने लगेगी। अब अगर ऐसी हालत हो जाये, और इसके सिवाय कुछ हो नहीं सकता, तब कैसियो के सिवाय और ऐसा कौन है जो उस परिस्थिति में अधिक उपयुक्त और भाग्यशाली दीखता हो? वह बड़ा मिठबोला है और ऐसी नैतिकता उसके पीछे नहीं, कि जो अपनी जघन्य तृष्णा पूरी करने के लिये मीठे व्यवहार का दिखावा करने से उसे रोक दे। उसके अतिरिक्त ऐसा कोई नहीं, जिसको डैसडेमोना अपने प्रेम का पात्र बना सके। वह बड़ा अविश्वमनीय व्यक्ति है और अवसरवादी भी है। वह अपने अनुकूल परिस्थितियाँ बनाना जानता है और ऐसे मौके कभी नहीं चूकता जिनमें वह अपनी कलुषित वासनाओं की तृप्ति कर सके। वह पक्का शैतान है। और फिर जवान है, खूबसूरत है और कमसिन, अनुभवहीन और मूर्खों को आकर्षित करने के सारे गुण उसमें मौजूद हैं। वह पक्का धूर्त्त है। और डैसडेमोना ने तो उसके प्रति अपने आकर्षण को प्रगट भी कर दिया है!

रोडरिगो : लेकिन, जाने क्यों, मुझे इस सबमें विश्वास नहीं होता। वह स्त्री सर्वश्रेष्ठ मानवी गुणों से पूर्ण है।

इआगो : क्या मूर्खता की बात है। वह एक साधारण स्त्रीमात्र है और

उसमें भी वही वासनाएँ तथा पाप की ओर लिप्त होने की तृष्णा है। यदि वह असाधारण होती तो वह मूर के प्रेम में कभी नहीं पड़ती। वह भी अंगूर की शराब ही पीती है। अरे अक्ल के दुश्मन! देखा नही था, वह कैसे उसके हाथ को दबा रही थी? अच्छा कहो, तुमने नहीं देखा था?

रोडरिगो : देखा क्यों नही था, लेकिन वह तो सौजन्य की बात थी!

इआगो : मै शर्त बद कर कहता हूँ कि वह वासना थी। अनैतिकता और तृष्णा के इतिहास की वह भूमिकामात्र थी। उनके होंठ इतने पास आ गये थे कि उनके श्वास टकरा रहे थे। रोडरिगो! यह कुटिल **विचार** है। जब यह पारस्परिक मिलन इस प्रकार रास्ता बनाता है तब ही पाप की वास्तविक क्रिया अपने को साकार कर उठती है। वह स्वामिनी की भाँति आकर बाद में अपना सर्वाधिकार कर लेती है। मूर्ख न बनो! मेरी बात मानो! मै तुम्हें वेनिस से लाया हूँ। आज रात जो मैं तुमसे कहूँ उसके लिये सन्नद्ध रहो। कैसियो तुम्हें नही जानता। वह निकट ही होगा। किसी तरह उसे क्रुद्ध करने की कोई तरकीब निकाल लो, ज़ोर से बोल कर या उसकी फौजी पाबंदियों पर कोई धब्बा लगाकर, या जैसा भी मौका देखो उसे किसी तरह से चिढ़ा दो।

रोडरिगो : अच्छी बात है।

इआगो : वह बड़ा तुनुकमिजाज़ है और उसे जल्दी गुस्सा चढ़ता है। हो सकता है, वह तुम पर वार भी करे। ऐसा करो कि वह तुम पर हमला करे। मैं तो इसी में से ऐसा कारण ढूँढ निकालूँगा कि साइप्रस में गदर हो जाये। कम से कम इतना तो हो जायेगा कि कैसियो को नौकरी से हाथ धोना पड़ जायेगा। तुम्हारी मंज़िल पास आ जायेगी और मुझे मौका मिल जायेगा कि मैं अपनी परिस्थिति का

लाभ उठा कर तुम्हारे लिये रास्ता साफ़ कर सकूँगा ताकि तुम्हारी इच्छाओं की शीघ्रातिशीघ्र पूर्ति हो जाये।

रोडरिगो : मैं तुम्हारे आदेशानुसार चलूँगा और प्रयत्न करूँगा कि इस अवसर का लाभ उठाया जा सके!

इआगो : मैं विश्वास दिलाता हूँ। कुछ देर बाद मुझसे दुर्ग के पास मिल लेना। तब तक मैं मूर का सामान लाने जाता हूँ। बिदा।

रोडरिगो : बिदा।

[प्रस्थान]

इआगो : मुझे विश्वास है कि कैसियो डैसडेमोना से प्रेम करता है और यह भी विश्वसनीय और उचित लगता है कि वह भी उसे चाहती है। यद्यपि मूर से मैं घृणा करता हूँ फिर भी मानना पड़ेगा कि वह स्वभाव से स्नेही, दृढ़ तथा उदात्त है और वह डैसडेमोना के प्रति बहुत उदार, स्नेही और प्रेमी पति प्रमाणित हो गया। मैं भी उसे प्यार करता हूँ, केवल वासनाजन्य तृष्णा के कारण नहीं, हालाँकि मैं अपने को पाप के प्रति अबोध भी नहीं मानता, लेकिन इसमें तो मेरी प्रतिहिंसा की तृप्ति होनी है क्योंकि मुझे संदेह है कि विषयी ऑथेलो ने मेरी स्त्री को भ्रष्ट किया है। यह विचार तो मेरी नस-नस में विष भरे दे रहा है, और जब तक मैं पत्नी के लिये पत्नी का बदला नहीं ले लूंगा तब तक मुझे कभी भी चैन नहीं पड़ेगा। यदि यह नहीं होगा तो मैं ऑथेलो के हृदय में ऐसी आग लगा दूंगा जो कभी भी बुझाई नहीं जा सकेगी। पहले तो मुझे इसके लिये कैसियो की कमियों को पकड़ना होगा, और यह तभी हो सकता है जब वह दो कौड़ी का कुत्ता रोडरिगो धैर्य्य धरकर मेरे आदेशों के अनुसार चले। जब कभी मौका लगेगा मैं ऑथेलो

से कैसियो की गंदे से गंदे शब्दों में निंदा करूँगा। मुझे यह भी संदेह है कि कैसियो की मेरी स्त्री से मित्रता है। ऑथेलो मेरे प्रति कृतज्ञ होगा, मैं उसे मूर्ख बनाऊँगा, उसकी शांति के विरुद्ध षड्यंत्र रचूगा, और उसके साथ ऐसा घात करूँगा कि वह पागल तक हो जाये! मेरी योजना यहाँ (**सिर में**) है, लेकिन अभी कुछ स्पष्ट नहीं है। कुटिलता का मुँह तभी स्पष्ट दिखता है जब वह प्रयोग में लाई जाती है।

[**प्रस्थान**]

दृश्य २

[ऑथेलो के घोषणावाहक का प्रवेश। उसके हाथ में घोषणा-पत्र है, उसके पीछे प्रजा है।]

घोषणावाहक : हमारे वीर सेनानायक ऑथेलो की, तुर्की बेड़े के पूरी तरह विनष्ट हो जाने का संवाद पाकर, यह इच्छा है कि प्रत्येक व्यक्ति विजय का आनंद मनाये; नृत्य, गीत और उत्सव के प्रबंध किये जायें, क्योंकि विजय के आनंद के अतिरिक्त यह उनके परिणाम का भी परमशुभ अवसर है। उनकी इस इच्छा की घोषणा की जाती है। भोजन के लिये लंगरों का प्रबंध किया गया है जहाँ कोई भी स्वतंत्रता से भोजन कर सकता है, उससे प्रीतिभोज का कोई मूल्य नहीं लिया जायेगा। इस समय पाँच बजे से ग्यारह बजे तक कोई रोक नहीं होगी। परमात्मा हमारे साइप्रस द्वीप तथा हमारे वीर तथा गौरवान्वित सेनानायक ऑथेलो का मंगल करे।

[**प्रस्थान**]

दृश्य ३

[दुर्ग का एक विशाल प्रकोष्ठ]

[श्रॉथेलो, डेसडेमोना, कैसियो तथा सेवकों का प्रवेश]

श्रॉथेलो : प्रिय माइकिल ! आज रात को प्रहरियों पर तुम स्वयं दृष्टि रखना । प्रत्येक कार्य्य में नियमित मर्यादा होनी चाहिये, कहीं आनंद अपनी सीमा का उल्लंघन करके उत्पात न बन जाये ।

कैसियो : इआगो को इस संबंध में सारे आदेश दे दिये गये है, किंतु फिर भी मै स्वयं निरीक्षण करता रहूँगा ।

श्रॉथेलो : इआगो बहुत ईमानदार है । अच्छा गुडनाइट माइकिल ! कल प्रातःकाल शीघ्रातिशीघ्र मैं तुमसे बातें करूँगा । **(डेसडेमोना से)** चलो प्रिये । अभी हमें अपने परिश्रम का फल प्राप्त करना है और वह आनंद तो हमारे तुम्हारे बीच का है **(कैसियो से)** गुडनाइट ।

[श्रॉथेलो, डेसडेमोना तथा सेवकों का प्रस्थान । इआगो का प्रवेश]

कैसियो : स्वागत इआगो ! चलो, प्रहरियों का निरीक्षण कर आये ।

इआगो : इस समय नही लेफ्टिनेंट ! अभी तो दस भी नही बजे । डैसडेमोना के प्रेम के कारण ही हमारे जनरल ने समय से पूर्व ही हमें छोड़ दिया है—इसके लिये हमें उन्हें दोष नही देना चाहिये । अभी तक उन्होंने उसके साथ रात्रि व्यतीत नहीं की है और फिर वह तो आनंद-केलि का आधार ठहरी ।

कैसियो : वह एक बहुत अच्छी महिला है ।

इआगो : और सचमुच, कहते हैं, वह बड़ी क्रीड़ातुरा भी है ।

कैसियो : सच, वह बड़ी स्फूर्तिमती और मोहिनी है ।

इआगो : कैसी सुन्दर आँखे है उसकी ! ऐसा लगता है कि मानो प्रेम की ओर प्रेरित करने वाली वह स्वयं एक प्रेरणा ही है ।

कैसियो : आकर्षक नेत्र ! किंतु फिर भी उनमें कितनी लज्जा है, संकोच है।

इआगो : जब वह बोलती है तब क्या वह मानों प्रेम करने का निमंत्रण नहीं देती ?

कैसियो : वह हर प्रकार से पूर्ण है।

इआगो : उनकी सुहाग रात के आनंद के लिये, आओ लेफ्टिनेंट! मेरे पास एक मदिरा का पात्र है और यहाँ साइप्रस के वीर युवक हैं, कोई ऐसा नहीं जो कृष्णवर्ण ऑथेलो के आनंद और मंगल-कामना के लिये पीने को तत्पर न हो।

कैसियो : नहीं प्रिय इआगो ! आज रात नहीं। शराब के नाते मेरा दिमाग बहुत कमज़ोर है। मै तो चाहता हूँ कि समाज के स्वागत-सत्कार के आयोजनों में आनंद मनाने का कोई दूसरा ही साधन निकल आये।

इआगो : अरे ये सब अपने मित्र हैं। बस एक प्याला पियो। मै भी तुम्हारे साथ पियूंगा।

कैसियो : एक प्याला शराब पानी में मिलाकर मै आज रात पी भी चुका हूँ। और देखो न मेरा चेहरा कैसा सुर्ख हो गया है। इस निर्बलता को मेरा दुर्भाग्य ही समझो। इस कमज़ोरी से और खेलने का मुझे साहस नही है।

इआगो : कमाल करते हो ! आनंद की रात है और सारे वीर यही कामना करते हैं।

कैसियो : कहाँ हैं वे ?

इआगो : बस द्वार पर हैं। मैं सच कहता हूँ, बुला लो भीतर।

कैसियो : बुलाता हूँ, पर शराब मुझे तकलीफ़ देती है।

[प्रस्थान]

इआगो : यदि मैं इसे पी हुई शराब के ऊपर बस एक प्याला भर **और** पिलाने में सफल हो गया तो समझ लो यह किसी भी जवान औरत के लिये कुत्ते की तरह पागल और मस्त हो जायेगा। और उधर मेरा प्रेम में पागल मूर्ख रोडरिगो भी डैसडेमोना के लिये शुभ कामना में पी-पी कर धत्त हो चुका है और वह भी आज प्रहरी है। यहाँ मेरे साथ साइप्रस के तीन कुलीन और उद्दण्ड तरुण हैं जो ज़रा-सी बात पर भड़क उठते हैं और भिड़ने को तैयार रहते हैं। मैंने उन्हें पिला-पिलाकर उत्तेजित कर रखा है। वे भी प्रहरी हैं। अब शराबियों के इस दल में मुझे कैसियो को पिला कर ऐसे पेश करना है कि द्वीप-निवासी उत्तेजित हो उठें। लो वे आ गये। यदि मेरी आयोजना के अनुसार सब कार्य पूर्ण हो गये तो फिर मेरी नाव तो हवा और पानी की अनुकूलता में मज़े में बहेगी।

[कैसियो का मोनटानो तथा अन्य नागरिकों के साथ प्रवेश। पीछे मदिरा-पात्रों के साथ सेवक हैं।]

कैसियो : भगवान कसम ! उन्होंने मुझे तो पहले ही पिला-पिला के चक्कू कर दिया है।

मोनटानो : ज़रा-सी लीजिये। सैनिक हूँ, सच कहता हूँ, बहुत थोड़ी-सी।

इआगो : शराब लाओ।

[गाता है।]

खन खन प्याले बजें हमारे
खन खन खन खन खन खन !
होता है इंसान सिपाही
और ज़िंदगी छोटी भाई,
पिये न क्यों फिर कहो सिपाही !
खन खन प्याले बजें हमारे
खन खन खन खन खन खन !

लड़को ! और शराब लाओ !

कैसियो : भगवान कसम ! क्या ज़ोरदार गाना है !

इआगो : इसे मैंने इंगलैंड में सीखा था, जहाँ के लोग पीने में कमाल करते हैं। तुम्हारे डेन, जर्मन, यहाँ तक कि मोटी तोंद वाले होलेंड-वासी भी इस मामले में अंगरेज़ों के सामने कुछ नहीं हैं।

कैसियो : क्या अंगरेज़ इतना पियक्कड़ होता है ?

इआगो : डेन शराब के नशे में पछाड़ खा जाये मगर अंगरेज़ चूँ भी न करेगा। जर्मन को पीने में मात देते वक्त तो उसे पसीना भी नहीं आता। होलेंडवासी तो क़ै करने लगता है, जब कि अंगरेज़ अगला प्याला भरवाने की इच्छा करता है।

कसियो : हमारे वीर जनरल के स्वास्थ्य के लिये ......

मोनटानो : लेफ़्टिनेंट मैं तुम्हारे साथ हूँ। शराब के साथ तो अब इंसाफ़ होगा।

इआगो : आह प्यारे इंगलैंड !

राजा स्टीफन योग्य व्यक्ति था बड़ा वीर था
उसकी ब्रीचेस[1] की कीमत बस एक क्राउन[2] थी
दर्जी ने ६ पेंस[3] अधिक ले लिये हाथ से
गाली राजा ने दी उसको यही बात थी।
वह ऊँचे दर्जे का था इंसान नामवर,
तुम हो नीचे दर्जे के काहिल हो सबसे
गर्व राष्ट्र का लाता सदा पतन जगती में
संतोषी बन रहो, मिले जो लेकर, सुख से !

और शराब लाओ !

कैसियो : भगवान कसम ! यह गाना तो पहले वाले से भी अच्छा है।

---

१. चुस्त पाजामा। २. सिक्का। ३. छोटा सिक्का–आने की भाँति।

इआगो : और गाऊँ ?

कैसियो : नहीं। क्योंकि ऐसे गाने गाने वाले के लिये यह स्थान उपयुक्त नहीं है। भगवान सबसे ऊपर है। कुछ प्राणी ऐसे हैं जिनकी रक्षा होनी चाहिये, कुछ आत्माएँ ऐमी हैं जिनकी रक्षा नहीं होनी चाहिये।

इआगो : यह तो सच है लेफ़्टिनेंट !

कैसियो : जहाँ तक मेरा सवाल है, मै तो जनरल का कोई अनिष्ट नहीं चाहता। शायद इसीलिये मेरी रक्षा हो जायेगी।

इआगो : यही मेरी आशा भी है लेफ़्टिनेंट !

कैसियो : हाँ किन्तु तुम्हारी मर्जी से ही सही, पर मुझसे अधिक नहीं। लेफ़्टिनेंट से पहले एन्शेन्ट नही। छोड़ो भी यह सब। आओ अपने कर्त्तव्य का पालन करें। ईश्वर हमारे पापों के लिये हमें क्षमा करे। श्रीमान् ! आइये ! अपने कर्त्तव्य की ओर ध्यान दे। महाशयो ! मुझे यह न समझना कि मै नशे में हूँ। मैं जानता हूँ, यह मेरे ऐन्शेन्ट हैं। यह मेरा दायाँ हाथ है, यह बायाँ है। मैं बिल्कुल ठीक हूँ। देखो। मैं बिल्कुल बातें कर रहा हूँ।

सब : बिल्कुल !

कैसियो : क्यों ? बिल्कुल ठीक। तब आप लोग मेरे बारे में यह न सोचें कि मैं नशे में हूँ।

[**प्रस्थान**]

मोनटानो : क़िले के बुर्ज पर चलो, अब अपनी-अपनी जगह पर पहरा देना उचित है।

इआगो : (**व्यंग से**) आपने इस आदमी को देखा, जो अभी बाहर गया है। वह अपने को इतना महान योद्धा समझता है कि सीज़र के पास खड़ा होने योग्य है ! और उसकी धूर्त्तता देखो ! बिल्कुल पता

नहीं चलता कि उसमें और उसकी भलमनसाहत में फर्क क्या है ? कैसे अफ़सोस की बात है ! आॅथेलो ने उस पर कितनी बड़ी जिम्मेदारी डाल रखी है ! मुझे डर है, किसी न किसी दिन जब यह नशे में झूम जायेगा, द्वीप पर बड़ी हलचल मचा देगा।

मोनटानो : क्या अक्सर यह ऐसा ही हो जाता है ?

इआगो : हाँ, हर रात सोने जाते वक्त पीता है। अगर रात इसे सुला न दे तो इसके पीने का अंत न हो।

मोनटानो : तब तो जनरल को इसकी सूचना देना उचित है। शायद उन्हें इस बारे में कुछ भी पता नहीं हो, हो सकता है कि रहमदिली की वजह से उन्होंने सिर्फ़ इसकी अच्छाइयों पर ग़ौर करके इसकी बुरी आदतें नज़र अन्दाज़ कर दी हों। ठीक है न ?

[रोडरिगो का प्रवेश]

इआगो : (**उससे अलग से**) क्यों रोडरिगो ! मैं कहता हूँ लेफ्टिनेंट के पीछे लग जाओ !

[रोडरिगो का प्रस्थान]

मोनटानो : यह कितने अफ़सोस की बात है कि आॅथेलो ने अपने बाद एक नशेबाज़ को इतनी ताकत दे रखी है। ऐसे मामले में वीर मूर को सूचित कर देना तो एक बहुत बड़ी ईमानदारी ही समझनी चाहिये।

इआगो : भाई, मैं तो सारे साइप्रस की दौलत के बदले में भी ऐसा नहीं कर सकता। मुझे कैसियो से बहुत प्रेम है और उसकी यह बुरी आदत छुड़ाने के लिये मैं तो कुछ भी करने को तैयार हूँ। सुनो-सुनो। यह भीतर शोर कैसा हो रहा है ?

[पुकार : बचाओ ! बचाओ ! रोडरिगो को भगाते हुए कैसियो का प्रवेश]

कैसियो : कमीने ! हरामी ! शैतान !

मोनटानो : लेफ़्टिनेंट ! क्या बात है ? क्या बात है ?

कैसियो : यह बदमाश मुझे मेरा कर्त्तव्य सिखायेगा ? मैं इसे मार के भुर्ता बना दूँगा !

रोडरिगो : मार-मार के !

कैसियो : फिर बोला लुच्चे ! (**रोडरिगो को मारता है।**)

मोनटानो : नहीं ! वीर लेफ़्टिनेंट ! मारो मत ! मैं प्रार्थना करता हूँ, मारो मत ।

[**रोकता है ।**]

कैसियो : छोड़िये मुझे ! वर्ना मैं ग्रापका भी सिर तोड़ दूँगा ।

मोनटानो : छोड़ो-छोड़ो । तुम नशे में हो ।

कैसियो : नशे में हूँ ?

[**लड़ते हैं ।**]

इग्रागो : (**रोडरिगो से ग्रलग**) भाग-भाग ! तुरंत बाहर जाकर शोर करके ग्रासमान सिर पर उठा ले। खूब चिल्लाना : ग़दर ! ग़दर ! बलवा ! बलवा !

[**रोडरिगो का प्रस्थान**]

सुनिये वीर लेफ़्टिनेंट ! भगवान की मर्जी ! महाशयो ! बचाग्रो ! लेफ़्टिनेंट ! मोनटानो ! श्रीमान् ! बचाग्रो ! स्वामी ! लो-लो घंटा बज गया । (**घंटा बजता है।**)खतरे का घंटा! कौन बजा रहा है घंटा! उफ़ शैतान ! नगर जाग उठेगा । भगवान की इच्छा । ग्ररे रुको ! कभी सिर उठाने लायक नहीं रहोगे !

[**ग्रॉथेलो तथा सेवकों का प्रवेश**]

ग्रॉथेलो : क्या बात है ?

मोनटानो : ईश्वर की सौगंध । मेरा ख़ून बह रहा है । उफ़ कितनी चोट लगी है । कितना घायल हो गया हूँ ।

[मूर्च्छित हो जाता है ।]

आँथेलो : जान प्यारी है तो हाथ रोक दो ।

इआगो : रुको-रुको लेफ़्टिनेंट ! मोनटानो ! श्रीमान् ! नागरिको ! क्या समय, स्थान और कर्त्तव्य ! आप सबको भूल गये हैं ? मैं कहता हूँ रुको । जनरल आपसे कुछ कहना चाहते हैं ? धिक्कार है । रुकिये, रुकिये !

आँथेलो : रुक जाओ ! ठहर जाओ ! कैसे हुआ यह सब ! किसने की इसकी शुरुआत ? क्या हम तुर्कों जैसे हो गये हैं ? भगवान ने तुर्कों जैसे शत्रुओं को हटाया था, क्या इसीलिये कि हम आपस में लड़ मरें ? ईसाई धर्म की लाज कहाँ है तुम्हारी ? यह बर्बर झगड़ा ! अगर अब किसी का गुस्से से उमँग कर हाथ भी हिला तो समझ लो उसे अपनी जान की परवाह नहीं है । जो हिला सो मरा । उस भयानक घंटे का बजना रोक दो, व्यर्थ ही द्वीप-निवासियों पर आतंक छा जायेगा । अब कहिये क्या बात है ! इआगो ! तुम ईमान-दार हो ! दुख के मारे कैसी मुर्दनी छा गई है तुम पर ? बोलो ! इसे किसने शुरू किया ? मेरे प्रति तेरे प्रेम की सौगंध ! मैं तुझसे पूछता हूँ ।

इआगो : मैं नहीं जानता । क्षण भर पहले तो सब एक दूसरे के मित्र थे, मानों दूल्हा-दुल्हिन हों और क्षण भर बाद ही खड्ग लेकर एक दूसरे पर टूट पड़े । फिर ऐसे लहू के प्यासे हो गये जैसे आकाश-ग्रहों ने इनकी मति फेर दी । कैसे बताऊँ कि इस दुर्घटना का प्रारंभ कैसे हुआ । अच्छा होता किसी गौरवमय युद्ध में मेरे पाँव ही कट जाते तो कम से कम मैं ऐसा दृश्य देखने को यहाँ उपस्थित तो न होता !

आँथेलो : क्या है यह सब माइकिल ! क्या तुम बिल्कुल भूल गये कि

तुमसे क्या आशा थी ? क्या तुम अपने आपको भुला बैठे ?

कैसियो : क्षमा करें जनरल ! मै कुछ नहीं कह सकता ।

ऑथेलो : वीर मोनटानो ! तुम अपने आचार-व्यवहार में सदैव अत्यंत सुसंस्कृत और सुसंयत थे और अपने यौवन में भी अपने गांभीर्य्य और शांतिप्रियता के लिये प्रसिद्ध थे । बुद्धिमानों में भी तुम्हारा नाम अत्यंत आदर के साथ लिया जाता है । क्या बात है कि तुम अपने यश को नष्ट करना चाहते हो ? इस तरह बात-बात में झगड़ा करना क्या शोभनीय है? मुझे सारी परिस्थिति समझाओ ।

मोनटानो : परमदयालु ऑथेलो, मैं बहुत घायल हो गया हूँ । तुम्हारा अफ़सर इआगो तुम्हें सारी बातें बता सकता है । क्षमा करना, मै बोल नहीं सकता, मेरे अंग-अंग में दर्द होता है । न मैं जानता हूँ कि मैंने क्या गलती की है । बेशक अगर अपनी जान बचाना, अपनी ज़िन्दगी से प्यार करना, अपनी रक्षा करना एक भयानक वार से अपनी हिफाज़त करना गलती है तो मैं भी कुसूरवार हूँ ।

ऑथेलो : ईश्वर की सौगंध ! अब मेरी तर्क-बुद्धि पर मेरा क्रोध छाता जा रहा है । मेरी निर्णय-शक्ति मंद हो रही है और क्रोध मुझे बहाये लिये जा रहा है । यदि मैं तनिक भी अपनी भुजा उठाऊँ या हिला दूँ तो तुममें सबसे अधिक वीर भी आतंक से मर जायेगा, मेरे भयानक दण्ड का भागी होगा । मुझे तुरंत बताओ कि यह ख़ूनी झगड़ा कैसे शुरू हुआ, किसने अगुवाई की और कौन अपराधी है। वह मेरा सगा भाई भी क्यों न हो, उसे मेरी मित्रता से हाथ धोना पड़ेगा । कितने शर्म की बात है कि तुम अपने निजी मामले, अपने घरेलू झगड़े ऐसे नगर में करो जहाँ युद्ध की भयानक छाया का आतंक अभी तक प्रजा के हृदय को भयभीत किये हुए है । और वह भी रात को, ठीक दुर्ग में और वह भी रक्षा-केन्द्र में ? कितनी

भयानक भूल है। इग्रागो ! यह किसने शुरू किया ?

मोनटानो : यदि तुम उसके प्रति स्नेह या नौकरी में उसके साथ संबद्ध होने के कारण सच नहीं बोलते और इधर-उधर की बात करते हो, तो तुम सच्चे सैनिक ही नहीं हो !

इग्रागो : ग्राह मेरे मर्म को न छुग्रो ! माइकिल कैसियो के विरुद्ध कुछ कहने की जगह तो मेरी जीभ कट जाती तो ग्रच्छा होता ! किंतु मुझे विश्वास है कि यदि सत्य कह दूँगा तब भी कैसियो का कुछ नहीं बिगड़ेगा। सुनिये जनरल ! बात यों है। मैं ग्रौर मोनटानो बातें कर रहे थे कि एक ग्रादमी 'बचाग्रो-बचाग्रो' चिल्लाता भागा ग्राया। पीछे-पीछे कैसियो तलवार खींचे उसे धमकाते ग्रा रहे थे। लगता था कि मार ही देंगे। तब यह (मोनटानो) महाशय, कैसियो के सामने पड़ गये ग्रौर इन्होंने इनसे रुकने की प्रार्थना की। मैं उस चिल्लाने वाले के पीछे दौड़ा, क्योंकि कहीं उसके चिल्लाने से नगर न जाग उठे ग्रौर हुग्रा भी यही। वह बहुत तेज दौड़ता था। मैं उसे न पा सका। तभी मैं इधर दौड़ा क्योंकि इधर तलवारें खन-खना रही थीं। कैसियो चिल्ला रहे थे कि मार डालूँगा ग्रौर वह ऐसी बात थी जो मैंने कभी ग्राज रात से पहले देखी भी नहीं थी। मुझे लौटने में ज़्यादा देर भी नहीं लगी। लौटते ही क्या देखता हूँ कि ऐसे ज़ोर-शोरों से तलवारें चल रही थीं, बस वैसे ही जैसे कि ग्रापने इन्हें ग्रलग करते वक्त देखा। इससे ज़्यादा मुझे इस मामले में कुछ नहीं मालूम। इंसान ग्राखिर इंसान है। भूल बड़ों-बड़ों से होती है। ग्रौर गुस्से में ऐसा होता ही है। कैसियो का ऐसा क्या कुसूर है, गुस्से में तो लोग ग़लतफहमी में पड़कर ग्रपने ख़ासुलख़ासों पर हमला कर बैठते हैं। ग्रौर यह भी पक्की बात है कि वह जो ग्रादमी भाग गया है उसने कैसियो का ग्रपमान किया था,

जिसे धैर्य्य से सह सकना भी संभव नहीं था।

ऑथेलो : मैं जानता हूँ कि कैसियो के प्रति तुम्हारी सद्भावनाएँ, तुम्हारा स्नेह विषय की गंभीरता को कम करने के प्रयत्न में हैं। इसीलिये जहाँ तक हो सका है, तुमने अपने विवरण को ऐसा रंग देने का प्रयत्न किया है कि अपराध प्रगट नहीं हो। यह सच है कि मैं तुम्हें चाहता हूँ कैसियो! लेकिन अब तुम्हें मैं अपना मातहत अफ़सर बनाकर नहीं रख सकता।

[डैसडेमोना का सेवकों के साथ प्रवेश]

देखो। इस शोर-गुल से डैसडेमोना भी जाग गई है। मैं तुम्हारे मसले को एक मिसाल बनाकर पेश करूँगा।

डैसडेमोना : क्या बात है ?

ऑथेलो : अब सब ठीक है प्रिये! चलो सोने चलें। (**मोनटानो से**) तुम्हारे घावों की देखरेख मैं खुद करूँगा। इआगो! नगर पर सचेत दृष्टि रखना और जो इस झगड़े से घबरा गये हैं उन्हें तसल्ली देना। चलो डैसडेमोना! यह तो योद्धा के जीवन का ही एक अंग है कि अपनी शांतिपूर्ण निद्रा को इस प्रकार के झगड़ों में नष्ट किया करे।

[इआगो और कैसियो के अतिरिक्त सबका प्रस्थान]

इआगो : क्यों लेफ़्टिनेंट! क्या घायल तो नहीं हुए ?

कैसियो : इतना कि अब हकीम मेरा इलाज नहीं कर सकते।

इआगो : भगवान न करे।

कैसियो : मैंने अपना अच्छा नाम आज खत्म कर दिया। वही मेरे जीवन का अमर अंश था। अब तो मैं पशु से भी गया-बीता हूँ। हाय! मेरा सारा यश चला गया।

इआगो : कसम से, मैं तो समझा था तुम्हें कोई घातक चोट लगी है।

शरीर के घाव में जो पीड़ा की भावना होती है वह नाममात्र की हानि से कहीं अधिक पीड़ा देती है। यश क्या है ? एक झूठा और बेकार का प्रदर्शन, जो प्रायः अयोग्य भी प्राप्त कर लेता है, और मामूली-सी बात पर नष्ट हो जाता है। कोई भी अपना यश तब तक नहीं गँवाता जब तक अपने को स्वयं ही हारा हुआ नहीं समझता। फिर, निश्चय ही तुम जनरल का स्नेह और विश्वास एक बार फिर जीत सकते हो। इस वक्त तो वह तुमसे नाराज़ हैं, क्योंकि तुमने एक अपराध किया है। और इसलिये तुम्हें निकालने को वह मजबूर हो गया है। लेकिन इसका मतलब यह थोड़े ही है कि उसके दिल में तुम्हारे ख़िलाफ़ कोई गहरी रंजिश भी है। यह तो ऐसे समझ लो, जैसे कोई बफरे हुए शेर को धमकाने को एक मासूम कुत्ते को मार उठा हो। (मोनटानो और कैसियो की तुलना ही यहाँ प्रगट की है।) यह तो नीति की बात है। उससे फिर क्षमा माँग लेना और फिर वह तुम्हारा हो जायेगा।

कैसियो : अच्छा यही होगा कि मुझसे घृणा की जाये, बजाय इसके कि इतने वीर जनरल के आधीन कार्य्य करने के लिये मुझ जैसा पूर्णतः अयोग्य, शराबी, नशेबाज़ अफ़सर रख लेने की प्रार्थना की जाये ! शराब पीकर बकना, झगड़ना, हमला करना ! और गाली देना ! और अपनी छाया को देखकर बहकना ! ओ मदिरा की अदृश्य आत्मा ! यदि तेरा कोई और विदित नाम न हो तो, ले आ ! मैं तुझे स्वयं शैतान कहकर क्यों न पुकारूँ ?

इआगो : वह कौन था जिसका तुमने तलवार लेकर पीछा किया था। उसने तुमसे क्या किया था ?

कैसियो : पता नहीं। मैं नहीं जानता।

इआगो : यह कैसे हो सकता है ?

कैसियो : मुझे बहुत-सी धुँधली-धुँधली-सी बातें याद हैं। कुछ साफ़ याद नहीं आता। एक झगड़ा हुआ था। और कुछ नहीं। हे भगवान ! अपनी ही बुद्धि को नष्ट करने के लिये मनुष्य एक ऐसी वस्तु अपने ही मुख से गले में उतार लेता है कि हर्ष, सुख और आनंद और मनोरंजन की खोज में वह अपने को पशु बना लेता है !

इआगो : किंतु इस समय बिल्कुल ठीक हो। इतनी जल्दी तुम कैसे ठीक हो गये ?

कैसियो : एक शैतान की जगह दूसरे ने ले ली है—नशे की जगह गुस्सा आ पहुँचा है। एक अपूर्णता मुझे दूसरे का अनुभव कराती है यहाँ तक कि मुझे अपने से घोर घृणा हो रही है।

इआगो : अरे तुम तो बड़े नीतिशास्त्री हो ! समय, स्थान और परिस्थिति को देखते हुए, ऐसा न होता तो कहीं अच्छा होता, किंतु जब ऐसा हो ही गया है, तो अपने बस में जितना है मामले को सुधार लेने की कोशिश करो।

कैसियो : यदि मैं अपने पद के लिये उससे प्रार्थना करता हूँ तो अवश्य वह मुझसे कह देगा कि मैं नशेबाज हूँ। यदि मेरे एक नहीं सौ-सौ मुँह होते तब भी इस अभियोग ने मुझे चुप कर दिया होता। अब अक्ल की बात करूँ, तब मूर्खता की ओर फिर एक हैवान बन जाऊँ—ऐसे आदमी को कौन अपना विश्वासपात्र बना सकता है ? कितना विचित्र है ! प्रत्येक मदिरा का अगला चषक अपवित्र है और उसमें सिवाय शैतान के कुछ नहीं रहता।

इआगो : नहीं, यह मत कहो। अच्छी मदिरा यदि उचित मात्रा में ली जाये तो वह एक अच्छे आनंददायक मित्र की भाँति है। योग्य लेफ़्टिनेंट ! उसे दोष न दो। यह तो मैं आशा करता हूँ कि तुम

कैसियो : इसका तो मैंने प्रमाण उपस्थित किया है। मैं कितना पी गया था !

इआगो : इसमें विचित्र क्या है ? तुम या कोई भी एक न एक बार पी ही जाता है। अब मैं तुम्हें इस मामले में बढ़ने की तरकीब बताता हूँ। इस समय हमारे जनरल की पत्नी ही स्वामिनी है, क्योंकि उसने उसका हृदय अपने सद्गुणों तथा सौंदर्य्य से पूरी तरह जीत लिया है। तुम उसी से जाकर प्रार्थना करो कि वह तुम्हें फिर तुम्हारा स्थान दिलाये। वह बड़े अच्छे स्वभाव की करुण और विशाल हृदय वाली स्त्री है। वह तो याचना करने पर माँगे हुए से अधिक न देने तक को नीच कार्य्य समझेगी ! उससे प्रार्थना करो कि वही तुम्हारे और उसके पति के बीच की दरार को भर दे। और मैं इस बात पर अपनी सारी संपत्ति दाँव पर लगाकर कहता हूँ कि यह जो दरार पड़ी है भर जायेगी तो ऐसा पक्का संबंध होगा कि यह दरार तुम्हें बाद में लाभदायक-सी दिखाई देने लगेगी।

कैसियो : सचमुच। सलाह तो बहुत अच्छी है।

इआगो : कसम से, मेरी ईमानदारी और प्रेम और सचाई पर शक न करो।

कैसियो : मैं भी इसी राय का कायल हूँ। भोर ही मैं डैसडेमोना से इस कार्य्य की प्रार्थना करूँगा। सचमुच इस समय यदि भाग्य ऐसे छोड़ जायेगा तो फिर मैं भला कहाँ का रहूँगा ?

इआगो : यही तो ! गुडनाइट लेफ्टिनेट ! मैं पहरे पर जाता हूँ।

कैसियो : गुडनाइट मेरे अच्छे इआगो !

[**प्रस्थान**]

इआगो : कौन कहेगा कि मैं यह सब करने के कारण नीच हूँ, कुटिल

हूँ। क्या मैंने अपनी राय निहायत ईमानदारी और प्रेम से नहीं दी, क्या यही ऑथेलो की कृपा प्राप्त करने का एकमात्र रास्ता नहीं है ? दूसरों को मदद देने को तैयार रहने वाली डैसडेमोना को अपने पक्ष में कर लेने के अलावा और कौन-सी आसान तरकीब है ? प्रकृति के तत्त्वों के समान ही वह भी अत्यंत दानशीला है। और जहाँ तक डैसडेमोना की मूर को जीत लेने की बात है वह भी क्या मुश्किल है ? वह चाहे तो उसको अपने पवित्र ईसाई धर्म से ही विमुख कर दे। उसके प्रेम के बंधन में मूर इतना बँधा हुआ है कि वह चाहे तो उसे बना दे, चाहे तो बिगाड़ दे। कैसियो के भले के लिये यदि मैंने उसे ऐसी राह सुझाई है तो फिर मुझे किस तरह कुटिल और दोषी ठहराया जा सकता है ? नरक के देवताओ ! जब शैतान मनुष्य को भयानक पाप करने को प्रेरित करता है तब वह सदैव उन्हें बड़ा साधुवेश धर कर आकर्षित करता है। यही तो मैं भी कर रहा हूँ। मेरी योजना यह है कि जब वह अपने पद पर पुनः नियुक्ति की प्रार्थना लेकर डैसडेमोना के पास जायेगा और वह मूर से उसकी ओर से ज़ोर से सिफ़ारिश करेगी, मैं मूर के दिमाग़ में यह ज़हर भरूँगा कि डैसडेमोना कैसियो को फिर नियुक्त करवाना चाहती है ताकि वह उससे अपनी वासनाओं की तृप्ति करने का अवसर बदस्तूर पा सके। जितना ही यह कैसियो की ओर से बोलेगी, उतना ही ऑथेलो का विश्वास भी उसके पातिव्रत पर से उठता जायेगा। इस प्रकार मैं उसके पवित्र नाम पर बट्टा लगा दूँगा और उसकी अच्छाई में से ही मैं ऐसा फंदा बना दूँगा जिसमें सब के सब अपने आप फँस जायेंगे।

[रोडरिगो का प्रवेश]

कहो रोडरिगो ! क्या हाल हैं ?

रोडरिगो : इस शिकार की दौड़ में मेरा तो वही हाल है जो शिकार करने वाले का नहीं, बल्कि शोर मचाने वाले, भोंकने वाले कुत्ते का होता है। मेरा धन तो क़रीब-क़रीब समाप्त हो गया। आज रात तो मेरी बेहद पिटाई हुई है। मैं समझता हूँ, अन्त में, मुझे जरा ज़्यादा अनुभव आ रहा है। पैसा हाथ नहीं, अक्ल ज़रा ज़ोर देकर कहती है कि मेरा वेनिस लौट जाना ही अच्छा है।

इआगो : वे कितने दीन होते हैं जिनमें धैर्य्य नहीं होता। हर जख्म पुरने के लिये वक्त लेता है। तुम जानते हो, हम मामूली अक्ल से ही काम लेते हैं, कोई जादू तो जानते नहीं। और बुद्धि तो, देखो, क्रमशः अपना विकास प्राप्त करती है। क्या सारी योजना संतोषजनक रूप से नहीं चल रही? इसमें कोई शक नहीं कि कैसियो ने तुम्हें मारा है, लेकिन तुमने भी ज़रा-सी तकलीफ़ सहकर कैसियो को नौकरी से निकलवा दिया है। माना कि हर वस्तु सूर्य के आलोक में ही पनपती-बढ़ती है, लेकिन देखो न? जो फल पहले लगते हैं, वे ही पहले पकते भी हैं। तनिक संतोष से काम लो! भगवान कसम! सुबह हो गई। आनंद और कार्य्य में रत मनुष्य को समय बीतता हुआ पता भी नहीं चलता। अब तुम जाओ, जहाँ तुम्हें जाना है। बाकी तुम्हें फिर पता चल जायेगा। जाओ अब जल्दी चले जाओ।

[**रोडरिगो का प्रस्थान**]

अब मुझे दो काम करने हैं। एक तो मुझे अपनी स्त्री को कैसियो की ओर से बोलने को डैसडेमोना के पास भेजना है। दूसरे मुझे तब तक ऑथेलो को दूर रखकर, ठीक तभी बीच में लाना चाहिये जब उसे डैसडेमोना से प्रार्थना करता हुआ कैसियो दिखाई दे। यही रास्ता ठीक है। योजना को विलंब और अकर्मण्यता से विनष्ट नहीं करना चाहिये।

[**प्रस्थान**]

*

तीसरा अंक

दृश्य १

[दुर्ग के सामने]

[कैंसियो तथा कुछ गायकों का प्रवेश । साथ में विदूषक है ।]

कैंसियो : उस्तादो ! यहाँ गाइये ! मैं आपके परिश्रम के लिये आपको संतुष्ट कर दूंगा । जनरल के स्वागत में एक छोटी-सी तान छेड़ दीजिये ।

[संगीत]

विदूषक : वाह उस्तादो ! क्या आपके बाजे नेपल्स होकर आये है कि वे नाक के सुर से अलाप रहे है ?

एक संगीतज्ञ : कैसे जनाब ?

विदूषक : क्या यह सब हवाई बाजे हैं ?

एक संगीतज्ञ : मेरी की कसम, आप ही जो बतायें ?

विदूषक : अरे इसमें तो एक किस्सा है । यह लो उस्तादो ! अपना इनाम । जनरल आपके संगीत से इतने खुश हो गये है कि मुहब्बत की खातिर वे चाहते हैं कि आप अब और शोरगुल न करें ।

एक संगीतज्ञ : अच्छी बात है जनाब ! हम चुप हैं ।

विदूषक : अगर आपके कोई ऐसा संगीत हो जो सुनाई न दे, तो उसे छेड़ दे । जनरल उस संगीत को पसंद नहीं करते जो कि सुनाई दे जाता है ।

एक संगीतज्ञ : माफ़ कीजिये । ऐसा कोई संगीत हमारे हुनर में नहीं ।

विदूषक : तो अपने बाजे रखिये अपने थैलों में और हवा में गायब हो जाइये ।

[संगीतज्ञों का प्रस्थान]

कैसियो : सुनते हो मेरे अच्छे दोस्त !

विदूषक : नहीं मैं तुम्हारे अच्छे दोस्त को नहीं सुनता !

कैसियो : भई, यह चकल्लस बंद करो। यह लो तुम्हारे लिये सोने का एक मामूली सिक्का है। अगर तुम्हें वह महिला जगी हुई मिले जो कि तुम्हारी स्वामिनी की सेवा में नियुक्त है तो ज़रा जाकर उससे कह दो कि कैसियो नाम का एक आदमी तुमसे बात करने की प्रार्थना करता है। मेरे लिये यह काम कर दोगे ?

विदूषक : ज़रूर ! अगर वह जाग गई होगी और इधर आयेगी तो मैं कह दूंगा।

कैसियो : बहुत अच्छे हो तुम ।

[**विदूषक का प्रस्थान। इआगो का प्रवेश**]

खूब समय से आये इआगो ?

इआगो : तो क्या रात तुम सोये ही नहीं ?

कैसियो : नहीं। जब हम एक दूसरे से अलग हुए थे तभी भोर हो गई थी। मैंने तुम्हारी पत्नी को बुलवाने का साहस किया है। मेरी इच्छा है कि वह किसी तरह मुझे दयालु डैसडेमोना के समीप पहुँचा दे।

इआगो : मैं अभी उसे तुम्हारे पास भेजता हूँ और मैं ऐसी तरकीब भी निकलूंगा कि तब तक मूर बीच से अलग हो जाये जब तक तुम आज़ादी से अपनी बात कह सको।

कैसियो : मैं इसके लिये तुम्हारा बड़ा आभारी होऊँगा।

[**इआगो का प्रस्थान**]

मैंने कभी फ्लोरेंस वासी को इतना दयालु और ईमानदार नहीं देखा।

[**इमीलिया का प्रवेश**]

इमीलिया : नमस्कार लेफ़्टिनेन्ट ! मुझे तुम्हारे प्रति स्वामी के असंतोष की बात जानकर बहुत दुख हुआ, परन्तु विश्वास रखो, मुझे आशा है सब ठीक ही होगा। जनरल और उनकी पत्नी इसी विषय पर बातचीत कर रहे हैं और देवी तुम्हारी ओर से ज़ोर देकर कह रही हैं। किन्तु मूर का कहना है कि जिस व्यक्ति को तुमने घायल किया है वह साइप्रस का एक बड़ा प्रभावशाली और महत्त्वपूर्ण व्यक्ति है और राजनीति के दृष्टिकोण से वे तुम्हें निकालने के अतिरिक्त और कुछ कर भी नहीं सकते थे। फिर भी उन्होंने तुम्हारे प्रति अपने प्रेम को स्वीकार किया है और तुम्हें तुम्हारे पद को पुनः प्राप्त कराने की चेष्टा में वे सबसे पहला अवसर प्राप्त करते ही अपनी पसंद को ही सबसे अधिक स्थान देंगे और किसी के सिफ़ारिश करने की ज़रूरत ही क्या है।

कैसियो : फिर भी मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ, अगर तुम बुरा न मानो तो, और हो सके तो, मुझे डैसडेमोना से एकांत में बातें करने का कुछ सुयोग अवश्य दोगी।

इमीलिया : आइये ! भीतर आ जायें। मैं आपको ले चलती हूँ जहाँ आपको उनसे किसी तरह की रुकावट के बिना बातचीत करने का, अपनी बात कहने का काफ़ी समय मिलेगा।

कैसियो : इसके लिये मैं सचमुच आपका बहुत आभारी होऊँगा।

[**प्रस्थान**]

दृश्य २

[दुर्ग का एक प्रकोष्ठ]

[ऑथेलो, इआगो और अन्य नागरिकों का प्रवेश]

ऑथेलो : हरकारे को इन पत्रों को दे दो और उसके द्वारा सिनेट को

मेरा अभिवादन भिजवा दो। इसके बाद, मुझसे दुर्ग-प्राचीर पर मिलना, मैं वहीं जा रहा हूँ।

इआगो : जो आज्ञा स्वामी। मैं अभी करता हूँ।

ऑथेलो : अच्छा महोदयो ! क्या हम इस सुरक्षा-प्राचीर की ओर चलें ?

नागरिक : हम श्रीमान् की सेवा में साथ रहेंगे।

[**प्रस्थान**]

दृश्य ३

[दुर्ग का उद्यान]

[डैसडेमोना, कैसियो और इमीलिया का प्रवेश]

डैसडेमोना : विश्वास रखो कैसियो ! मैं तुम्हारी ओर से जितना कुछ कह सकूँगी अवश्य कहूँगी।

इमीलिया : यही करें देवी ! इस विषय में मेरे पति भी बड़े दुखी हुए हैं, ऐसे जैसे यह आपत्ति उन्हीं पर पड़ी हो।

डैसडेमोना : निश्चय ही तुम्हारे पति बड़े ईमानदार हैं। इसमें संदेह मत करो कि मैं तुम्हें अपने स्वामी के विश्वास और मैत्री का पात्र बनाने में कुछ उठा नहीं रखूंगी।

कैसियो : ओ दयालु देवी ! मुझे चाहे जो कुछ हो जाये, मैं सदैव आपका वफ़ादार और सच्चा सेवक बना रहूँगा।

डैसडेमोना : हाँ-हाँ, इसके लिये मैं तुम्हें धन्यवाद देती हूँ। तुम अवश्य ही मेरे पति से परिचित हो। तुम बहुत दिनों तक उनके साथ रहे हो और मैं देखूँगी कि राजनीति की आवश्यकता से अधिक वे तुम्हारे प्रति उपेक्षा-भाव नहीं रखेंगे।

कैसियो : किंतु राजनीति के मामले तो उन्हें न जाने कितने दिन मुझसे दूर रखेंगे, हो सकता है कि कुछ कल्पित और आधारहीन घटनाएँ

बन जायें या आवश्यकता से अधिक तूल खींचा जाये कि मेरी अनुपस्थिति में मेरी जगह ही भर जाये और जनरल अपने प्रति मेरे प्रेम और मेरी अतीत की सेवाओं को ही भूल जायें।

डेसडेमोना : इस विषय में ऐसी आशंकाएँ मत करो। इमीलिया के सामने में यह दृढ़ प्रतिज्ञा करती हूँ कि तुम्हें तुम्हारा पद पुनः प्राप्त होगा। यदि मैं मैत्री भाव से वचन देती हूँ तो सदैव उसका अक्षरशः पालन भी करती हूँ। मैं अपने पति को चैन नहीं लेने दूंगी, मैं उन्हें सोने नहीं दूंगी जब तक वे मान न जायें, और तब तक इस विषय पर बातें करूँगी जब तक वे स्वीकार ही न कर लें। शैय्या पर मैं उनसे एक शिक्षक के समान बातें करूँगी। भोजन के समय में उस स्थान को पश्चात्ताप की भूमि बना दूंगी। जो कुछ वे करते हैं हर जगह कैसियो का मामला घुलमिल जायेगा। कैसियो ! इसलिये चिंता छोड़ दो, क्योंकि तुम्हारी वकील मैं मर भले ही जाऊँ लेकिन तुम्हारी बात को भूलूंगी नहीं।

[कुछ दूरी पर ऑथेलो और इआगो का प्रवेश]

इमीलिया : श्रीमती ! स्वामी आ रहे हैं।

कैसियो : देवी ! मुझे आज्ञा दें।

डेसडेमोना : क्यों ? ठहरो न। तुम भी सुनो, मैं उनसे कहती हूँ।

कैसियो : देवी ! इस समय नहीं, मैं बहुत परेशान हूँ। अपने कार्य्य को भी प्रस्तुत नहीं कर सकूँगा।

डेसडेमोना : अच्छी बात है, जैसा तुम चाहो।

[कैसियो का प्रस्थान]

इआगो : हूँ ! मुझे यह पसंद नहीं।

ऑथेलो : क्या कहते हो ?

इआगो : कुछ नहीं स्वामी, अथवा यदि····मैं नहीं जानता क्या है यह सब!

ऑथेलो : क्या वह जो मेरी पत्नी के पास से गया है कैसियो ही नहीं था ?

इआगो : कैसियो ! स्वामी ! नहीं, हाँ, पता नहीं, समझ में नही आता ··· वह क्यों ऐसे अपराधी की भाँति चुपचाप सरक जाता ···आपको आते देख कर ।

ऑथेलो : मेरे ख्याल से वही था ···

डैसडेमोना : आइये स्वामी ! मैं अभी एक प्रार्थी से बातें कर रही थी, एक आदमी आपकी नाराज़गी से बहुत ही दुखी हो गया है ।

ऑथेलो : तुम्हारा मतलब किससे है ?

डैसडेमोना : क्यों ? आपका लेफ्टिनेंट कैसियो था । मेरे प्रिय स्वामी ! यदि मुझमें आपको प्रभावित करने की कुछ भी शक्ति है तो उसकी इस वेदना को देखकर उसका समर्पण स्वीकार करिये, क्योंकि यदि वह आपको सच्चे हृदय से प्यार करने वाला नहीं है, जिसने अज्ञान से भूल की है, चालाकी से नहीं, तो मैं भी किसी चेहरे को देखकर उसकी ईमानदारी को नहीं पहचानती । मैं विनय करती हूँ आप उसे फिर बुला लें ।

ऑथेलो : क्या वही यहाँ से अभी-अभी गया था ?

डैसडेमोना : हाँ, वही था और वह इतना दुखी और लज्जित था कि उसके दुख का मैंने भी अनुभव किया है । प्रिय स्वामी! उसे फिर बुला लें ।

ऑथेलो : अभी नहीं, प्रिये डैसडेमोना ! फिर कभी ।

डैसडेमोना : किंतु शीघ्र ही न ?

ऑथेलो : प्रिये ! जितनी शीघ्रता हो सके उतनी ही । तुम्हारे लिये निश्चय !

डैसडेमोना : आज रात भोजन के समय ?

ऑथेलो : नहीं, आज रात नहीं ।

डैसडेमोना : तो कल भोजन के समय ?

ऑथेलो : मैं घर खाना नहीं खाऊँगा। मुझे दुर्ग में कप्तानों के साथ खाना है।

डेसडेमोना : तो फिर कल रात, या मंगलवार की सुबह सही, या मंगल की दुपहर या रात, या बुध की दुपहर। मैं प्रार्थना करती हूँ समय बता दीजिये। लेकिन तीन दिन से ज़्यादा न कहें। सच कहती हूँ, वह वास्तव में बड़ा पश्चात्ताप कर रहा है। आमतौर पर देखने में आपकी नज़र में उसकी नशेबाज़ी का कुसूर, सिवाय इसके कि युद्धकाल में अच्छे से अच्छे आदमी को भी मिसाल पेश करने के लिये सज़ा देनी ही चाहिये, ऐसा कोई कुसूर भी नहीं है कि उसे आपकी ओर से इतनी कड़ी सज़ा मिले। बताइये? वह कब आये? ऑथेलो! सच कहिये! मुझे ताज्जुब होता है कि क्या ऐसी भी कोई बात है जो आप मुझसे करने को कहें और मैं ऐसे ही उसके उत्तर में अनिश्चित-सी रह जाऊँ? वही माइकिल कैसियो! जो आपकी ओर से कितनी ही बार प्रेम-संदेसे पहुँचाने आया था, मैंने अनेक बार जब आपके बारे में ऐसी बातें कीं जैसे मैं आपको महत्त्व न देती होऊँ, तब वही आपकी ओर से बोलता था। सच, मुझे बड़ा अचरज होता है यह सोच-सोच कर ही कि आज मुझे उसी व्यक्ति को फिर से उसका पद दिलाने के लिये इतना अनुनय करना पड़ रहा है। सच कहती हूँ, इतना तो मैं ही आसानी से कर सकती थी!

ऑथेलो : मैं कहता हूँ बस करो। जब वह चाहे उसे बुला लो मैंने तो तुमसे कुछ भी इंकार नहीं किया।

डेसडेमोना : यह मैं तुमसे ऐसी कोई बहुत बड़ी चीज़ तो नहीं माँग रही? यह तो ऐसे ही समझो जैसे मैं तुमसे तुम्हारे दस्ताने पहन लेने की प्रार्थना कर रही होऊँ। या कहूँ कि अच्छा भोजन करिये,

सर्दी में कपड़े पहनिये या कहूँ कि इसमें आपका लाभ है इसे अवश्य करिये ! नहीं ! जब मैं आपसे कुछ विशेष प्रार्थना करूँगी, जिसमें मैं आपके प्रेम की परीक्षा करूँगी, वह तो सचमुच कोई बहुत बड़ी बात होगी और उसे शायद स्वीकार करते हुए आपको भय भी होगा।

आॅथेलो : मैं तुम्हें कुछ भी मना नही करूँगा। अब तनिक मुझे कुछ समय के लिये एकांत में रहने दो।

डैसडेमोना : मैं कब मना करती हूँ। मैं जाती हूँ स्वामी !

आॅथेलो : जा रही हो डैसडेमोना ! मैं बस सीधा तुम्हारे पास ही आता हूँ।

डैसडेमोना : चलो इमीलिया ! **(पति से)** आप जैसा ठीक समझें करें। मैं तो सदैव आपका ही अनुसरण करूँगी।

[डैसडेमोना और इमीलिया का प्रस्थान]

आॅथेलो : आह कितनी प्यारी है ! भले ही मेरी आत्मा का नाश हो जाये, किंतु मैं तुझसे प्रेम करता हूँ। और जब मैं तुझसे प्रेम करना छोड़ दूँगा, संसार में प्रलय आ जायेगा।

इआगो : मेरे वीर स्वामी····

आॅथेलो : क्या कहते हो इआगो ?

इआगो : क्या जब आप श्रीमती से विवाह से पूर्व प्रेम कर रहे थे माइकिल कैसियो सब कुछ जानता था ?

आॅथेलो : शुरू से आखिर तक···· सब जानता था···क्यों क्या बात है ?

इआगो : नहीं, अपने एक विचार को संतुष्ट करने के लिये। और कोई बात नहीं थी।

आॅथेलो : ऐसा तुम्हारा विचार है इआगो ?

इआगो : मैं समझता था तब वह उन्हें नहीं जानता था।

ऑथेलो : अरे, वह तो हम दोनों के बीच अक्सर सँदेसे लाता-लिवाता था।

इआगो : सचमुच !

ऑथेलो : बिल्कुल ! उसमें तुम क्या देखते हो ? क्या वह ईमानदार नहीं है ?

इआगो : ईमानदार ! स्वामी ?

ऑथेलो : ईमानदार ! हाँ ईमानदार !

इआगो : स्वामी ! यदि मैं कुछ जानता !

ऑथेलो : क्यों तुम क्या सोचते हो ?

इआगो : स्वामी ! सोचता हूँ !

ऑथेलो : (**स्वगत**) स्वामी ! सोचता हूँ !! ईश्वर देखे, यह तो मेरे ही शब्दों को दुहरा रहा है जैसे इसके मस्तिष्क में कोई भयानक विचार है, इतना भयानक कि प्रगट नहीं किया जा सकता। तुम्हारा कुछ मतलब अवश्य है। (**प्रगट**) मैंने अभी तुम्हें यह कहते सुना था कि तुम इसे पसंद नहीं करते। जब कैसियो मेरी पत्नी के पास गया था तब तुम्हें क्या पसंद नहीं आया था ? और जब मैंने कहा कि मेरे सारे प्रेम-परिणय-काल में वह मेरा विश्वासपात्र था तब तुम बड़बड़ा उठे थे। सचमुच ! जब तुमने यह शब्द कहा था तब तुम्हारी भौंएँ ऐसे संकुचित हो गई थीं जैसे तुम अपने मस्तिष्क में कोई भयानक विचार छिपाने का प्रयत्न कर रहे थे। यदि तुम्हें मेरे प्रति कुछ स्नेह है तो मुझसे अपने विचार प्रगट कर दो।

इआगो : स्वामी ! जानते हैं मै आपसे प्रेम करता हूँ।

ऑथेलो : मैं जानता हूँ तुम करते हो ! मैं जानता हूँ तुम ईमानदार, वफ़ादार और प्रेमी हो और बोलने के पहले सोच लेते हो, और इसी लिये तुम्हारी यह झिझक मुझे और भी ज़्यादा डरा रही है।

किसी भी बदमाश और धोखेबाज, झूठे आदमी में यह मामूली चालबाज़ियाँ मानी जातीं, किंतु एक ईमानदार आदमी में यही मन की गहराई में उतरी हुई हिचकिचाहट, जो भावना की चपेट में बाहर नहीं निकलती, दूसरा ही साक्ष्य प्रस्तुत करती है।

इआगो : मैं माइकिल कैसियो के लिये तो कसम खा कर कह सकता हूँ कि वह ईमानदार है।

ऑथेलो : मैं भी यही सोचता हूँ।

इआगो : आदमी को वही होना चाहिये जो कि वह दिखाई दे। यदि वे ऐसे नहीं दिखाई देते तो अवश्य ही वे मानवता को धोखा दे सकते हैं।

ऑथेलो : अवश्य ही मनुष्यों को वही होना चाहिये जो वे दिखाई दें।

इआगो : तब तो कैसियो को भी ईमानदार होना चाहिये क्योंकि वह दिखाई तो ऐसा ही देता है।

ऑथेलो : नहीं-नहीं, तुम्हारा मतलब इससे कुछ ज़्यादा ही है। बताओ। मुझसे सब मन की बात कहो, अपने हृदय की भीतरी बात मुझसे कहो, साफ़-साफ़, कुछ भी छिपाना नहीं, चाहे कैसी भी बुरी क्यों न हो।

इआगो : मेरे श्रेष्ठ स्वामी, मुझे क्षमा करें! मैं हर प्रकार से आपकी सेवा करने को कर्त्तव्य के नाते बँधा हुआ हूँ किंतु जो दास तक नहीं करते, हृदय के वे आंतरिक भाव प्रगट करने को बाध्य नहीं हूँ। यही मान लीजिये कि मेरे भाव गंदे हैं, कुटिल हैं, बुरे हैं, झूठे हैं और विशाल और महान् से महान् मस्तिष्क में भी कुटिल विचार घुस सकते हैं। ऐसा कौन-सा मस्तिष्क है जिसमें कभी भी कुविचारों ने अपना राज्य नहीं किया, भले ही वह साधारण रूप में कैसा भी चिंतन क्यों न करे?

ग्रॉथेलो : इसका मतलब है कि तुम मेरे विरुद्ध षड्यंत्र कर रहे हो और मेरे ख़ास दोस्त होकर ! अगर तुम समझते हो कि मेरे साथ इतनी ही बुराई की गई है तो भी मुझसे तुम इतना रहस्य बनाये हुए हो ?

इग्रागो : हो सकता है मैं अपने विचार में गलत होऊँ। मैं मानता हूँ कि मेरी प्रकृति में बुराई देखने की प्रवृत्ति अधिक है और बहुधा मेरी ईर्ष्या मुझे ऐसी कमियाँ देखने की ओर झुकाती है जो वास्तव में होती भी नहीं। फिर भी मै अनुनय करता हूँ कि आपकी बुद्धिमत्ता एक ऐसे व्यक्ति पर ध्यान नहीं देगी, जो कि अपने बिखरे हुए अनिश्चित वाक्यों से आपको कष्ट दे रहा है और स्वयं अधकचरे चिंतन में ही पड़ा रहता है। अतः यह आपकी मानसिक शांति के लिये ठीक नहीं है, न आपके भले के लिये ही है, न मेरे पौरुष के लिये; आत्मविश्वास और बुद्धि के लिये ही उचित है कि आप मेरे आंतरिक भावों की जानकारी प्राप्त करें।

ग्रॉथेलो : तुम्हारा क्या मतलब है ?

इग्रागो : अच्छा काम निस्संदेह प्रत्येक के लिये बहुमूल्य कोष होता है। जो मेरे धन के बटुए को चुराता है वह तो साधारण मूल्य की वस्तु चुराता है, मामूली चीज़ है वह तो ! पहले मेरी थी, फिर उसकी हो गई। धन तो हज़ारों के प्रयोग में आता है। लेकिन जो मेरे अच्छे नाम को चुराता है वह तो मुझे ऐसी चीज़ से लूट लेता है जिससे उसका कुछ बनता नहीं, लेकिन मैं तो कहीं का नहीं रहता।

ग्रॉथेलो : ईश्वर की सौगंध ! मुझे अपने विचार बताओ न ?

इग्रागो : यदि मेरा हृदय आपके सामने खुला रखा रहे तब भी आप पता नहीं चला सकते। तब तक जब तक मेरा हृदय मेरे वक्ष में है उसके भावों का पता चलाना असंभव ही है।

ग्रॉथेलो : उफ़ !

इआगो : आह मेरे प्रभु ! हरी आँखों वाली राक्षसी ईर्ष्या से सावधान रहिये। यह उस व्यक्ति का उपहास करती है जो अपने मस्तिष्क को इसके सामने समर्पित कर देता है। यह उसकी वेदनाग्रस्त भावनाओं से निर्मम क्रीड़ा करती है। संदेह से निरंतर वह उसको छलती रहती है। जो व्यक्ति जानता है कि उसे उसकी ऐसी पत्नी ने अपमानित, अनादृत किया है, जिसकी वह तनिक भी चिंता नहीं करता, वह अवश्य उस व्यक्ति की तुलना में सुखी है जो अपनी पत्नी से बहुत प्रेम करता है, किंतु फिर भी उस पर संदेह करता है, और फिर उसे अत्यंत चाहता है।

ऑथेलो : आह अभिशाप !

इआगो : संतोषमय दारिद्र्य भी धन है। किंतु अनंत धन भी शीत ऋतु की भाँति दारिद्र्य है यदि सदैव यह भय बना रहे कि कहीं यह धन चला न जाये। हे परमेश्वर ! मानवमात्र की ईर्ष्या से रक्षा करे !

ऑथेलो : क्यों ऐसा क्यों है ? क्या तुम समझते हो कि चंद्रमा के बढ़ती कलाओं के परिवर्तित रूप जैसे ईर्ष्या के परिवर्द्धित स्वरूप को देखते-देखते ही मेरा जीवन भी व्यतीत होगा? नहीं। एक बार संदेह में पड़न अनिश्चय से मुक्ति प्राप्त करने के समान है। मुझे तुम पशु समझना यदि मैं तुम्हारे विचित्र काल्पनिक विचारों को गांभीर्य्य से प्रश्रय दूं। मुझे इसमें ईर्ष्या नहीं होती कि मेरी पत्नी सुंदरी है, अच्छा भोजन करने की शौकीन है, समाज में मिलती-जुलती है, खूब बातें करती है, गाती है, खेलती है, नाचती है। जब स्त्री पतिव्रता होती है यह सब बातें तो उसकी अच्छाइयों में चार चाँद लगाती हैं। न मैं यही सोचता हूँ कि मुझमें बहुत कम गुण हैं इसीलिये वह मेरे प्रति ईमानदार नहीं रहेगी। उसने अपनी आँखें खोल कर मुझे अपने प्रेमी के रूप में चुना था। नहीं इआगो ! संदेह करने से पूर्व मैं

देखूंगा और सदेह करूंगा तो प्रमाण चाहूंगा और प्रमाण मिलते ही प्रेम या ईर्ष्या को सदा के लिये बिदा दे दूंगा।

इआगो : मुझे यह सुनकर प्रसन्नता होती है, क्योंकि अब मुझे आपको स्पष्टतया अपना प्रेम और कर्त्तव्य दिखाने का सुयोग मिलेगा। अतः अपने प्रति प्रेम के रूप में सुनिये। अभी मुझे इसका प्रमाण नहीं मिला है। मैं केवल यही इशारा करता हूँ कि आप अपनी पत्नी पर दृष्टि रखें और जब वह कैसियो के साथ हो उसे ध्यान से देखें। ऐसा व्यवहार करिये जैसे न आप ईर्ष्यालु हैं, न ऐसे रहें कि कुछ भी होता रहे हमें क्या परवाह। उसे देखिये, किंतु उसे न जानने दीजिये कि आप क्या कर रहे हैं। मैं यह स्वीकार नही करूँगा कि आपका महान् और पवित्र तथा कुलीन स्वभाव किसी प्रकार भी प्रतारित हो जाये। मैं अपने देश की स्त्रियों के स्वभाव को जानता हूँ। वेनिस में तो वे परमात्मा से भी उन चालबाज़ियों को नहीं छिपातीं जिन्हें अपने पति को कभी मालूम भी नहीं होने देतीं। उनका सबसे बड़ा ध्येय पाप से बचे रहना नहीं, यह होता है कि कहीं पकड़ी न जायें।

आॅथेलो : यह तुम कहते हो ?

इआगो : उसने अपने पिता को धोखा देकर आपसे विवाह किया। और जब वह आपके रंग से, आपके रूप से डरती हुई दिखाई दी उस समय उसने आपसे अत्यंत प्रेम किया।

आॅथेलो : सच ! वह यही कहती थी।

इआगो : तो क्या आप इसका स्वाभाविक अंत भी नहीं निकाल सकते ? इतनी कम उम्र में तो उसने अपने पिता की आँखों में धूल झोंक दी कि वह अंत तक इसे जादू ही समझता रहा। मैं क्या करूँ, आपके प्रति मेरा स्नेह सब कहलवाये दे रहा है !

आॅ॰लो : मैं सदा-सदा के लिये तुम्हारा आभारी रहूँगा।

इआगो : मुझे लगता है कि मेरी बात ने आपको गड़बड़ में डाल दिया है।

आँथेलो : बिलकुल नहीं, रत्ती भर भी नहीं।

इआगो : मुझे डर है कि असर हो गया है। मुझे आशा है कि जो भी मैंने कहा है उसे आप मेरे प्रेम का ही परिणाम समझेंगे। आप विचलित हो गये हैं। नहीं-नहीं, आप मेरी बात पर इतना ध्यान न दें, इतनी गंभीरता से न लें उसे। यह तो केवल संदेह हैं। इन्हें किसी प्रकार से तथ्य समझ कर ऐसा महत्त्व न दें।

आँथेलो : हाँ ! मैं ऐसा नहीं कर रहा।

इआगो : प्रभु ! यदि आप ऐसा करेंगे तो मेरी जीभ से निकली बातों का इतना बुरा परिणाम निकलेगा कि जिसकी मैंने आशा भी नहीं की थी। कैसियो मेरा सम्माननीय, योग्य और प्रिय मित्र है। मेरे स्वामी ! आप पर जाने क्या प्रभाव पड़ गया है।

आँथेलो : नहीं, मुझ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। मैं तो डैसडेमोना को अच्छी और ईमानदार के अतिरिक्त और कुछ नहीं मानता।

इआगो : वह ऐसी सदैव रहें ! और आप भी सदैव यही सोचते रहें।

आँथेलो : और फिर भी मैं सोचता हूँ कि प्रकृति अपने स्वाभाविक पथ को छोड़कर किस प्रकार····

इआगो : हाँ, यही तो असली बात है। अब स्पष्ट कह दूं। अपना स्वाभाविक सहज प्रकृति छोड़ सकी वह कि उसने अपनी ही जाति, देश, और वर्ण के, उन समस्त गुणों से युक्त जिनके प्रति कि उसका आकर्षण था—कुलीन पुरुषों का त्याग कर दिया। धिक्कार है ! और यही एक अत्यंत अप्राकृतिक, अनहोनी-सी अस्वाभाविक बात दिखाई देती है। किंतु क्षमा करें, मेरा कथन तो एक सर्वसाधारण के लिये है और डैसडेमोना के प्रति केन्द्रित

नहीं है। यद्यपि मुझे अशंका है कि उसका रुख, अपनी बुद्धि में स्थिरता पाने पर, बदला, और उसने अपने देशवासियों से आप की तुलना की और संम्भवतः इस विवाह पर खेद हुआ, पश्चात्ताप ही हुआ।

ऑथेलो : बिदा ! बिदा ! अगर कुछ और देखो तो मुझे बताना। अपनी स्त्री से कहना कि हर बात को ग़ौर से देखती रहे। अब मुझे छोड़ जाओ।

इआगो : मेरे स्वामी ! मुझे आज्ञा दें।

[**प्रस्थान**]

ऑथेलो : आह मैंने विवाह ही क्यों किया ! यह ईमानदार आदमी और भी, निश्चय से, बहुत कुछ जानता है, जो यह बतलाता नहीं।

इआगो : (**लौटकर**) स्वामी ! मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप इस विषय को यहीं रोक दें और खोज-बीन न करें, अभी रुकें और देखें कि क्या-क्या होता है ? इसमें शक नहीं कि कैसियो को उसका पद फिर देना चाहिये क्योंकि वह उसके योग्य हैं, फिर भी कुछ दिन के लिये अभी इस नियुक्ति को और स्थगित कर देना ही उचित होगा। इसी से आपको पता चल जायेगा कि कहीं वह आपकी पत्नी को ही तो अपनी नियुक्ति का साधन नहीं समझता। आप इस पर भी ध्यान दें कि कहीं डैसडेमोना कैसियो की नियुक्ति के लिये बहुत ज़्यादा ज़ोर तो नहीं देतीं। इसी से सारा मामला स्पष्ट हो जायेगा। इस दौरान में मुझे डर है और मुझे डरने के कारण भी हैं, क्योंकि जहाँ तक मैं समझता हूँ, यह सब व्यर्थ का संदेह ही प्रमाणित होगा। डैसडेमोना पवित्र हैं। यही मेरी प्रार्थना है।

ऑथेलो : तुम इस बात से मत डरो कि मै आत्मसंयम खो बैठूंगा।

इआगो : तब फिर मैं चलूं।

[**प्रस्थान**]

ऑंथेलो : यह व्यक्ति बहुत ही ईमानदार है और मनुष्य-चरित्र की गहराइयों को जानता है। यदि मैं उसे दुश्चरित्र पाता हूँ तो निश्चय ही उससे संबंध विच्छेद कर लूँगा और यद्यपि इसमें मेरा हृदय विदीर्ण हो जायेगा, मैं उसे जीवन के क्षेत्र में जुटने के लिये अकेला छोड़ दूँगा। संभवतः मैं काला ही नहीं, वे गुण भी नहीं जानता जिनमे यह सुंदरियाँ प्रभावित होती हैं और फिर मेरी उम्र भी तो ढलान पर आ गई है। पर फिर भी ये सब मामूली बातें हैं। जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं तो उसे खो ही चुका हूँ। मुझे धोखा दिया गया है और मुझे तो उससे घृणा करके ही सांत्वना मिल सकती है। मैं एक मेंढक बनकर अंधेरे और गंदगी में रहना पसंद करूँगा न कि ऐसी स्त्री के साथ जो अन्यों से प्रेम करती है। और यह बड़े लोगों के साथ कितना बड़ा अभिशाप है कि छोटे लोगों की भाँति वे पीड़ा और दुखों से मुक्त नहीं रहते। यह भाग्य तो मृत्यु की भाँति अवश्यम्भावी है; मेरी स्त्री पर पुरुष से प्रेम करे। यह लो! वह फिर आ रही है।

[डेसडेमोना और इमीलिया का प्रवेश]

यदि यह विश्वासघातिनी है तब ईश्वर ने नारी को अपनी आकृति में निर्माण करके अपना अपमान ही किया है। मैं इस पर विश्वास नहीं करता।

डेसडेमोना : ऑंथेलो! तुम्हारे आमंत्रित कुलीन द्वीपवासी प्रतीक्षा कर रहे हैं। भोजन तैयार है।

ऑंथेलो : उफ़! मुझसे भूल हो गई।

डेसडेमोना : कैसी बात कर रहे हो? क्या तबियत ठीक नहीं है?

ऑंथेलो : मेरे सिर में दर्द हो रहा है।

डैसडेमोना : जागने के कारण ही हुआ है। अभी ठीक हो जायेगा। लाओ मैं तुम्हारे सिर पर कपड़ा कस कर बाँध दूं, घंटे भर में चला जायेगा।

ऑथेलो : नहीं, तुम्हारा रूमाल तो बहुत छोटा है।

[**ऑथेलो रूमाल को हटाता है। रूमाल गिर जाता है।**]

रहने दो। मैं चलता हूँ तुम्हारे साथ।

डैसडेमोना : हाय ! तुम्हारी तबियत को न जाने क्या हो गया !

[**ऑथेलो और डैसडेमोना का प्रस्थान**]

इमीलिया : मुझे इसी का हर्ष है कि मुझे यह रूमाल मिल गया। डैसडेमोना को यह ऑथेलो का पहला प्रेमोपहार है। मेरे पति ने बहुधा मुझसे इसे चुराने को कहा है किंतु वह इसे इतना प्रेम करती है कि कभी नहीं छोड़ती। ऑथेलो ने भी तो उसे इसे ठीक से रखने को कह रखा है। तभी तो वह इसे इतना सहेजे रहती है कि कभी इसे चूमती है, कभी इससे बातें करती है। मैं इसके रंग-रूप की नकल करवा लूंगी और इआगो को दे दूंगी। पता नहीं वह इसका क्या करेंगे। जो हो, वे ख़ुश होंगे, मैं तो इसीलिये यह काम कर रही हूँ।

[**इआगो का प्रवेश**]

इआगो : क्यों ? यहाँ अकेली क्या कर रही हो ?

इमीलिया : अब मत डाँटना। मेरे पास तुम्हारे लिये एक चीज़ है।

इआगो : मेरे लिये एक चीज ? होगी कोई ऐसी वैसी···

इमीलिया : हाय !

इआगो : कैसी मूर्ख पत्नी है !

इमीलिया : बस यही ! लो, इस रूमाल के बदले में मुझे क्या दोगे ?

इआगो : कैसा रूमाल ?

इमीलिया : कैसा रूमाल ! वही जो ऑथेलो ने डैसडेमोना को पहले-

पहल दिया था, वही जो तुम मुझसे अक्सर चुरा लेने को कहते थे।

इआगो : क्या तुमने उसे चुरा लिया है ?

इमीलिया : नहीं, उससे अनजाने ही यह गिर गया था और किस्मत से क्योंकि मैं यहाँ थी, मैंने इसे उठा लिया। यह देखो, यह रहा।

इआगो : शाबाश ! लाओ, मुझे दो !

इमीलिया : तुम इसका क्या करोगे कि मुझसे बार-बार इसको लाने के लिये कहा करते थे ?

इआगो : (छीनकर) तुम्हें उस सबसे क्या ?

इमीलिया : यदि तुम्हारे लिये इसका कोई विशेष महत्त्व नहीं है तो मुझे लौटा दो। अगर उसे नहीं मिलेगा तो सचमुच पागल हो जायेगी।

इआगो : यह न कहना कि तुम्हें इसके बारे में कुछ भी पता है। मुझे इससे बहुत काम है। तुम जाओ, मुझे सोचने दो।

[**इमीलिया का प्रस्थान**]

मैं इस रूमाल को कैसियो के निवासस्थान में छोड़ आऊँगा और उसे यह मिलेगा। ईर्ष्यालु प्रकृति के लोगों के लिये बहुत ही साधारण बातें भी शास्त्रों की भाँति प्रमाण बन जाती हैं। इस रूमाल का गहरा प्रभाव पड़ सकता है। मेरे विषैले तर्कों से ऑथेलो फुंक ही रहा है। भयानक विचार तो वास्तव में विष की भाँति ही होते हैं। पहले तो पता नहीं चलता कि उनमें क्या भयानकता है किन्तु कुछ ही समय के बाद जब वे रक्त पर अपना प्रभाव डालते हैं तब गंधक की भाँति सुलग उठते हैं। यह लो। वह आ ही रहा है।

[**ऑथेलो का प्रवेश**]

इआगो : कोई भी निद्रा के वशीभूत करने वाली औषधि, कोई भी विस्मृत करने वाली वस्तु अब मुझे कलवाली नींद वापिस नहीं देगी।

ऑथेलो : कितना विश्वासघात ! कितना धोखा !

इआगोः : क्या है सेनानायक ! सदा ही अपने विचार में उसी बात को क्यों रखते हो ?

ऑथेलो : चले जाओ ! तुम्हीं ने मुझे इस यातना में डाला है। धोखा खाते रहना, उसको जान लेने की तुलना में कहीं अधिक अच्छा है।

इआगो : क्यों स्वामी ! क्या हुआ !

ऑथेलो : मुझे क्या पता चलता कि वह गुप्त रूप से अपनी वासना को कैसे शांत करती है ? न मैं कभी ऐसी बात को स्वप्न में भी सोच सकता था। मेरी तो इससे कोई हानि नहीं होती है ! मुझे अच्छी नींद आती, मैं प्रसन्न और मस्त रहता। मैंने तो कैसियो को उसका चुंबन लेते नहीं देखा था ! यदि लुटने वाले को पता ही न चले कि वह लुट रहा है तो उसका न जानना ही अच्छा है और इस तरह वह लुटता ही नहीं।

इआगो : मुझे यह सुनकर वेदना होती है।

ऑथेलो : किंतु अब सदा के लिये मेरी शांति चली गई है। चला गया है संतोष ! वे सेनाएँ, वे महायुद्ध जो महत्त्वाकांक्षा को अच्छाई में बदलते हैं सब मेरे लिये बिदा हो गये हैं। वे हिनहिनाते अश्व, तुरही की तीखी ध्वनि, प्रतिध्वनित भेरी-निनाद, और कर्णभेदी वाद्यस्वर, राजसी पताका, और युद्ध के वैभव और आवेश, सब मेरे लिये अपरिचित हो गये हैं। ओ भीषण तोप ! तू जो अपने कर्कश कण्ठ से अमर प्रेम का भीषण गर्जन करती थी ! बिदा ! ऑथेलो अब योद्धा नहीं रहा !

इआगो : स्वामी ! क्या यह संभव है ?

ऑथेलो : ओ धूर्त्त ! पहले तुझे प्रमाण देना होगा कि मेरी स्त्री सचमुच विश्वासघातिनी है। मुझे पक्का प्रमाण चाहिये। वर्ना मैं कसम से

कहता हूँ कि तेरे लिये कुत्ता होना बेहतर होता बनिस्बत इसके कि तू मेरे एक बार भड़क कर उठ खड़े होने वाले गुस्से का नतीजा झेले ।

इआगो : क्या बात यहाँ तक पहुँच गई ?

ऑथेलो : या तो मुझे दिखा या मुझे प्रमाण दे कि फिर शक की कोई गुंजायश नहीं रहे । अन्यथा देख ! तेरा जीवन ही उत्तर देगा ।

इआगो : मेरे वीर स्वामी !

ऑथेलो : यदि तू उसके पातिव्रत पर लांछन लगाता है और मुझे पीड़ित करता है, तो यह न समझ कि तू दण्डहीन ही रह जायेगा । यदि तेरा अभियोग असत्य है तो तू भले ही भयानक से भयानक काम कर कि आकाश रो उठे और धरती आश्चर्य्य से भर जाये, किंतु इससे बढ़ कर पाप तू संसार में नहीं कर सकता कि उसके नाम पर कलंक लगाये ।

इआगो : हे भगवान ! मुझे क्षमा कर ! क्या आप में न्यायशीलता नहीं, या सत्-असत् विवेक नहीं रहा । ईश्वर आपकी सहायता करे । मुझे नौकरी से छुट्टी दें । **(स्वयं से)** ओ मूर्ख ! ईमानदारी, प्रेम और स्वामि-भक्ति से प्रेरित होकर तू क्या कर बैठा कि आज तेरे गुण ही पाप बन गये । ओ दुरित संसार ! देख ! ईमानदारी और सचाई में कितनी हानि है । आपने मुझे यह शिक्षा दी है, इसके लिये मैं आप का आभारी हूँ । अब मैं कोई मित्र ही नहीं बनाऊँगा क्योंकि प्रेम ही इतनी हानि का कारण बनता है ।

[जाने को होता है ।]

ऑथेलो : नहीं जाओ मत । तुम्हें ईमानदार होना चाहिये ।

इआगो : नहीं, मुझे बुद्धिमान होना चाहिये क्योंकि ईमानदारी ही बेवक़ूफी है । वह जिसके कार्य्य करती है उसी को खो देती है ।

ऑथेलो : जो भी हो, मैं अभी तक अपनी पत्नी को ईमानदार समझता हूँ और फिर भी मुझे संदेह होता है। मुझे लगता है तुम ठीक हो, परंतु लगता है, नहीं, ऐसा नहीं है। मुझे प्रमाण तो मिलना चाहिये। पवित्र चंद्रमा के समान उसका उज्ज्वल मुख अब मेरे मुख की भाँति ही काला हो गया है। यदि संसार में प्रतिहिंसा को पूर्ण करने का कोई साधन है तो वह दण्डहीना नहीं रहेगी। किंतु मैं अनिश्चय से मुक्त होना चाहता हूँ।

इआगो : मुझे लगता है स्वामी! आपको आवेश ने दबा लिया है। मुझे दुख है कि मैंने आपको इस ओर से सचेत ही क्यों किया। किंतु क्या आप सचमुच इस विषय में संतुष्ट होना चाहते हैं?

ऑथेलो : निश्चय।

इआगो : किंतु स्वामी! मैं आपको कैसे संतुष्ट करूँ? यह तो असंभव है। आप देखिये न? न वे बकरों की भाँति मुखर हैं, न बंदरों की भाँति चपल, न भेड़ियों की भाँति ही कि मैं उन्हें दिखा देता। किंतु यदि अभियोग और घटनात्मक साक्ष्य ही अलम् है जिनसे सत्य का द्वार खुलता है और उन्हीं से आपका संतोष हो जाये तो मैं प्रस्तुत हूँ।

ऑथेलो : मुझे इसका पक्का प्रमाण दो कि वह विश्वासघातिनी है।

इआगो : मैं यह काम पसंद नहीं करता, किंतु क्योंकि मैं इस विषय में इतना फँस गया हूँ, और वह भी प्रेम और ईमानदारी के कारण, तो अब यही सही। मैं अभी कुछ दिन हुए कैसियो के निकट सोया था और डाढ़ के दर्द के कारण नींद नहीं आ पायी थी। बहुत-से लोग इतने संयमहीन होते हैं कि वे सोते में बड़बड़ाते हैं और अपनी भीतरी बात कह जाते हैं। ऐसा ही कैसियो भी है। मैंने उसे स्वप्न में कहते सुना : प्रिये डैसडेमोना! हमें चौकस रहना चाहिये और

इस अपने प्रेम को छिपाये रखना चाहिये। और श्रीमान् उसके बाद उसने नींद में ही मेरा हाथ पकड़ कर दबाया और बोला: आह सुन्दरी ! और तब उसने ऐसे चुंबनों की झड़ी लगा दी और साथ ही बोला : ओ दुर्भाग्य ! तू ने इसे उस मूर के पल्ले बाँध दिया !

ऑथेलो : भयानक ! विकराल !

इआगो : किंतु यह तो एक स्वप्नमात्र था !

ऑथेलो : किंतु कोई ऐसी घटना अवश्य हुई होगी ! यदि यह स्वप्नमात्र ही है तो भी इससे पाप का कितना संदेह होता है !

इआगो : यह तो स्वप्न ही है किंतु है तो संदेहजनक। जहाँ प्रमाण नहीं है वहाँ यही तो सहायक होता है।

ऑथेलो : मैं उस स्त्री के टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा।

इआगो : नहीं, बुद्धि से काम लीजिये ! हमने अभी उसे कुछ भी बुरा करते नहीं देखा। हो सकता है वह सच्चरित्रा ही हो। किंतु यह बतायें, क्या आपने अपनी पत्नी के हाथ में कभी-कभी एक ऐसा रूमाल नहीं देखा है जिस पर रंगों से स्ट्रॉबेरी फलों की तस्वीरें-सी बनी हैं ?

ऑथेलो : वही तो उसको मैंने प्रथम प्रेमोपहार के रूप में दिया था।

इआगो : मुझे पता नहीं था, किंतु मैं निश्चय से कह सकता हूँ कि मैंने कैसियो को उससे अपनी दाढ़ी पोंछते देखा था।

ऑथेलो : यदि यह सत्य है ······

इआगो : वही रूमाल था, या कोई और, पर अगर वह डैसडेमोना का ही है तो वह उसके विरुद्ध एक प्रमाण ही है।

ऑथेलो : काश, उस गुलाम कैसियो की ४०,००० ज़िंदगियाँ होतीं ! एक ज़िंदगी से मेरे बदले की आग कैसे ठंडी हो सकेगी ! अब मुझे पूरी बात का विश्वास हुआ। देखो इआगो ! अब मैं अपने सारे प्रेम को

विलीन किये देता हूँ। अब वह लुप्त हो रहा है और उसका स्थान नरक से निकली हुई काले रंग की प्रतिहिंसा ले रही है। अरे प्रेम! मेरे हृदय के सिंहासन से उतर कर गहरी घृणा को स्थान दे दे। विषाक्त विचारों के भार से ओ मेरे वक्ष! भर जा! फूल उठ! सर्प की-सी विषैली जिह्वा! लपलपा उठ!

इआगो : शांत रहें।

ऑथेलो : रक्त चाहिये इआगो! मुझे लहू चाहिये!!

इआगो : शांत भी रहिये! संभव है आपका विचार बदल जाये।

ऑथेलो : नहीं इआगो! कभी नहीं। जिस प्रकार काले सागर की बर्फीली धारा कोई भाटा नहीं जानती और निरंतर मारमोरा समुद्र और डार्डेनिलीज़ की ओर बहती चली जाती है, इसी प्रकार मेरे खूनी विचार भी विकराल गति से पीछे मुड़ कर नहीं देखेंगे और न उन्हें कभी प्रेम का भाटा ही कम करेगा, जब तक कि उचित महान् प्रतिहिंसा ही उन्हें निगल नहीं लेगी। आकाश के ज्वलंत पिण्डों की शपथ! (**झुक कर**) मैं एक पवित्र प्रतिज्ञा के लिये उचित शपथ ग्रहण करता हूँ कि मैं अपने वचनों को अंत तक निबाहूँगा।

इआगो : अभी मत उठें। क्योंकि मैं भी आपके साथ ही शपथ ग्रहण करूँगा। (**झुक कर**) ओ आकाश के ज्वलंत पिण्डो! ओ सर्वव्यापी तत्त्वो! साक्षी बनो कि मैं अपने सारे विवेक और शारीरिक शक्ति से इस ऑथेलो की सेवा करूँगा जिसके साथ अन्याय हुआ है। वह मुझे आज्ञा दे और कैसा भी भयानक, खूनी ही काम क्यों न हो, उसकी आज्ञा का पालन करना ही मेरी न्याय की ओर खड़ी होने वाली चेतना का पर्य्याय बने।

[**दोनों खड़े होते हैं।**]

ऑथेलो : तुमने मेरे साथ प्रतिज्ञा की है, मैं केवल धन्यवाद ही नहीं देता, किंतु भविष्य में इसका उचित पुरस्कार भी दूँगा। अभी से कार्य्य प्रारम्भ करो। तीन दिन में सूचना दो कि कैसियो जीवित नहीं रहा।

इआगो : यद्यपि कैसियो मेरा मित्र है, फिर भी आपके लिये मैं यह भी करने को तैयार हूँ। किंतु डैसडेमोना को जीवित रहने दें।

ऑथेलो : मरने दो उसे। तुम जाओ! मुझे सोचने दो कि किस आसान तरीके से मैं इस खूबसूरत शैतान को ख़त्म कर सकूँ। आयंदा तुम मेरे लेफ्टिनेंट हो।

इआगो : मैं तो सदा ही आपका हूँ।

[प्रस्थान]

दृश्य ४

[दुर्ग के सामने]

[डैसडेमोना, इमीलिया और विदूषक का प्रवेश]

डैसडेमोना : क्यों जी तुम्हें पता है कैसियो कहाँ है ?[1]

विदूषक : क्या जाने कहाँ है?

१. यहां मूल में Lies शब्द का प्रयोग हुआ है। Lies के दो अर्थ हैं—कहाँ पड़ा है अर्थात् कहाँ है और दूसरा अर्थ है—कहाँ झूठ बोल रहा है, क्योंकि Lie के दो अर्थ हैं। डैसडेमोना Lies का अर्थ लेती है—कहाँ है और विदूषक अर्थ लेता है—कहाँ झूठ बोल रहा है। इससे हास्य उत्पन्न होता है। यह कोई उच्चकोटि का हास्य नहीं है। किंतु हमें याद रखना चाहिये कि शेक्सपियर के नाटक खेले जाते थे और दर्शकों में सभी दर्जे के लोग आते थे। उन्हें भी उसे संतुष्ट करना पड़ता था। अनुवाद में हम हिंदी में ऐसा शब्द नहीं ढूंढ सके जिसका Lies का-सा प्रयोग हो सके और दोनों अर्थ एक साथ निकल सकें। इसलिये हमने परिवर्त्तन किया है।

डैसडेमोना : क्यों ?

विदूषक : वह एक योद्धा है और लड़ाकू का ग़लत पता देना मानों मौत को बुलाना है।

डैसडेमोना : चलो हटो। कहाँ रहता है वह !

विदूषक : इसे बताने का अर्थ है मैं झूँठ बोलूँ।

डैसडेमोना : इसका मतलब ?

विदूषक : मैं नहीं जानता वह कहाँ रहता है और ग़लत बता दूं तो वह झूँठ ही है।

डैसडेमोना : तुम उसके बारे में पूछताछ कर पता चला सकते हो ?

विदूषक : मैं उसके लिये सारे जहान से सवाल कर सकता हूँ और इस तरीके के सवालों से आपको जवाब देने लायक बन सकता हूँ।

डैसडेमोना : तो उसकी तलाश करो। उसे यहाँ आने की आज्ञा दो। उससे कहना, मैंने उसकी बात अपने स्वामी तक पहुँचा दी है और आशा करती हूँ कि सब ठीक ही होगा।

विदूषक : यह काम तो इंसान की अक्ल के दायरे के भीतर का ही है। और इसलिये मैं इसे करने की कोशिश कर सकता हूँ।

[प्रस्थान]

डैसडेमोना : न जाने मेरा रूमाल कहाँ खो गया, इमीलिया ?

इमीलिया : मै नहीं जानती श्रीमती।

डैसडेमोना : मुहरों से भरा मेरा बटुआ खो जाता, तो भी, सच कहती हूँ, मुझे इतना अफ़सोस न होता जितना उसके खो जाने से हुआ है। किंतु मेरे पति वीर और उदात्त भावनाओं से ओतप्रोत हैं। उनमें क्षुद्र ईर्ष्या नहीं है। अन्यथा उनमें संदेह और ईर्ष्या जगाने को तो यही बहुत है।

इमीलिया : क्या वे ईर्ष्यालु नहीं ?

डैसडेमोना : कौन ? वे ? मैं समझती हूँ जहाँ उनका जन्म हुआ था प्रचण्ड सूर्य ने ऐसे विकारों का पहले ही शोषण कर लिया था !

इमीलिया : लीजिये, वे आ रहे हैं।

डैसडेमोना : मैं अब उन्हें तब तक नहीं छोड़ूंगी जब तक वे कैसियो को नहीं बुला लेते।

[**ऑथेलो का प्रवेश**]

प्रणाम स्वामी ! सानंद तो हैं ?

ऑथेलो : आह श्रीमती ! (**स्वगत**) ढोंग करना कितना कठिन है (**प्रगट**) कैसी हो डैसडेमोना ! अच्छी तो हो !

डैसडेमोना : मैं तो बिल्कुल ठीक हूँ मेरे दयालु स्वामी !

ऑथेलो : मुझे अपना हाथ दो प्रिये। अरे ! यह इतना पसीजा हुआ क्यों है ?

डैसडेमोना : इसे न दीर्घ आयु ने छुआ है, न किसी दुर्भाग्य ने ही।

ऑथेलो : तुम्हारे हाथ का पसीजापन बताता है कि तुम्हारा हृदय भी बहुत शीघ्र द्रवित हो जाता है। कितना गर्म है। पसीजा हुआ। यह हाथ बताता है कि तुम्हें एकांत में व्रत, उपवास, तप और भक्ति-पूर्ण अ य कार्य्यों में समय बिताना चाहिये। क्योंकि मुझे इसमें एक ऐसी तरुण वासनामय आत्मा की झलक मिल रही है जो शीघ्र ही लोभ के वशीभूत होकर जाल में फँस सकती है। सचमुच कितना दयालु और स्निग्ध हृदय है।

डैसडेमोना : अब जो चाहे कह लीजिये पर यही वह हाथ है जिसने मेरा हृदय आपको दिया था।

ऑथेलो : कैसा दयालु हाथ है। पहले समय में जब हाथ मिलते थे तब हृदय भी मिल जाते थे किंतु आजकल के विवाहों में हृदय नहीं मिलते केवल हाथ ही मिलते हैं।

डैसडेमोना : मैं इस विषय में क्या कह सकती हूँ। चलिये भी। आपको अपना वचन तो याद है ?

ऑथेलो : कौन-सा वचन प्रियतमे !

डैसडेमोना : मैंने आपसे बातें करने कैसियो को बुलवाया है।

ऑथेलो : मेरी आँख दुख रही है। बड़ी तकलीफ़ है। तनिक पोंछने को अपना रूमाल तो देना।

डैसडेमोना : यह लो स्वामी।

ऑथेलो : वह जो मैंने दिया था तुम्हें।

डैसडेमोना : वह तो मेरे पास नहीं रहा।

ऑथेलो : नहीं है ?

डैसडेमोना : हाँ स्वामी ! नहीं है।

ऑथेलो : यह तो एक अपराध है। वह रूमाल मेरी माता को एक मिस्री स्त्री ने दिया था जो कि जादूगर थी और मनुष्य की आंतरिक भावनाओं को पढ़ लेती थी। उस स्त्री ने मेरी माता से कहा था कि जब तक वह उसे अपने पास रखेगी, वह आकर्षक बनी रहेगी और मेरे पिता को अपने वश में ऐसे कर लेगी कि वह उसे सदैव प्रेम करेगा। किंतु यदि वह उसे खो देगी या किसी और को भेंट दे देगी तो मेरा पिता उससे घृणा करने लगेगा और प्रेम और वासना की परितृप्ति के लिये और ही आधार ढूंढने लगेगा। मरते समय माँ ने इसे मुझे दिया था और कहा था कि जब कभी भी मैं विवाह करूँ इसे अपनी स्त्री को भेट में दूँ। यही मैंने किया और इसीलिये तुम उसे अपनी आँखों का तारा समझ कर प्यार करो। वह खो जायेगा तो तुम्हारी हानि होगी और ऐसी कि कोई उसका मुकाबला नहीं कर सकेगा।

डैसडेमोना : क्या ऐसा हो सकता है ?

ऑथेलो : यह बिल्कुल सत्य है। वह एक जादुई रूमाल है। एक ऐसी पैगम्बर थी जिसने सूर्य्य के दो सौ भ्रमण देखे थे (अर्थात् २०० बरस की थी) उसने तो उसे सिया था और वह भी कब ? तब जब कि उस पर ईश्वरीय आवेश छाया था। हाल-सा आया हुआ था। वे कीड़े जिन्होंने इसका रेशम उगला था, वे भी पवित्र थे। और गंधादिक द्रव्य लगाकर सुरक्षित किये हुए शवों—कुमारियों के शवों—के हृदय-प्रदेश में भिगो कर इसे रँगा गया था।

डैसडेमोना : क्या यह सब सच है ?

ऑथेलो : बिल्कुल ! तभी कहता हूँ उसके बारे में सदैव ध्यान रखना।

डैसडेमोना : अच्छा होता ऐसा रूमाल मुझे मिलता ही नहीं।

ऑथेलो : हैं ? क्या कहती हो ?

डैसडेमोना : इतने ज़ोर से और डाँट कर क्यों बोल रहे हो ?

ऑथेलो : वह खो गया ! वह नहीं है ? बोलो ! क्या वैसे ही इधर-उधर हो गया है ?

डैसडेमोना : भगवान रक्षा करें !

ऑथेलो : यह क्या कहा ?

डैसडेमोना : खोया तो नहीं है, लेकिन खो जाये तो ?

ऑथेलो : कैसे ? कहाँ ?

डैसडेमोना : मैं कहती हूँ खोया नहीं है।

ऑथेलो : तो लाओ। मुझे ला के दिखाओ।

डैसडेमोना : दिखा दूंगी, पर इस वक्त नहीं। मैं जानती हूँ यह मेरी प्रार्थना को टालने की तरकीब है। मैं अनुभव करती हूँ कैसियो को फिर बुला लिया जाये।

ऑथेलो : पहले रूमाल लाओ। मेरे दिमाग़ में शक पैदा हो रहे हैं।

डैसडेमोना : हाँ-हाँ। ठीक है। मैं कहती हूँ तुम्हें कैसियो से अधिक

उपयुक्त कोई व्यक्ति नही मिलेगा।

ऑथेलो : रूमाल !

डैसडेमोना : मैं कहती हूँ कैसियो की बात करो न ?

ऑथेलो : रूमाल !

डैसडेमोना : वह व्यक्ति जो सदैव तुम्हारे प्रेम पर निर्भर रहा और जिसने तुम्हारे साथ विपत्तियों का सामना किया ···

ऑथेलो : रूमाल !

डैसडेमोना : सचमुच ! दोषी तुम्हीं हो !

ऑथेलो : लानत है !

[**प्रस्थान**]

इमोलिया : क्या ये ईर्ष्यालु नहीं हैं ?

डैसडेमोना : ऐसा तो मैंने कभी नहीं देखा। निश्चय ही इस रूमाल में कुछ अद्भुत बात अवश्य है। मुझे उसके खो जाने का अत्यन्त खेद है।

इमोलिया : एक-दो बरस में मनुष्य की वास्तव प्रकृति का परिचय नहीं हो जाता। सारे पुरुष पेट हैं और सारी स्त्रियाँ भोजन हैं। वे बड़ी भूख से हमें खाते हैं और जब पेट भर जाता है तब हमें छोड़ देते हैं। वह लो। मेरे पति और कैसियो आ रहे हैं।

[**कैसियो और इआगो का प्रवेश**]

इआगो : और कोई तरीका नहीं है। बस ये ही कर सकती है। लो तुम्हारा सौभाग्य ! जाओ प्रार्थना करो।

डैसडेमोना : कैसे हो वीर कैसियो ? क्या समाचार है ?

कैसियो : देवी ! मेरी वही प्रार्थना है। मैं अनुनय करता हूँ कि आपकी सशक्त सहायता से मैं फिर स्वामी का प्रेम और विश्वास प्राप्त कर सकूँ। मैं उनका हृदय से सम्मान करता हूँ। मैं तो बुरे से बुरे

परिणाम को भी शीघ्र जानना चाहता हूँ। यदि मेरा अपराध इतना बड़ा है कि न मेरी अतीत की सेवाएँ काम आती हैं, न वर्त्तमान का दुर्भाग्य ही, न भविष्य में मर्यादा से रहने की मेरी प्रतिज्ञा ही, न मेरा पश्चात्ताप ही मुझे उनके प्रेम का पात्र फिर से बना सकता है, तो कम से कम इतना अधिकार तो मैं चाहता ही हूँ कि इस विषय में जो भी हो वह तो मुझे बता दिया जाये! उससे यह तो होगा कि मैं संतुष्ट हो जाऊँगा और परिस्थितियों के सामने समर्पण कर दूँगा, चाहे भाग्य ने मेरे लिये कैसी ही भिक्षा क्यों न आयोजित कर रखी हो!

डेसडेमोना : हाय वीर कैसियो! मैंने स्वामी से प्रार्थना की किन्तु उन पर प्रभाव नहीं पड़ा। वे वैसे नहीं हैं जैसे पहले थे। यदि अपनी बदलती प्रकृति के अनुरूप ही उनकी आकृति में भी परिवर्त्तन आ गया होता तो मैं उन्हें पहचान भी नहीं पाती। तुम्हारी ओर से मैं जो कुछ कह सकती थी वह सब कह चुकी हूँ और बार-बार कहने से वे क्रुद्ध ही हुए हैं। इसीलिये तुम्हें कुछ दिन धैर्य्य से काम लेना चाहिये। मैं जो कुछ कर सकती हूँ अवश्य करूँगी। तुम्हारे लिये इतना करूँगी जितना अपने लिये भी नहीं करती। बस अब यही समझ लो।

इआगो : क्या स्वामी आज अत्यन्त क्रुद्ध है?

इमीलिया : वे यहाँ से बहुत ही अस्त-व्यस्त-से असन्तुष्ट-से गये हैं।

इआगो : क्या वे भी कभी अपने ऊपर से अधिकार खो सकते हैं? मैं उनके निकट खड़ा रहा हूँ और उनके समीप ही तोपों के गोले सेना पर बरसते रहे हैं, उन्होंने अपने भाई पर ही गोला चलाया है, किंतु फिर भी मैंने उन्हें विचलित नहीं देखा। वे सदैव स्थिरचेतस थे। उनके इतने क्रुद्ध होने का कोई कारण अवश्य रहा होगा। मैं

जाता हूँ उनके पास ।

डैसडेमोना : मैं कहती हूँ ज़रूर जाओ ।

[**इआगो का प्रस्थान**]

अवश्य ही राज्य-संबंधी कोई बात है। या तो वेनिस से कोई संवाद आया है या कोई गुप्त षड्यंत्र है जो हाल में ही साइप्रस में पकड़ा गया है जिसने उनके दृढ़ चित्त को विचलित कर दिया है। महत्त्वपूर्ण घटनाओं से विचलित बुद्धि होकर मनुष्य साधारण विषयों में झगड़ पड़ते हैं, जो किसी अन्य अवसर पर उन्हें क्रुद्ध नहीं कर पाते। उन पर तो वास्तव में उन्हें असली क्रोध होता भी नहीं। देखो न ? हमारी छोटी उंगली में भी दर्द होता है तो सारे शरीर को वेदना की अनुभूति होने लगती है। नहीं। हमें मनुष्यों को अतिमानव नहीं समझना चाहिये, न उनसे ऐसे व्यवहार की आशा ही करनी चाहिये जैसा कि दूल्हा दुलहिन से करता है। मुझे ही दण्ड मिलना चाहिये। इमीलिया! मैं ही उनको अनावश्यक रूप से उत्तेजित करने वाली हूँ क्योंकि मैं उन्हें कठोर कह रही हूँ किंतु अब मैं देखती हूँ मैंने उन पर अनजाने ही मिथ्या दोषारोपण किया है और वे निर्दोष हैं।

इमीलिया : ईश्वर से प्रार्थना करो कि किसी राज्य-विषयक बात से ही वे ऐसे हैं, न कि तुम पर ईर्ष्या या सन्देह के कारण ।

डैसडेमोना : कैसा बुरा दिन है। मैंने तो उन्हें कभी भी क्रुद्ध नहीं किया।

इमीलिया : किंतु ईर्ष्यालु व्यक्ति तो ऐसे उत्तर से सन्तुष्ट नहीं होते। वे किसी विशेष कारण से तो ईर्ष्या करते नहीं, वे तो ऐसे होते ही हैं क्योंकि होते ही वे ईर्ष्यालु हैं। ईर्ष्या एक राक्षसी है, जो स्वयंजात और स्वयं को खाकर ही जीवित रहती है।

डैसडेमोना : ईश्वर ऑथेलो के मस्तिष्क को इसके प्रवाह से बचाये रखे।

इमीलिया : ऐसा ही हो।

डेसडेमोना : मैं उन्हें देखती हूँ। कैसियो! तुम इधर-उधर घूम लो। यदि मैं उन्हें ठीक पाऊँगी तो फिर तुम्हारी बात चलाऊँगी और जहाँ तक मुझसे हो सकेगा तुम्हारे लिये प्रयत्न करूँगी।

कैसियो : मैं हृदय से आपका आभार स्वीकार करता हूँ देवी।

[डेसडेमोना और इमीलिया का प्रस्थान]

[बियान्का का प्रवेश]

बियान्का : अरे! मेरे दोस्त! क़ैसियो!

कैसियो : तुम घर से दूर क्या कर रही हो? मेरी प्रिये! सुन्दरी बियान्का! अच्छी तो हो! सच प्रिये! मैं तो तुम्हारे ही घर आ रहा था!

बियान्का : और मैं तुम्हारे निवासस्थान की ओर जा रही थी कैसियो! हफ़्ते भर से तुम नहीं आये। सात दिन, सात रातें! उफ़ कितना समय निकाल दिया तुमने? और प्रेमियों के घंटे! घड़ियाल में नहीं बजते ये घंटे, हृदय में बजते हैं! गिनते-गिनते थक गई।

कैसियो : क्षमा करो बियान्का! मुझे मुसीबतों ने परेशान कर दिया है। यह जो मेरी लंबी ग़ैरहाजिरी रही है इसका मुआवज़ा मैं किसी ऐसे वक्त ज़रूर चुका दूँगा जिसमें मुझे ज़रा और आज़ादी होगी। प्रिये बियान्का! तब तक मेरे लिये तुम इस रूमाल की नकल काढ़ देना।

[डेसडेमोना का रूमाल देता है।]

बियान्का : अरे! यह तुम्हें कहाँ मिला कैसियो! यह बात है। तब तो तुम्हारी अनुपस्थिति का कारण है! किसी नयी मित्र से उपहार लेने में लगे रहते हो? यह बात है? समझ गई।

कैसियो : क्या फ़िज़ूल की बातें करती हो! जिस शैतान ने तुम्हारे मुँह

में ऐसे विचार रखे हैं उन्हें उसी पर उगल दो। शायद तुम्हें इसकी जलन है कि इसे मुझे किसी प्रेमिका ने भेंट कर दिया है कि यह यादगार बनी रहे। नहीं बियान्का! ऐसी बात नहीं है।

बियान्का : तो बताओ फिर? यह है किसका?

कैसियो : मैं नहीं जानता प्रिये! मुझे अपने कमरे में पड़ा मिला। इसके ऊपर अच्छी कढ़ाई है। इससे पहले कि इसकी मालकिन इसे वापिस माँग बैठे, मैं चाहता हूँ मेरे पास इसकी एक नकल रह जाये। यह तुम कर दो न? और इस समय चली जाओ।

बियान्का : क्यों तुम अकेले रहोगे?

कैसियो : मैं यहाँ जनरल की सेवा में हूँ और न मेरे लिये यह ठीक ही है, न फ़ायदेमन्द ही कि एक औरत के साथ देखा जाऊँ।

बियान्का : क्यों उसमें क्या बात है?

कैसियो : तुम यह न समझो कि मैं तुम्हें नहीं चाहता।

बियान्का : पर तुम मेरी परवाह नहीं करते। यह भी नहीं कि दस क़दम मुझे पहुँचा ही देते! बताओ न? आज रात को आओगे?

कैसियो : मैं बस थोड़ी दूर ही चल सकता हूँ क्योंकि मुझे फिर जनरल की सेवा में उपस्थित रहना है। मैं शीघ्र ही तुमसे निश्चय मिलूंगा।

बियान्का : अच्छी बात है। मुझे भी परिस्थिति के अनुसार ही चलना होगा।

[प्रस्थान]

चौथा अंक

दृश्य १

[साइप्रस-दुर्ग के सामने। ऑथेलो और इआगो का प्रवेश]

इआगो : क्या सचमुच आप यही सोचते है ?

ऑथेलो : सोचता हूँ इआगो।

इआगो : क्या एकांत में चुंबन करना मात्र ?

ऑथेलो : किंतु अनधिकृत चुंबन।

इआगो : या मित्र के साथ शैय्या पर नग्न होकर घंटे भर या ज़्यादा रहना···उसमें हानि नहीं ?

ऑथेलो : नग्न सहशयन, इआगो ? और उसमें भी हानि नहीं ? यह तो शैतान के सामने भी ढोंग करने के समान है। जो ऐसा भलमनसाहत के लिये भी करते हैं, शैतान उनकी शराफत को ललचाता है, और वे दैव को ललकारते हैं !

इआगो : तब वे कुछ नहीं करते, यह तो मामूली बात हुई किंतु यदि मैं अपनी स्त्री को एक रूमाल दूँ····

ऑथेलो : क्या कहा ?

इआगो : क्यों श्रीमान् ! वह तो उसी का हो गया और जब उसका ही है तो वह फिर जिसे चाहे उसी को दे दे····

ऑथेलो : वह स्वयं अपने सम्मान और पातिव्रत की भी तो रक्षिका है। क्या वह अपने सम्मान के साथ भी ऐसी ढिलाई दिखा सकती है ?

इआगो : उसका सम्मान एक भावनामात्र है जिसे देखा नहीं जा सकता। बहुधा ऐसे भी होते हैं जिनका वास्तव में कोई सम्मान नहीं होता परंतु लोग उनके विषय में कुछ और ही सोचा करते है। लेकिन

जहाँ तक उस रूमाल की बात है ····

ऑथेलो : हे भगवान ! कितना अच्छा होता कि मैं उसे भूल जाता ! तुम फिर याद दिला दी मुझे और फिर मँडराती हुई मुझ पर छा गई जैसे कोई गिद्ध रोगों से भरे किसी दुखी घर पर सबकी मृत्यु की सूचना देता हुआ मँडराने लगता है।

इआगो : क्यों क्या बात है ?

ऑथेलो : अब वह उतना सरल नहीं।

इआगो : यदि मैं कह देता कि मैंने उसे आपकी स्त्री के साथ अनाचार करते देखा है, तो क्या हो जाता ? या उसे ऐसा कहते हुए ही सुन पाता ? संसार में ऐसे धूर्त्त भी हैं जो आपकी हानि कर दें और या तो अपने स्वभाव के कारण या किसी वासनामय स्त्री के कारण ही ऐसा कर बैठें···और फिर अपने पर काबू न रख कर उसकी इधर-उधर चर्चा भी करें···

ऑथेलो : क्या उसने कुछ कहा है ?

इआगो : हाँ स्वामी, कहा है। किंतु आप इसको भी पक्की मान लें कि वह कसम खाकर कह देगा कि उसने कभी कहा ही नहीं।

ऑथेलो : उसने कहा क्या है ?

इआगो : मैं नहीं जानता देव ! कि कैसे कह दूँ उसे !

ऑथेलो : क्या ? क्या ? रूमाल ? स्वीकार किया रूमाल ? यह संभव नहीं कि कैसियो और डैसडेमोना स्वीकार कर लें और दण्ड प्राप्त करें। अच्छा हो कि हम पहले उन्हें दण्ड दें तभी वे स्वीकार करेंगे। मैं तो काँप उठता हूँ। राह दिखाने को किसी वास्तविकता के बिना किसी की भावनाएँ इतने वासनामय आवरण में छद्म धारणा नहीं कर सकतीं कि वास्तविकता छायामात्र रह जाये ···· मुझे शब्द विचलित नहीं करते···नाक····कान···होंठ···क्या

यह संभव है··· बोलो··· स्वीकार करो··· रूमाल ! शैतान····

[मूर्च्छित-सा हो जाता है ।]

इआगो : आह ! मेरी औषधि ! कर अपना काम कर ! ऐसे ही तुच्छ मूर्खों को घेरा जाता है और ऐसे ही अनेक योग्य, पतिव्रता, निर्दोष स्त्रियों को दण्ड मिलता है । (**कैसियो को आते हुए देखता है ।**) स्वामी ! अरे ! यह क्या हुआ ! मेरे स्वामी ! ऑथेलो ! बोलिये न?

[कैसियो का प्रवेश]

अरे कैसियो !

कैसियो : क्यों क्या बात है ?

इआगो : मेरे स्वामी को मिरगी-सी आ गई है । यह दूसरा दौरा है ! एक ऐसा ही कल आया था ।

कैसियो : तो कनपटियाँ रगड़ो ।

इआगो : नहीं यह ठीक नहीं होगा । मूर्च्छा का दौर धीरे-धीरे अपना समय लेकर निकल जाये यही अच्छा होगा । यदि समय से पूर्व व्याघात डाल दिया जायेगा तो मुँह में से झाग निकलने लगेंगे और उन्हें भीषण क्रोध का एक भयानक दौरा घेर लेगा । लो, वे तो हिलने भी लगे । तुम चले जाओ, मैं अनुनय करता हूँ, तनिक देर को अकेला छोड़ दो । वे शीघ्र ठीक हो जायेंगे । जब ये चले जायेंगे तब मैं तुमसे कुछ ज़रूरी बातें करूँगा ।

[कैसियो का प्रस्थान]

क्या हाल हैं जनरल ? कहीं सिर में चोट तो नहीं आई ?

ऑथेलो : क्या तुम मेरा मज़ाक उड़ाते हो ?

इआगो : मैं और मज़ाक ! ईश्वर न करे ! क्या एक वीर पुरुष की भाँति अपने दुर्भाग्य को सह नहीं सकते ?

ऑथेलो : किंतु जिसकी स्त्री पर पुरुष से व्यभिचार करती है, वह

राक्षस होता है, पशु होता है।[1]

इआगो : महानगर में न जाने ऐसे कितने पशु होंगे, पता नहीं कितने राक्षस होंगे।

आॅथेलो : क्या उसने स्वीकार किया था ?

इआगो : सुनिये श्रीमान् ! आदमी बनिये। अपने विषय को असाधारण मत समझिये। हर मर्द, जिस पर शादी का जुआ रखा है, संभवतः आप ही जैसा हो। लाखों आदमी रात को ऐसे बिस्तरों पर सोते हैं जो उनके नहीं होते हालाँकि वे कसम खा सकते है कि वे उन्हीं के हैं। आपका हाल तो कहीं अच्छा है क्योंकि आप कम से कम अपनी बदकिस्मती को जानते तो हैं ! यह क्या कम व्यंग है, यह क्या शैतान की असली ताकत नही कि एक आदमी ऐसी विश्वास-घातिनी और धोखेबाज़ औरत को पवित्र समझकर चूमता रहता है ! नहीं। मैं तो यही पसंद करूँगा कि मुझे अपना दुर्भाग्य मालूम रहे, क्योंकि फिर मुझे यह भी पता रहेगा कि उससे मैं कैसा व्यवहार करूँ ?

आॅथेलो : निश्चय ही तुम बुद्धिमान हो।

इआगो : तनिक हट जाइये और धैर्य्य धारण करिये तो मैं आपको कुछ दिखाऊँ। जब आप अपने दुख से मूर्छित पड़े थे, जो पुरुष के लिये उचित न था, कैसियो यहाँ आया था। मैंने उसे आपके आवेश के पागलपन के बहाने से यहाँ से हटा दिया था, किंतु उससे कहा था कि वह फिर आये और मुझसे बातें करे। उसने वादा किया था। आप किसी चीज़ के पीछे छिप जाइये और ध्यान से उसकी मुद्राओं,

---

१. अगरेज़ी में ऐसे पुरुष के लिये कहा जाता है—उसके सींग निकल आये हैं अर्थात् उसकी स्त्री व्यभिचारिणी है। यहाँ भी वह कहता है कि जिसके सींग निकले हों वह पशु होता है, मनुष्य नहीं।

चेष्टाओं और हास्य का अध्ययन करिये। वे ही पक्के और घृणा के प्रगट चिह्न होंगे जो उसके चेहरे पर स्पष्ट होंगे। मेरी की शपथ! अपने ऊपर संयम करियेगा और धैर्य्य भी धरिये, अन्यथा मैं समझूँगा कि प्रतिहिंसा की भावना ने आपको पूर्णतया पराजित कर लिया है।

आॅथेलो : सुनते हो इआगो। मैं पूर्ण शांत रहूँगा, धैर्य्य रखूँगा, किंतु याद रखना भीतर ही भीतर मैं बहुत भयानक हो उठूँगा।

[**हटता है।**]

इआगो : अब मैं कैसियो से बियान्का के बारे में पूछूँगा जो एक वेश्या-मात्र है, पैसा लेकर शरीर बेचती है। उसे कैसियो बहुत प्रिय है। वेश्या भी कितनों को छलती है परंतु किसी एक से वह भी छली जाती है। और वह जब उसकी सुनेगा तो हँसे बिना नहीं रह सकेगा। लो वह आ गया।

[**कैसियो का प्रवेश**]

जब यह हँसेगा, आॅथेलो पागल हो उठेगा। और उसकी वह अशिक्षित आदिम ईर्ष्या निश्चय ही इसकी मुस्कानों, गतियों, हाव-भावों और इसके कथनों का कुछ का कुछ अर्थ लगायेगी। **(जोर से)** कहो लेफ्टिनेंट! क्या हाल हैं?

कैसियो : क्या नाम लिया तुमने? मैं तो वैसे ही दुखी हूँ। मुझे तो इसके (पद के) छिनने का ही दुख है। तुम्हारी बात ने तो कटे पर नमक डाल दिया।

इआगो : डैसडेमोना से प्रार्थना करते रहो! तुम निश्चय ही सफल होगे। **(धीरे से)** यदि बियान्का के हाथों यह प्रार्थना होती तो तुम्हारा काम कितनी जल्दी हो जाता?

कैसियो : हाय बेचारी!

ऑथेलो : कैसा हँस रहा है ?

इआगो : मैं नहीं जानता कि स्त्री भी पुरुष को इतना प्यार करती है ?

कैसियो : हाय बेचारी ! चंचला ! सच वह मुझे बहुत चाहती है।

ऑथेलो : कैसे अधूरे तरीके से इंकार कर रहा है। इसे हंसी में उड़ा देना चाहता है।

इआगो : सुनते हो कैसियो ?

ऑथेलो : अब वह उसे फिर से सारी बात दुहराने को उकसा रहा है। ठीक ही तो है। ठीक ही तो है।

इआगो : वह तो कहती है वह तुमसे शादी करेगी। क्या तुम्हारा भी इरादा है ?

कैसियो : हा-हा-हा ····

ऑथेलो : अरे तू जीत गया रोमनिवासी ! तू जीत गया ?

कैसियो : मैं और उससे शादी ! क्या ? एक गाहक ! सुनो भी। ज़रा मेरी अक्ल पर तरस खाओ। तुम क्या मुझे बिल्कुल ही गया-बीता समझ रहे हो ? हा-हा-हा ···

ऑथेलो : अच्छा ! अच्छा ! जीतने वाले हमेशा हँसते हैं।

इआगो : कसम से, अफवाह है कि तुम उससे शादी करोगे।

कैसियो : सच कहते हो ?

इआगो : सच, वर्ना तुम मुझे झूँठा कह लेना।

ऑथेलो : क्या तू मुझे अपमानित कर भी चुका है। देखें-देखें।

कैसियो : तब तो उस बँदरिया ने ख़ुद ही यह खबर फैलाई होगी। उसे विश्वास है कि मैं उससे शादी करूँगा और यह सब केवल उसे अहंकार और मेरे प्रति प्रेम का ही फल है, मैंने उसे कोई वचन नहीं दिया।

ऑथेलो : इआगो मुझे इशारा कर रहा है। अब कथा का प्रारम्भ होता है।

कैसियो : वह तो कुछ देर पहले यहीं थी। जहाँ जाता हूँ सच वहीं आ जाती है। कुछ दिन हुए मैं समुद्र-तीर पर कुछ वेनिसवासियों से बातें कर रहा था कि वहीं आ गई और मेरे गले में हाथ डाल कर...

ऑथेलो : चिल्ला उठी 'मेरे प्यारे कैसियो !' है न ? इसकी मुद्रा तो यही कहती है।

कैसियो : चिपट गई, रोने लगी...ऐसे झकझोर उठी मुझे...हा-हा-हा...

ऑथेलो : अब यह बतायेगा कि किस तरह वह इसे मेरे शयन-कक्ष में ले गई, मुझे तुम्हारी नाक तो दीख रही है, पर वह कुत्ता नहीं दीख रहा जिसे मैं इस पर छोड़ूँगा...

कैसियो : अब मुझे उसका साथ छोड़ना चाहिये...

इआगो : मेरे सामने देखो, वह कहीं से आ रही है...

कैसियो : पूरी बिल्ली समझो, बस यही है कि यह सिंगार किये है...

[**बियान्का का प्रवेश**]

क्यों मेरे पीछे-पीछे घूम रही हो ?

बियान्का : शैतान और उसका अभिशाप तुम्हारा पीछा करे। वही रुमाल मुझे देने से तुम्हारा क्या मकसद था ? मैं अच्छी बेवकूफ़ थी जो उसे ले गई थी। मैं उसकी नकल उतारूँ ? क्या चीज़ है कि तुम्हें तुम्हारे कमरे में पड़ी मिली और तुम्हें पता भी नहीं कि कौन वहाँ इसे छोड़ गया था ! अरे यह तो किसी रखैल की भेंट है। और मैं इसकी नकल उतारूँ ? लो यह लो ! अपनी नई घोड़ी को दे देना इसे, चाहे जहाँ से मिला हो। मैं इस पर कोई काम नहीं करूँगी।

कैसियो : क्यों प्यारी बियान्का ! क्या बात हो गई ? बताओ प्रिये।

ग्रॉथेलो : हे भगवान ! वह तो मेरा रूमाल लगता है।

बियान्का : ग्रौर यदि तुम रात को खाना खाने ग्राना चाहो तो ग्रा जाना। यदि नहीं ग्राते तो फिर तब तक इन्तज़ार करना जब तक फिर मैं न बुलाऊँ।

[**प्रस्थान**]

इग्रागो : पीछा करो ! पीछा करो !

कैसियो : कसम से, ग्रभी लो ! वर्ना वह सड़कों पर जो चाहे बकती फिरेगी।

इग्रागो : उसके घर खाना खाग्रोगे ?

कैसियो : हाँ यही इरादा है।

इग्रागो : तब हो सकता है मैं तुमसे मिलूं, मुझे तुमसे बातें करनी हैं !

कैसियो : ज़रूर ग्राना ! ग्राग्रोगे न ?

इग्रागो : कोई बात नहीं। ग्रब कुछ मत कहो।

[**कैसियो का प्रस्थान**]

ग्रॉथेलो : (**ग्रागे ग्राकर**) इग्रागो ! मैं इसकी हत्या कैसे करूँ ?

इग्रागो : ग्रापने देखा वह ग्रपने पाप पर कितना प्रसन्न था ?

ग्रॉथेलो : देखा इग्रागो ! देखा !

इग्रागो : ग्रौर ग्रापने रूमाल भी देखा ?

ग्रॉथेलो : ग्राह इग्रागो ! क्या वह मेरा था ?

इग्रागो : कसम से ग्रापका ही था। ग्रौर देखा ग्रापने कि ग्रापकी स्त्री को कैसा मूर्ख समझता है। ग्रौर उसकी दी हुई भेंट इसने ग्रपनी प्रेमिका को दे दी है !

ग्रॉथेलो : इसका तो मैं नौ साल में क़त्ल पूरा करूँगा। सुंदरी ! प्रिया ! वाह !

इग्रागो : नहीं, ग्रब ग्राप इसे भूल जाइये।

ऑथेलो : आज उस नीच स्त्री को नष्ट हो जाने दो क्यों कि मैंने आज रात ही उसका अंत कर देने का निश्चय किया है। मेरा हृदय पत्थर की तरह ऐसा कठोर हो गया है कि जब उस पर हाथ मारता हूँ तब हाथ में दर्द होने लगता है। कितनी सुदर है वह ! अद्वितीय ! वह तो एक सम्राट के समीप सोने के योग्य है, आज्ञा देने के योग्य है, उसकी प्रत्येक आज्ञा का पालन करने में सम्राट भी प्रसन्न होगा।

इआगो : यह आपके लिये उचित नहीं है।

ऑथेलो : उसे मरने दो ! वह कितना अच्छा कशीदा काढ़ती है ! कितना अच्छा गाती है। उसका गाना सुनकर तो एक जंगली भालू भी पालतू बन सकता है। और फिर कितनी वाक्चतुर है वह !

इआगो : किंतु यह सब ही तो उसके पाप को बड़ा करके दिखाते हैं।

ऑथेलो : हज़ार बार बड़ा करके—फिर भी कितना मीठा स्वभाव है उसका !

इआगो : बहुत !

ऑथेलो : सचमुच ! फिर भी कितने दुख की बात है इआगो। इआगो ! कैसे शोक की बात है इआगो !

इआगो : यदि उसके पाप के बावजूद आप उसे इतना प्रेम करते हैं तो दीजिये न उसे आज्ञा कि वह पाप करती रहे ! क्योंकि यदि इससे आपको कोई कष्ट नहीं है, तो इसकी वेदना किसी और को तो है नहीं ?

ऑथेलो : मैं उसके टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा।

इआगो : यह तो बहुत बुरा किया उसने !

ऑथेलो : तब मेरे अफ़सर के साथ ही ऐसा काम ?

इआगो : यही तो और भी बुरा हुआ।

ऑथेलो : इआगो ! आज रात मुझे कुछ ज़हर दे दो। मैं उससे तर्क नहीं करूँगा। कहीं उसके रूप और सौंदर्य्य मुझे निर्बल न बना दें। आज रात मुझे यह करना ही होगा इआगो !

इआगो : नहीं। विष न दें। इससे तो अच्छा है कि जिस शैय्या पर उसने आपसे विश्वासघात किया है उसी पर आप उसका गला घोंट दें।

ऑथेलो : ठीक है ! ठीक है ! मुझे इस योजना में औचित्य लगता है।

इआगो : और कैसियो से निबटने के लिये मुझे छोड़ दीजिये। हम फिर मिलेंगे और आधी रात को निश्चय करेंगे।

ऑथेलो : अच्छी बात है। (**भीतर तूर्य्य-निनाद सुनाई देता है**।) यह किसका तूर्य्य-नाद है ?

इआगो : निश्चय ही कोई वेनिस से आया है। शायद ड्यूक के पास से लोडोविको आया है और उसके साथ तुम्हारी स्त्री है।

[**लोडोविको, डेसडेमोना और सेवकों का प्रवेश**]

लोडोविको : वीर जनरल ! परमात्मा आपकी रक्षा करते रहें।

ऑथेलो : यही मेरी भी आपको शुभकामना है।

लोडोविको : ड्यूक तथा वेनिस के सिनेट-सदस्यों ने आपको अपनी बधाइयाँ भेजी हैं।

[**एक पत्र उसे देता है।**]

ऑथेलो : उनकी आज्ञा का मैं स्नेह से चुंबन करता हूँ।

[**मुहर चूमकर, पत्र खोलकर पढ़ता है।**]

डेसडेमोना : भाई[1] लोडोविको ! क्या समाचार है ?

इआगो : श्रीमान् ! आपको देखकर मैं कृतार्थ हुआ। मैं आपका साइप्रस में स्वागत करता हूँ।

---

१. **अंगरेज़ी में** Cousin.

लोडोविको : मैं तुम्हें इसके लिये धन्यवाद देता हूँ। लेफ़्टिनेंट कैसियो कैसे हैं ?

इआगो : जीवित हैं श्रीमान्।

डैसडेमोना : भाई ! मेरे पति और उसके बीच एक गहरी खाई पड़ गई है। तुम उसे ठीक कर सकोगे ?

ऑथेलो : तुम्हें इसका निश्चय है ?

डैसडेमोना : स्वामी !

ऑथेलो : (**पढ़ता है।**) 'इसे करने में न चूकना, क्योंकि तुमको ....'

लोडोविको : उन्होंने नहीं कहा कुछ। वे तो पढ़ने में मग्न हैं। क्या मेरे स्वामी और कैसियो के बीच कोई दरार पड़ गई है ?

डैसडेमोना : अत्यंत दुखद। कैसियो के प्रति अपने प्रेम के कारण मैं उसे किसी भी मूल्य पर दूर करना चाहती हूँ।

ऑथेलो : पत्थर गिरे, नरक की यातना मिले !

डैसडेमोना : स्वामी ??

ऑथेलो : क्या तुम बुद्धिमान हो ?

डैसडेमोना : क्या आप क्रुद्ध हैं !

लोडोविको : हो सकता है पत्र ने उन्हें विचलित कर दिया हो ! क्यों कि जहाँ तक मैं समझता हूँ उन्हें देश लौटने की आज्ञा मिली है और कैसियो को उनके स्थान पर नियुक्त किया गया है।

डैसडेमोना : सच कहती हूँ, यह सुनकर मुझे प्रसन्नता हुई है।

ऑथेलो : सचमुच ?

डैसडेमोना : मेरे स्वामी !!

ऑथेलो : मैं यह देख कर प्रसन्न हूँ कि तुम पागल हो।

डैसडेमोना : क्यों प्रिय ऑथेलो ....

ऑथेलो : (**पत्र से उस पर आघात करके**) शैतान !

डैसडेमोना : मैं इस योग्य तो नहीं थी !

लोडोविको : श्रीमान् ! वेनिस में इस पर विश्वास भी नहीं किया जायेगा चाहे मैं कसम खा कर ही क्यों न कहूँ कि मैंने इसे आँखों से देखा है। यह तो बहुत अधिक हो गया। उससे क्षमा माँगिये। वह रो रही है।

ऑथेलो : ओ शैतान ! शैतान ! यदि पृथ्वी पर स्त्री के आँसू गिरने से सृष्टि हो सके तो प्रत्येक बूंद मगर[1] बन जायेगी। दूर हो जाओ मेरे सामने से !

डैसडेमोना : मैं तुम्हें क्रुद्ध करने को यहाँ नहीं रुकूँगी।

[जाती है।]

लोडोविको : सचमुच ! एक विनीत नारी है। स्वामी ! मैं प्रार्थना करता हूँ वापिस बुला लें।

ऑथेलो : श्रीमती !

डैसडेमोना : मेरे स्वामी ?

ऑथेलो : आपको उससे कुछ काम है ?

लोडोविको : कौन मुझे श्रीमान् !

ऑथेलो : हाँ। आपने ही तो मुझे उसे लौटाने को कहा था ! श्रीमान् ! वह लौट सकती है, घूम सकती है, और फिर जा सकती है, फिर लौट सकती है। वह रो सकती है श्रीमान् ! रो सकती है। और वह विनीत है, आप कहते हैं विनीत है, बहुत विनीत है। तुम रोती चलो !

[कभी लोडोविको और कभी डैसडेमोना से]

इस विषय में श्रीमान् !—ओ मक्कार स्त्री ! मुझे आज्ञा मिलती है—चली जाओ यहाँ से ! मैं आपको शीघ्र सूचना दूंगा, श्रीमान्,

---

१. **अंगरेजी में भी कहावत है—'मगर के आँसू'** (Crocodile tears).

मैं आज्ञा को मानता हूँ और वेनिस लौट जाऊँगा। चली जाओ यहाँ से !

[डेसडेमोना का प्रस्थान]

कैसियो मेरी जगह लेगा और श्रीमान्, मैं प्रार्थना करता हूँ कि आज हम सब रात को साथ-साथ भोजन करें, श्रीमान्! साइप्रस में आपका स्वागत है ··· बकरे और बंदर ···[1]

[प्रस्थान]

लोडोविको : क्या यही वह वीर मूर है, जिसको हमारी सिनेट ने प्रत्येक रूप से योग्य ठहराया था! क्या यह वही व्यक्ति है जिसे आवेश कभी विचलित नहीं करता था! क्या यही है वह व्यक्ति जिसे किसी प्रकार की दुर्घटना या दुर्भाग्य प्रभावित नहीं करते थे ?

इआगो : अब वे बहुत बदल गये हैं।

लोडोविको : दिमाग़ तो ठीक है न ? क्या कुछ गड़बड़ी तो नहीं है ?

इआगो : जो हैं सो हैं—लेकिन मुझे इस विषय पर अपनी राय नहीं देनी चाहिये। मैं तो परमात्मा से यही प्रार्थना करता हूँ कि यदि वे नहीं हैं, तो वैसे ही हो जायें जैसे उन्हें होना चाहिये।

लोडोविको : अरे पत्नी पर हाथ उठाना !

इआगो : निश्चय, यह बहुत बुरा था। मुझे तो यही निश्चय करना है कि यही सबसे घातक आघात था !

लोडोविको : क्या उन्हें आदत है या पत्रों ने उन्हें आवेश से भर दिया था और उनमें यह दोष भर दिया था ?

इआगो : हंत ! निश्चय ही मेरे लिये न यह उचित ही होगा, न ठीक ही कि मैं उसको कह दूँ जो मैंने जाना और देखा है। आप भी उन्हें

---

१. पहले वासना के संबंध में इआगो (३.३) इन शब्दों का प्रयोग कर चुका है।

देखेंगे ही, तो स्वयं ही न आप सब कुछ देख लें। इससे मेरी रक्षा हो जायेगी। उनके पीछे जाइये और देखिये वे क्या-क्या करते हैं।

लोडोविको : मुझे यह देख कर बड़ा दुख हुआ है कि जो मैंने सोचा था वह वैसा नहीं हुआ।

[प्रस्थान]

दृश्य २

[दुर्ग का एक कमरा]

[ग्रॉथेलो और इमीलिया का प्रवेश]

ग्रॉथेलो : तो तुमने कुछ नहीं देखा ?

इमीलिया : न कभी सुना, न कभी संदेह ही किया।

ग्रॉथेलो : लेकिन तुमने कैसियो और डैसडेमोना को साथ-साथ देखा है ?

इमीलिया : लेकिन मैंने इसमें कोई हानि नहीं देखी और फिर मैंने तो उनकी बातचीत का प्रत्येक शब्द सुना है।

ग्रॉथेलो : क्या उन्होंने ग्रापस में कोई कानाफूंसी नहीं की ?

इमीलिया : नहीं स्वामी !

ग्रॉथेलो : कभी तुम्हें बाहर नहीं भेजा ?

इमीलिया : कभी नहीं स्वामी।

ग्रॉथेलो : पंखा, दास्ताने, बुर्का (झीना बुर्का यूरोप में मुँह पर डाल लिया जाता था।) या ऐसी कोई चीज़ लाने भी नहीं ?

इमीलिया : बिलकुल नहीं।

ग्रॉथेलो : अजीब बात है।

इमीलिया : मैं कहती हूँ स्वामी ! मैं कसम खाकर कह सकती हूँ कि वह

कुटिल विचार का त्याग कर दीजिये। उससे आपकी बुद्धि विषाक्त ही होगी। यदि किसी धूर्त्त ने आपके मस्तिष्क में ऐसा विचार रख दिया है तो परमात्मा करे उसे विषैला नाग डसे। क्योंकि यदि डैसडेमोना पवित्र और पतिव्रता नहीं है तो किसी भी पुरुष की पत्नी पतिव्रता नहीं हो सकती। तब तो अत्यंत पवित्र पत्नी को भी दुराचारिणी होना ही पड़ेगा, बल्कि मैं तो व्यभिचारिणी कहने तक से न हिचकूँगी।

आॅथेलो : उसे यहाँ भेज दो।

[इमीलिया का प्रस्थान]

क्या खूब कहती है ये, लेकिन इसके पेशे की कोई भी औरत यही कहती। ये तो चाहे कितनी भी सीधी क्यों न हों यही कहेंगी, और क्या ? यह तो बड़ी चालाक औरत मालूम होती है जो ऐसी लज्जाजनक बातों को ऐसे गुप्त रखती है मानों कोई अपनी गुप्त अलमारी में पत्रों को छिपा कर रखता हो। लेकिन मैंने तो उसे (कैसियो को) घुटनों के बल बैठकर प्रार्थना करते देखा है।

[डैसडेमोना और इमीलिया का प्रवेश]

डैसडेमोना : मेरे स्वामी ! आपकी क्या इच्छा है ?

आॅथेलो : आओ प्रिये ! मेरे निकट आओ !

डैसडेमोना : क्या आज्ञा है ?

आॅथेलो : मुझे अपनी आँखें देखने दो, मेरी तरफ़ देखो ····

डैसडेमोना : यह कैसा भयानक विचार है ···

आॅथेलो : (**इमीलिया से**) अब अपना रोज़ का काम करो, प्रेमियों को भीतर छोड़ कर दरवाज़े पर पहरा दो, कोई आये तो खाँसना, कूँखना। अपना काम करो, अपना काम। जाओ।

[इमीलिया का प्रस्थान]

डैसडेमोना : मैं आपसे सविनय पूछती हूँ कि आप कहना क्या चाहते हैं ? आपकी बात के पीछे एक गुस्सा छिपा है जैसे आपके दिमाग़ में बड़ी भयानक हलचल मच रही है।

ऑथेलो : क्यों ? तुम हो कौन ?

डैसडेमोना : आपकी पवित्र और पतिव्रता पत्नी हूँ।

ऑथेलो : आओ इसकी शपथ ग्रहण करो और अभिशाप तुम पर टूट पड़ें ताकि तुम्हारे देवदूतों के-से मुख को देख कर शैतान भी तुम्हें पकड़ते हुए थहर जायें। आओ। शपथ लो कि तुम पवित्र और पतिव्रता हो और इस पाप के लिये तुम पर शाप लद जायें और पाप को अस्वीकार करने के कारण तुम पर दुगना अभिशाप टूटे।

डैसडेमोना : भगवान ही वास्तविकता के ज्ञाता हैं।

ऑथेलो : हाँ। भगवान तो जानता है कि तुम बेईमान हो और नरक की भाँति मिथ्याशील हो।

डैसडेमोना : मिथ्याशील ! किसके प्रति मेरे स्वामी ! किसके साथ ! मैं कैसे झूठी हूँ ?

ऑथेलो : आह डैसडेमोना, चली जाओ, जाओ, चली जाओ !

डैसडेमोना : हाय, कैसा बुरा दिन है ! क्यों रोते हो मेरे स्वामी ! क्या मैं ही इस सबका कारण हूँ ? यदि आप समझते हैं कि इस सबके पीछे मेरे पिता के तंत्र हैं, तो इसलिये मुझे अपराधी क्यों ठहराते हैं ? यदि आप उन्हें अपने लिये शत्रु और पराया ठहराते हैं तो मेरे लिये भी तो ये वही हैं जो आपके लिये हैं !

ऑथेलो : यदि भगवान को इसी से संतोष हो जाता कि मुझे भयानक दुर्भाग्य घेर लेता, यदि आकाश से मेरे शीश पर कठोर अपमानजनक दुख बरसते, या मैं दरिद्रता की कचोट को सहता या मुझे

अंधकार में निवास करना पड़ता, तब भी मैं अपना धैर्य नहीं खोता। किंतु मुझे ऐसे निरादर का पात्र बनाया है उस भगवान ने ! कि मेरी ओर लोग अपनी उंगलियाँ उठायें और मुस्करा कर तिरस्कार से इशारे करें .... मैं तो इसे भी सह लेता ! किंतु जहाँ मैंने अपने जीवन की समस्त आशाओं को संचित किया, वह स्रोत जहाँ से मेरा जीवन ही संबल ग्रहण करता है, जिसके बिना मेरे लिये केवल मृत्यु है .... वहीं से मैं इस प्रकार वंचित किया जाऊँ ? यह विचार ही कितना विकराल है कि या तो मैं अपने प्रेम-पात्र से ही दूर हो जाऊँ या इसको इसी प्रकार कलुषित और कलंकित होते हुए देखता रहूँ। इस हालत में तुम कितने भी रंग बदल लो, किंतु क्या मेरे पवित्र हौज़ में गंदे मेंढक मौज से नहा-नहा कर टर्राया करेंगे ? ओ गुलाबी होंठों वाली देवदूत-सी सुंदरी ! तू मुझे नरक-सी भयानक दिखाई देती है।

डैसडेमोना : मुझे आशा है कि आप मुझे पवित्र और सच्चा समझते हैं।

ऑथेलो : निश्चय ही तुम उस मक्खी के समान पतिव्रता हो जो अंडे देती ही फिर गाभिन हो जाती है। तुम उस नरकुल की भाँति हो जो देखने को तो बहुत सुंदर लगता है, जिसकी गंध भी बड़ी मादक होती है, किंतु जिसको सूँघने से ही नशा आता है। काश तुमने जन्म ही नहीं लिया होता।

डैसडेमोना : हाय ! हाय ! आखिर अनजाने ही सही, पर मैंने ऐसा कौन-सा पाप कर डाला है ?

ऑथेलो : क्या यह सफ़ेद कागज़, यह सुंदर पुस्तक, इसलिये ही इसे बना गया था कि इस पर शब्द लिखा जाये—'कुलटा !' पूछती हो क्या पाप किया है तुमने ? ओ वेश्या ! पापिनी ! यदि मैं उन पापों का वर्णन करने लगूंगा तो तुम्हारे गुलाबी गाल लज्जा से ऐसे

सुलग उठेंगे कि नरक की ज्वाला-सी फरफरा उठेगी, ऐसी तीव्र कि तुम्हारी लज्जा को ही भस्म कर देगी। स्वर्ग इस पाप की दुर्गंध को नहीं सह सकता, न चन्द्रमा ही इसे देख सकता है ।[१] इस जघन्य पाप को देख कर सर्वदयालु पवन भी ऐसा धक्का खा जायेगा कि पृथ्वी के गर्भ में छिप जाना अधिक पसंद करेगा, न कि इस पाप का विवरण सुनना। और तुम पूछती हो तुमने क्या पाप किया है ? ओ निर्लज्ज कुलटा !

डैसडेमोना : ईश्वर साक्षी है, आप मेरे साथ अन्याय कर रहे हैं।

ऑथेलो : क्या तुम विश्वासघातिनी दुश्चरित्र कुलटा नहीं हो ?

डैसडेमोना : नहीं। मैं ईसाई हूँ। यदि इस देह को अपने स्वामी के लिये पवित्र रखना, किसी अन्य व्यक्ति के स्पर्श से भी दूर रखना पवित्रता है, दुश्चारित्र नहीं है, तो मैं भी पवित्र हूँ।

ऑथेलो : तो क्या तुम पर पुरुषगामिनी नहीं हो ?

डैसडेमोना : नहीं। मेरी आत्मा की निश्चय ही भगवान रक्षा करेंगे।

ऑथेलो : क्या यह भी हो सकता है ?

डैसडेमोना : हे भगवान ! क्षमा कर !

ऑथेलो : तब मुझे क्षमा करो। मैं तो तुम्हें ऑथेलो से विवाह करने वाली वेनिस की चालाक वेश्या समझा था। (**स्वर उठाकर**) श्रीमती ! तुम्हारा काम नरक के द्वारों पर पहरा देने का है जैसे संत पीटर स्वर्ग के द्वार की देखभाल करते हैं।

[इमीलिया का प्रवेश]

ऐ, ऐ, · · तुम · · · हाँ तुम ही। हम अपना काम कर चुके हैं और तुमने जो तकलीफ़ की है उसके लिये यह दाम लो। दरवाज़ा बंद कर देना और जो हुआ है उसके बारे में किसी से कुछ कहना नहीं।

[प्रस्थान]

१. अंगरेज़ी में चंद्रमा पुरुष नहीं स्त्री है।

इमीलिया : आख़िर इन्हें हो क्या गया है ? क्या हुआ तुम्हें स्वामिनी ?

डैसडेमोना : मैं जाग रही हूँ या सो रही हूँ ?

इमीलिया : कहो न देवी ! स्वामी को क्या हो गया है ?

डैसडेमोना : किसको ?

इमीलिया : मेरे स्वामी को ?

डैसडेमोना : कौन है तुम्हारा स्वामी !

इमीलिया : स्वामी ! वही स्वामी ! और कौन ! आपके स्वामी ही तो मेरे मालिक हैं !

डैसडेमोना : मेरा कोई स्वामी नहीं है। मुझसे बात मत करो इमीलिया ! मैं तो रो भी नहीं सकती। आँसू के अतिरिक्त मेरे पास कोई उत्तर भी नहीं है। मैं प्रार्थना करती हूँ आज मेरी शैय्या पर मेरे विवाह की चादरें बिछा देना और सुन, तनिक अपने पति को बुला कर ला।

इमीलिया : क्या बात है ! सब कुछ कितना अजीब है !

[प्रस्थान]

डैसडेमोना : मेरे साथ ऐसा ही व्यवहार तो उचित है। कैसा व्यवहार किया गया है मेरे साथ ? मेरी किस ज़रा-सी भूल पर मुझ पर इतना बड़ा अभियोग लगाया गया है ?

[इमीलिया और इआगो का प्रवेश]

इआगो : आज्ञा दें देवी ! आप सकुशल तो हैं ?

डैसडेमोना : मैं नहीं जानती। जो छोटे बच्चों को पढ़ाते हैं वे मीठी बातें करके उन्हें सिखाते हैं। वे हमेशा आसान तरीके अपनाते हैं। मुझे ठीक करने को तो मामूली डाँट ही काफ़ी थी। जहाँ तक डाँट का सवाल है मैं भी बच्चे की तरह ही हूँ।

इआगो : श्रीमती ! बात क्या है ?

इमीलिया : दुर्भाग्य इआगो ! स्वामी ने इन्हें इतनी भयानक गालियाँ

दी हैं, ऐसे कड़े शब्द कह कर कुलटा कहा है कि कोई भी अच्छे हृदय की स्त्री उसे सह नहीं सकती ।

डेसडेमोना : क्या मैं इसी नाम के उपयुक्त हूँ इग्रागो ?

इग्रागो : कौन-सा नाम देवी !

डेसडेमोना : अभी तो इमीलिया ने कहा, वही नाम ।

इमीलिया : उन्होंने इन्हें कुलटा कहा । अपनी नीचतम पत्नी से कोई भिखारी शराब के नशे में भी ऐसी बात नहीं कहता !

इग्रागो : ऐसा क्यों किया उन्होंने ?

डेसडेमोना : मैं नहीं जानती । किंतु निश्चय ही मेरा कोई अपराध नहीं है ।

इग्रागो : रोइये नहीं, रोइये नहीं । कैसा दुर्दिन है !

इमीलिया : क्या देवी ने अपने पिता, देश, और अनेक कुलीन व्यक्तियों के विवाह-प्रस्तावों को इसीलिये छोड़ा था कि वे कुलटा कहलायें ? क्या यह रुलाने के लिये काफ़ी नहीं है ?

डेसडेमोना : यह तो मेरा ही दुर्भाग्य है ।

इग्रागो : इसका उन्हें दण्ड भगवान देगा । यह बात उनके दिमाग़ में आई कैसे ?

डेसडेमोना : भगवान जाने !

इमीलिया : मुझे फाँसी लग जाये यदि यह काम किसी नारकीय नीच कमीने और भयानक रूप से कुटिल नराधम धोखेबाज़ व्यक्ति का न हो जो कि किसी पद पर नियुक्ति के लिये ऐसी योजनाबद्ध बदनामी कर रहा है । यदि ऐसा न हो तो मुझे फाँसी दे दी जाये !

इग्रागो : छिः ! ऐसा कोई आदमी नहीं । यह असंभव है ।

डेसडेमोना : यदि कोई ऐसा हो तो भगवान उसे क्षमा करें ।

इमीलिया : फाँसी की रस्सी उसे क्षमा करे । नरक में उसकी हड्डियाँ

कुतर-कुतर कर चबाई जायें। क्यों कहता है वह इन्हें कुलटा ! कौन आता है इनके पास ? कब ? कहाँ ? किस तरह ! कोई तुक भी हो ! ऑथेलो को अत्यंत नीच बदमाश, किसी जघन्य खल, किसी कमीने हरामी ने बहकाया है। हे भगवान ! ऐसे कमीनों की असलियत तू क्यों नहीं खोल देता। उसके तो छद्म उतार कर हर ईमानदार आदमी के हाथ में एक-एक कोड़ा दे दिया जाय और संसार भर में पूरब से पच्छिम तक ऐसे कमीने को नंगा करके इतने कोड़े मारे जायें····

इआगो : तनिक धीरे बोलो।

इमीलिया : धिक्कार है ! ऐसा ही कोई नीच था जिसने तुम्हारी भी मति फेर दी थी और तुमने मुझ पर और मूर पर संदेह किया था।

इआगो : तुम मूर्ख हो, जाओ यहाँ से !

डैसडेमोना : ओ अच्छे इआगो ! मैं स्वामी का प्रेम प्राप्त करने के लिये फिर क्या करूँ ? तुम मेरे शुभाकांक्षी हो। उनके पास जाओ। मैं आकाश के ज्वलंत पिण्डों की शपथ खाकर कहती हूँ, मैं नहीं जानती कि कैसे वे मुझसे क्रुद्ध हो गये हैं ! मैं यहाँ घुटनों के बल बैठी हूँ, यदि कभी भी मेरी इच्छा उनके प्रेम के विरुद्ध गई हो, बातों में, विचारों में या कार्य्यों में—मनसा-वाचा-कर्मणा कभी मैं उनके विरुद्ध रही हूँ, या कभी मेरी आँखों, मेरे कानों, मेरी किसी भी इन्द्रिय ने उनके अतिरिक्त किसी अन्य रूप में आनंद का अनुभव किया हो, या यह कि मैंने उन्हें प्यार नहीं किया था, या नहीं कर रही, या नहीं करूँगी। चाहे वे मुझे एक भिखारिन, एक दासी की ही भाँति क्यों न रखें, तब भी मैं उन्हीं को अपना सर्वस्व समझूँगी, चाहे उनकी निष्ठुरता मेरे जीवन को नष्ट कर दे किंतु मेरे प्रेम पर प्रभाव नहीं पड़ेगा, किंतु फिर भी मैं वह शब्द 'कुलटा' तो कह

भी नहीं सकती। उसे कहते में ही मैं घृणा से काँप उठती हूँ। यदि सारे संसार का वैभव भी मुझे उसके बदले में मिल जाये तब भी मैं ऐसा पाप नहीं कर सकती।

इग्रागो : मैं ग्रापसे याचना करता हूँ कि ग्राप धैर्य्य धारण करें। यह तो एक जोश भर है। शायद राज-काज ने उन्हें ग्रस्थिर कर दिया है कि वे ग्रापको यों डाँट गये हैं।

डेसडेमोना : मैं भी यही चाहती हूँ कि बस यही कारण हो····

इग्रागो : मुझे विश्वास है, यही बात है।

[नेपथ्य में तुर्य्य-नाद]

सुनिये! ग्रब रात का भोजन प्रारंभ होने की ग्रावाज़ है यह। वेनिस के दूत भोजन के लिये प्रतीक्षा कर रहे होंगे। रोइये नहीं। भीतर जाइये। सब जल्दी ही ठीक हो जायेगा।

[डेसडेमोना ग्रौर इमीलिया का प्रस्थान। रोडरिगो का प्रवेश]

कहो रोडरिगो क्या हाल है?

रोडरिगो : तुमने मेरे साथ कितनी ज़्यादती की है, कभी इस पर भी सोचते हो?

इग्रागो : क्यों मैंने तुम्हारे खिलाफ़ क्या किया है?

रोडरिगो : कोई न कोई बहाना करके तुम मुझे रोज़ टाल देते हो। जब तो यह साफ़ दिखाई दे रहा है कि तुम मेरी ग्राशाएँ पूरी करने की बजाय मुझे उससे दूर ले जा रहे हो। मैं इसे ग्रौर नहीं सह सकता, न मैंने जो नुकसान उठाया उस पर चुप रह जाऊँगा, मैंने कितनी मूर्खता से तुम्हारे हाथ इतनी हानि उठाई है?

इग्रागो : मेरी बात भी सुनोगे तुम?

रोडरिगो : बहुत सुन लिया। मेरा धीरज चुक गया। जो तुम कहते हो न, तुम्हारा मतलब हमेशा उसके ग्रतिरिक्त ही कुछ होता है।

इआगो : क्या बेवजह इल्ज़ाम लगा रहे हो !

रोडरिगो : नहीं । मैं ठीक ही तुम पर दोष लगा रहा हूँ । मैंने डैसडेमोना को भेंट पहुँचाते-पहुँचाते अपना सारा धन ही नष्ट कर दिया । मैंने जो उसे पहुँचाने को तुम्हें जवाहिरात दिये थे उनसे तो गिरजे की कोई साध्वी भी ललचा जाती । तुम कहते हो वह सब उसने ले लिये हैं और बदले में तुम्हें आशा दी है कि शीघ्र ही वह मुझसे मिलेगी । लेकिन मुझे ऐसी कोई बात नज़र नहीं आती !

इआगो : तो चलो, हो गया, यही सही ।

रोडरिगो : यही सही ! चलो ! हो गया ! मैं जा नहीं सकता अब, समझे ! यही सही से भी काम नहीं चलेगा । यह तो धोखा है ! मुझे तो इस मामले में ठग लिया गया है !

इआगो : बहुत खूब !

रोडरिगो : बहुत खूब कहाँ है ? मैं डैसडेमोना के पास जाऊँगा, अगर वह मेरे जवाहिरात लौटा देगी तो मैं तो इस दौड़ को छोड़ दूँगा और इस ग़ैरकानूनी मुहब्बत से बाज़ आऊँगा । नहीं तो समझ लो, मैं तो तुमसे जवाब माँगूंगा ।

इआगो : बस अब कह चुके या और कुछ बाकी है ?

रोडरिगो : मैंने ऐसा कुछ नहीं कहा जो मैं करके न दिखा दूंगा ।

इआगो : तब तो मुझे लगता है तुममें अभी कुछ जान बाकी है और आयंदा मुझे तुम्हारे बारे में अपनी राय भी बेहतर बनानी होगी । लाओ रोडरिगो ! मुझे अपना हाथ दो । तुम्हारी शिकायत में इंसाफ़ है, वह उचित है, लेकिन मैंने तुम्हारे साथ निहायत अच्छा व्यवहार किया है ।

रोडरिगो : ऐसा नज़र तो नहीं आया ।

इआगो : हाँ यह सच है कि अभी ज़ाहिरा तौर पर ऐसा कुछ नज़र

नहीं आया। तुम्हारे शक भी बेबुनियाद और बेकार नहीं है! लेकिन रोडरिगो! अगर तुम्हारा मकसद सच्चा है, तुममें धीरज और बहादुरी है तो आज रात इसका सबूत दो। मुझे विश्वास है कि पहले की बनिस्बत तुममें यह बातें अब पहले से कहीं ज़्यादा हैं। कल रात ही अगर तुम डैसडेमोना के मज़े न उड़ाओ तो भले ही किसी भी धोखे से कितनी ही तकलीफ़ देकर तुम मुझे इस दुनिया से ही उठा देना।

रोडरिगो : बताओ फिर! क्या बात है? क्या वह ऐसी है जो मैं कर सकता हूँ, जो उचित है?

इआगो : जनाब! वेनिस से एक विशेष कमीशन (दल) आया है, कैसियो को ऑथेलो की जगह दिलाने।

रोडरिगो : क्या यह सच है? तो क्या ऑथेलो और डैसडेमोना वेनिस लौट जायेंगे?

इआगो : अरे नहीं! वह तो मॉरीटानिया जायेगा और संग में सुंदरी डैसडेमोना को ले जायेगा। यह है योजना बशर्त्ते कोई रुकावट नहीं पड़ी। इस मामले में कैसियो को हटा देने से बेहतर कोई तरकीब नहीं।

रोडरिगो : कैसियो को हटा देने से तुम्हारा क्या मतलब है?

इआगो : हाँ! अगर तुममें अपने को फ़ायदा पहुँचाने की कोई हिम्मत है। बशर्त्ते तुम एक ठीक काम कर सको। आज रात वह एक वेश्या के घर खाना खायेगा। वहाँ मैं भी उसके साथ जाऊँगा। उसे अभी पता नहीं है कि उसकी किस्मत खुल गई है। अगर तुम उसके वहाँ से जाने की टोह में रहोगे तो तुम्हें मौका मिल जायेगा। और मैं ऐसा कर दूँगा कि यह वक्त बारह और एक के बीच में हो। और फिर तुम्हारी मदद को मैं तुम्हारे पास ही रहूँगा। वह हमारे बीच

में ही तो रहेगा। सुनो ! चौंकते क्यों हो ! मेरे साथ चलो। मैं तुम्हें उसके मरने का ऐसा कारण बताऊँगा कि तुम्हें तो उसे मारने से रुकना कठिन हो जायेगा। अब तो खाने का वक्त हो गया और रात भी काफ़ी हो गई है। तुम चलो।

रोडरिगो : तो फिर मुझे इसके और कारण बताओ।

इआगो : ज़रूर। मैं तुम्हें इसका यकीन दिला दूँगा।

[**प्रस्थान**]

दृश्य ३

[**दुर्ग का एक और कमरा**]

[**आँथेलो, लोडोविको, डैसडेमोना, इमीलिया तथा सेवकों का प्रवेश**]

लोडोविको : मैं प्रार्थना करता हूँ श्रीमान्, कि इस विषय में अब आप अधिक चिंता न करें।

आँथेलो : क्षमा करें। घूमने से मुझे चैन मिलेगा।

लोडोविको : नमस्कार श्रीमती ! मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।

डैसडेमोना : श्रीमान् के आगमन से मुझे प्रसन्नता है। क्या आप घूमने जायेंगे ?

आँथेलो : आह डैसडेमोना !

डैसडेमोना : मेरे स्वामी !

आँथेलो : तुरंत सोने चली जाओ। मैं अभी लौट कर आता हूँ। अपनी नौकरानी को वहाँ से छुट्टी दे देना। ऐसा ही हो।

डैसडेमोना : जो आज्ञा स्वामी !

[**आँथेलो, लोडोविको और सेवकों का प्रस्थान**]

इमीलिया : यह कैसी बात ? इस समय तो पहले की तुलना में वे बड़े नम्र दिखाई देते हैं।

डेसडेमोना : उन्होंने कहा है, वे शीघ्र लौटेंगे। उन्होंने कहा है कि मैं सोने जाऊँ और तुम्हें छुट्टी दे दूं।

इमीलिया : मुझे छुट्टी दे दो ?

डेसडेमोना : यह उनकी आज्ञा है, इसलिये मेरी अच्छी इमीलिया ! मेरे सोने के वस्त्र दे दो और जाओ। अब हमें उन्हें और क्रुद्ध नहीं करना चाहिये।

इमीलिया : अच्छा होता तुम उनसे कभी मिली ही न होतीं !

डेसडेमोना : नहीं मैं ऐसा कभी नहीं चाह सकती। मेरा प्रेम उनको इतना बढ़ा-चढ़ा कर देखता है कि उनका क्रोध, उनका डाँटना, उनकी कठोरता, सबमें मुझे सौंदर्य्य दिखाई देता है। मेरे वस्त्र उतारो न ?

इमीलिया : मैंने बिस्तरे पर वही चादरें बिछा दी हैं। जिन्हें बिछाने को तुमने कहा था।

डेसडेमोना : एक ही बात है। सच हम कभी-कभी कितने बेवकूफ़ बन जाते हैं। यदि मैं तुमसे पहले मर जाऊँ तो मुझे इन्हीं में से एक चादर में ढँक देना।

इमीलिया : रहने दो। बेकार की बातें करना शुरू कर दिया।

डेसडेमोना : मेरी माता की एक सेविका थी, उसका नाम था बार्बरा। वह किसी से प्रेम करती थी जो पागल हो गया और उसे छोड़ गया। वह अक्सर एक बहुत ही दुख-भरा गाना गाया करती थी। वह उसे गाते हुए ही मरी थी। पता नहीं आज रात मुझे वही गाना क्यों याद आ रहा है। क्यों जाने मन करता है उसी की तरह एक ओर सिर लटका कर उसी की भाँति इस गाने को गाऊँ। जल्दी करो न ?

इमीलिया : क्या आपका रात का चोगा लाऊँ ?

डेसडेमोना : नहीं, यह गाँठ खोल दो। यह लोडोविको सुंदर व्यक्ति है।

इमीलिया : सच, बहुत सुंदर है।

डैसडेमोना : वेनिस में एक ऐसी स्त्री मैं जानती हूँ जो लोडोविको से एक चुंबन पाने के लिये फ़िलिस्तीन जैसी दूरी से भी पैदल आ जाती !

डैसडेमोना : [गीत]

चीड़ के ऊँचे घने तरु की सलोनी छाँह में,
दीन मन कितनी न भर लीं आह हैं
गीत गाती जा सलोनी बेल से
हृदय पर रख कर, धरे शिर जानु पर,
गीत गाती जा सलोनी बेल से,
विमल झरने बह रहे मृदु शब्द कर
वेदना उसकी बनी मर-मर मदिर
गीत गाती जा सलोनी बेल से
अश्रु बहते नयन से उर-क्षार भर
पिघलते पाषाण के भी वज्र स्तर···

जल्दी जाओ वे आते होंगे।

[गीत]

यह बने गलहार मेरा बेल[1] ही
दोष दो उसको न कोई तुम कहीं,
बहुत निर्दयता दिखाये वह कहीं
तो मुझे वह प्रिय लगे, सुंदर यहीं···

वह कपड़े नहीं···सुनो ! कोई द्वार खटखटाता है····

इमीलिया : वह तो हवा है।

---

१. अंगरेज़ी में है—'विलो विलो विलो···' यह एक झाड़ी होती है। हिन्दी में इसी से मैंने इसे बेल कर दिया है।

डैसडेमोना : [गीत]

झूठ मैंने प्यार को अपने कहा
जानती हो तब सजन ने क्या कहा
गीत गाती जा सलोनी बेल से
यदि करूँ वह प्रेम पर नारी मिले
तो पुरुष-पर देख तेरा मन खिले—

अच्छा, तू जा। गुडनाइट। मेरी आँखों में दर्द हो रहा है। क्या मुझे रोना पड़ेगा ?

इमीलिया : यह तो कोई बात नहीं है।

डैसडेमोना : मैंने लोगों को ऐसा कहते सुना है। आह ये पुरुष! पुरुष! सच बता इमीलिया! क्या तू समझती है ऐसी भी स्त्रियाँ हैं जो अपने पति से विश्वासघात करती हैं ?

इमीलिया : निश्चय ऐसी भी स्त्रियाँ होती हैं।

डैसडेमोना : क्या संसार में किसी कीमत पर तू भी ऐसा पाप कर सकती है ?

इमीलिया : क्यों क्या तुम न करोगी ?

डैसडेमोना : आकाश के ज्वलंत पिण्ड की शपथ। मैं तो नहीं करूँगी।

इमीलिया : आकाश के ज्वलंत पिण्ड के आलोक में तो मैं भी नहीं करूँगी, हाँ रात में तो कर डालूँगी।

डैसडेमोना : क्या तू ऐसा पाप संसार के धन के लिये करेगी !

इमीलिया : संसार तो बहुत बड़ा है और इसी लिये एक तनिक से पाप का यह तो बहुत बड़ा मूल्य है !

डैसडेमोना : मैं निश्चय जानती हूँ, तुम ऐसा पाप कभी नहीं करोगी।

इमीलिया : क्यों ? मैं समझती हूँ ज़रूर कर लूँगी। लेकिन करने के बाद, अपने पति से क्षमा माँग लूँगी। मेरी की शपथ ! मैं मामूली

मुआवज़े के लिये ऐसा गुनाह नहीं करूँगी कि एक अँगूठी ले ली, या कुछ गज़ लिनिन के कपड़े का टुकड़ा, या टोप, या चोग़े, या पेटीकोट, या ऐसी ही कोई और वस्तु ही क्यों न हो ? भले ही मेरे पति को अपमान मिले किंतु यदि उन्हें संसार के सम्राट का पद मिले तो मैं अवश्य ऐसा कर लूँगी। ऐसे परिणाम के लिये तो मैं नरक में भी दण्ड भोगने को तत्पर हूँ।

डैसडेमोना : ईश्वर का दण्ड गिरे मुझ पर जो सारे संसार का वैभव भी मुझसे ऐसा पाप करा ले !

इमीलिया : पाप क्या है ? लोकाचार में पाप है और जब तुम संसार के ही स्वामी बन गये, तो फिर उसका अनुकूल उपाय भी किया जा सकता है।

डैसडेमोना : मैं नहीं समझती कि ऐसी भी कोई स्त्री हो सकती है !

इमीलिया : दर्जनों हैं और इतनी हैं कि अनाचार की संतान से संसार को भर सकती हैं। उनकी तो क्रीड़ा ऐसी है। किंतु यदि स्त्रियाँ विश्वासघातिनी होती हैं तो मैं इसके लिये उनके पतियों को ही दोषी समझती हूँ। जब वे अपने कर्त्तव्यों का ठीक से पालन नहीं करते, या अन्य स्त्रियों पर पत्नियों के अधिकार न्यौछावर कर देते हैं, या अनावश्यक रूप से अकारण ही ईर्ष्यालु होकर पत्नियों पर बंधन बाँधते हैं, या उन्हें मारते हैं या विद्वेष से उनका खर्चा कम कर देते हैं, तब हमारे भी तो गुस्सा होता है, हममें भी तो बदला लेने की भावना होती है भले ही हमें अधिक दयालु कहा जाता है। प्रत्येक पति को जानना चाहिये कि हममें भी उन्हीं के समान भावनाएँ होती हैं। उन्हीं के समान पत्नियाँ भी देख सकती हैं, सूँघ सकती हैं, अच्छे-बुरे, सुंदर-असुंदर की पहँचान कर सकती हैं। हमारे लिये सुरक्षित प्रेम को वे अन्य स्त्रियों को क्यों दे देते

हैं ? क्या यह केवल खेल है ? क्या यह ग्रंशतः वासना, ग्रंशतः स्नेह ग्रौर कुछ सीमा तक मानवीय निर्बलता नहीं है ? वही बात हमारी भी है। इसीलिये, उन्हें हमारे साथ उचित व्यवहार करना चाहिये। ग्रन्यथा उन्हें जानना चाहिये कि जब वे हमारे विरुद्ध पहला पाप करते हैं, तभी हम भी पाप करना सीख जाती हैं !

डैसडेमोना : गुडनाइट ! गुडनाइट ! भगवान करे, मुझमें बुरा देख कर बुरा करने की भावना न जागे, किंतु बुरा देखकर मुझमें ग्रपने को ग्रौर सुधार लेने की भावना ही जाग्रत हो।

[प्रस्थान]

पाँचवाँ अंक

दृश्य १

[साइप्रस-सड़क]

[इआगो और रोडरिगो का प्रवेश]

इआगो : देखो। यहाँ इस निकले हुए मकान के हिस्से की आड़ में खड़े हो जाओ वह सीधा इधर ही से आयेगा। म्यान में से तलवार निकाल लो और जब वह यहाँ पहुँचे उसके शरीर में पूरी घुसेड़ देना। जल्दी करना, डरना मत। मैं पास ही रहूँगा। एक बार की बात है, इधर या उधर। वर्ना मौका जाता रहेगा। यह याद रखना और मज़बूती से दिल को कड़ा कर लेना।

रोडरिगो : तुम पास ही रहना, शायद मैं ठीक से न कर सकूँ।

इआगो : हाँ-हाँ, मैं यहीं हूँ। हिम्मत बाँधो और यहीं खड़े रहो।

[जाता है।]

रोडरिगो : मेरी तो यह काम करने की कोई विशेष इच्छा नहीं है, लेकिन उसने मुझे कारण तो ठीक बताये हैं। मुझे यह काम करना ही चाहिये। क्या है? ज़्यादा से ज़्यादा इसका मतलब है कि दुनिया में एक आदमी और कम हो गया। एक बार मेरी तलवार मूंठ तक घुसी और फिर वह सदा के लिये उठ जायेगा।

इआगो : मैंने इस नौजवान बेवकूफ़ को पूरी तरह से भड़का दिया है। वह बहुत नाराज़ हो गया है। अब यह तो मेरे फ़ायदे की चीज़ है कि वह कैसियो को मारता है या कैसियो उसे या दोनों एक दूसरे को। रोडरिगो अगर ज़िंदा रहता है तो वह अपना धन और जवाहिरात माँगेगा जो सब मैंने उससे डैसडेमोना के नाम से धोखा

देकर हड़प लिया है। यह तो नहीं होना चाहिये। अगर कैसियो जीवित रहता है तो उसके चरित्र की उदात्तता मेरे कार्य की नीचता की तुलना में और भी नीचतम प्रदर्शित करेगी। और फिर मूर भी उसके सामने मेरी बात खोल सकता है। इस सबसे यह साफ़ है कि मैं अब बड़े खतरे में हूँ। नहीं उसे भी मरना ही चाहिये। शायद वह आ रहा है, आहट हो रही है।

[कैसियो का प्रवेश]

रोडरिगो : उसके चलने के ढंग से ही पता चलता है कि वह कैसियो है। ओ नीच अब तू मरा।

[तलवार का वार करता है।]

कैसियो : तेरा वार पक्का बैठता अगर मैं ऐसा कवच भीतर न पहने होता जिसमें तलवार की नोंक अटक जाती है। तू सोच भी नहीं सका। अब ले मेरी बारी है।

[तलवार खींच कर रोडरिगो को घायल करता है।]

रोडरिगो : हाय ! हाय ! मैं मर गया ! मैं मर गया !

[इआगो पीछे से कैसियो के पैरों पर भारी जख्म करके भाग जाता है।]

कैसियो : मैं हमेशा के लिये लँगड़ा हो गया। बचाओ, बचाओ, ख़ून ! ख़ून ! ! (**गिरता है।**)

[ऑथेलो का प्रवेश]

ऑथेलो : यह तो कैसियो की आवाज़ है। तब तो इआगो ने अपना वादा पूरा किया।

रोडरिगो : हाय मैं कितना नीच हूँ।

ऑथेलो : सच कहता है।

कैसियो : बचाओ-बचाओ ! डॉक्टर को बुलाओ !

ग्रॉथेलो : यह तो कैसियो ही है। ओ वीर और ईमानदार इआगो ! तूने किस वीरता से मेरे प्रति अन्याय का बदला लिया है। तूने मेरे सामने एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। ओ विश्वासघातिनी स्त्री ! देख, यह तेरा प्रेमी मरा पड़ा है और शीघ्र ही तेरा नीच अंत भी समीप आ रहा है। ओ दुश्चरित्रे ! मैं तेरे पास आ रहा हूँ। अपने हृदय से मैं तेरी मोहिनी को, तेरे सुन्दर नेत्रों को, दूर कर रहा हूँ। वह शैय्या जिसे तूने व्यभिचार से अपवित्र किया है अब तेरे लहू से भींग जायेगी, वासना की पुतली !

[**प्रस्थान**]

[**लोडोविको और ग्रेशियानो का प्रवेश**]

कैसियो : अरे कोई चौकीदार नहीं ? कोई राही नहीं ? ख़ून ! ख़ून !

ग्रेशियानो : कोई दुर्घटना हुई है। बड़ी भयानक आवाज़ है।

कैसियो : बचाओ ! बचाओ !

लोडोविको : सुनो-सुनो !

रोडरिगो : ओ नीच कमीने !

लोडोविको : दो या तीन कराह रहे हैं। बड़ी अंधेरी रात है। हो सकता है यह कोई जाल ही हो ! अक्ल से काम लेना चाहिये। जब तक और लोग न आ जायें वहाँ जाना ठीक नहीं।

रोडरिगो : कोई नहीं आता ! हाय सारा खून बह जायेगा ! मौत ही आ रही है ···

लोडोविको : सुनो-सुनो !

[**इआगो का बत्ती के साथ प्रवेश**]

ग्रेशियानो : वह कोई कमीज़ पहने आ रहा है, बत्ती लिये हथियारों से सजा है।

लोडोविको : हम नहीं जानते।

इआगो : क्या तुमने पुकार नहीं सुनी ?

कैसियो : यहाँ भाई यहाँ। भगवान के लिये मदद करो, बचाओ मुझे··

इआगो : बात क्या है ?

ग्रेशियानो : जहाँ तक मैं समझता हूँ यह तो ऑथेलो का एन्शेन्ट है।

लोडोविको : हाँ, है तो वही। बड़ा बहादुर आदमी है।

इआगो : कौन यहाँ इस बुरी तरह चिल्ला रहा है ?

कैसियो : इआगो ? हाय मैं मारा गया। गुंडों ने घेर लिया, मुझे बचाओ, मेरी मदद करो ···

इआगो : अरे तुम ! लेफ़्टिनेंट ! किन बदमाशों ने यह हाल कर दिया ?

कैसियो : मेरे खयाल से उनमें से एक तो यहीं पड़ा है कहीं, वह अधिक दूर नहीं गया होगा।

इआगो : ओ धोखेबाज़ बदमाशो !
(**लोडोविको और ग्रेशियानो से**) तुम यहाँ क्या कर रहे हो ? यहाँ आओ और कुछ मदद करो।

रोडरिगो : मैं यहाँ हूँ, ज़रा सहारा दो।

कैसियो : वह रहा उनमें से एक।

इआगो : ओ ख़ूनी गुलाम ! ओ कमीने !

[**रोडरिगो को छुरा मार देता है।**]

रोडरिगो : ओ नीच इआगो ! ओ नराधम कुत्ते !

इआगो : आदमियों को अँधेरे में मारते हो ? कहाँ है ये ख़ूनी बदमाश ? नगर कितना स्तब्ध है ! ख़ून-ख़ून ! तुम कौन हो ? तुम भले हो या बदमाश ?

लोडोविको : यह तो तुम हमारा व्यवहार देखकर ही जानोगे।

इआगो : कौन ? श्रीमान् लोडोविको ?

लोडोविको : हाँ, मैं ही हूँ।

इआगो : क्षमा करें। यहाँ कैसियो गुण्डों के हाथ घायल होकर पड़े हैं।

ग्रेशियानो : कैसियो !!

इआगो : कैसे हो भैया ! क्या हुआ ?

कैसियो : मेरे पाँव के दो टुकड़े हो गये हैं।

इआगो : मेरी बचाए ! हे ईश्वर ! रोशनी लाइये ! श्रीमान् ! मैं इस पर अपनी कमीज़ से पट्टी बाँधूंगा।

[**बियान्का का प्रवेश**]

बियान्का : क्या बात हुई ? अरे ? कौन चिल्लाया था ?

इआगो : कौन चिल्लाया था ?

बियान्का : हाय ! मेरे प्यारे कैसियो ! मेरे प्रिय कैसियो ! ओ कैसियो ! कैसियो ! कैसियो !

इआगो : ओ विख्यात् दुराचारिणी वेश्या ! (**कैसियो से**) क्या तुम बता सकते हो, वे खूनी-बदमाश कौन थे ?

कैसियो : नहीं।

ग्रेशियानो : तुम्हारी यह दशा देखकर मुझे सचमुच बहुत दुख हो रहा है। मैं तो तुम्हें ढूँढ रहा था।

इआगो : ज़रा इस पट्टी को सँभालने को एक गेटिस दीजिये। बस अब इन्हें आराम से ले चलने का हमें एक कुर्सी चाहिये।

बियान्का : हाय मुझ पर पहाड़ टूटे। वे तो बेहोश हो गये। कैसियो ! कैसियो ! कैसियो !

इआगो : संभ्रांत नागरिको ! मैं इस बेकार के प्राणी पर संदेह करता हूँ। यह ज़रूर इस हमले में शामिल है। ज़रा ठहरिये। रुको कैसियो ! हिम्मत रखो। लाओ, मुझे रोशनी थमाओ। हाँ, क्या हम इस चेहरे को पहचानते हैं ! हाय ! मेरे दोस्त, मेरे प्रिय

स्वदेशवासी ! रोडरिगो नहीं, अरे हाँ, निश्चय !! हे भगवान ! रोडरिगो !

ग्रेशियानो : कौन ? वेनिस का ?

इआगो : वही-वही श्रीमान् ! क्या आप इसे जानते थे ?

ग्रेशियानो : जानता था ! हाँ-हाँ !

इआगो : श्रीमान् ग्रेशियानो !! मुझे क्षमा करें। इस खूनी झमेले में मैं आपको अब तक पहचान नहीं सका।

ग्रेशियानो : तुम्हें देखकर मुझे खुशी हुई !

इआगो : क्या हाल है कैसियो ! एक कुर्सी चाहिये, एक कुर्सी !

ग्रेशियानो : रोडरिगो !

इआगो : वही-वही, हाँ वही है। **(एक कुर्सी लाई जाती है।)** यह ठीक रहा। कुर्सी आ गई। कोई भला आदमी इसे ले चले यहाँ से अब ! होशियारी से ! मैं जनरल के डॉक्टर को लाता हूँ। **(बियान्का से)** हाँ जी श्रीमती ! आप अपनी परेशानी छोड़ दीजिये ! कैसियो ! यह जो यहाँ मरा पड़ा है, मेरा दोस्त था, प्यारा दोस्त ! उसकी तुमसे क्या दुश्मनी थी ?

कैसियो : कोई दुश्मनी नहीं थी। मैं तो उसे जानता तक नहीं।

इआगो : **(बियान्का से)** तुम क्यों पीली पड़ गई हो ? **(कुर्सी वालों से)** अरे उसे ठंडी हवा से हटा ले चलो।

[कैसियो और रोडरिगो वहाँ से हटाये जाते हैं।]

संभ्रांत नागरिको ! ज़रा ठहरिये। हाँ श्रीमती ! तुम इतनी पीली क्यों पड़ गई हो ? देखते हैं नागरिक गण ! इसकी आँखों में कैसी भयानकता है ? नहीं-नहीं ! तुम भले ही चुप खड़ी रहो, बिना बोले ऐसे ही देखती रहो लेकिन हम जल्दी ही सारे मामले की तालाश कर लेंगे। श्रीमान् ! मैं विनय करता हूँ कि इस पर नज़र रखी जाये और

आप साफ़ देखेंगे कि इसका चेहरा ही सारे अपराध को बता देगा।

[इमीलिया का प्रवेश]

इमीलिया : अरे ! क्या बात हो गई ? मेरे स्वामी ! क्या हो गया ?

इआगो : कैसियो पर अंधेरे में यहाँ रोडरिगो ने अपने साथियों के साथ हमला किया। कैसियो के बहुत चोट आई है, पर रोडरिगो मर गया है।

इमीलिया : हाय। बेचारा कैसियो ! हाय-हाय ! कैसा भला आदमी है।

इआगो : यह है वेश्याओं के पीछे लगे रहने का नतीजा। इमीलिया ! इसका पता लगाओ, आज रात कैसियो ने खाना किसके यहाँ खाया है। (**बियान्का से**) तुम क्यों घबरा रही हो यह सुन कर ?

बियान्का : मैं नहीं काँपती। उन्होंने मेरे यहाँ भोजन किया था !

इआगो : अच्छा, तो यही बात है ? तो मैं हुक्म देता हूँ कि तुम भी साथ चलो हमारे।

इमीलिया : धिक्कार है तुझे रंडी !

बियान्का : मैं रंडी नहीं हूँ। तुम जो मुझे गाली दे रही हो मै भी तुम्हारी ही भाँति ईमानदारी से रहती हूँ।

इमीलिया : मुझ जैसी ! ओ रहने दे ! तुझ पर धिक्कार है।

इआगो : दयालु नागरिको ! चल कर पहले हम कैसियो के ज़ख्मों को देखें। चलो, अब कोई दूसरी ही कहानी भी सुनाना। इमीलिया ! तुम तुरंत दौड़कर दुर्ग में जाओ और स्वामी और स्वामिनी से जो हुआ है कह सुनाओ ! (**लोडोविको और ग्रेशियानो से**) आप तो चलेंगे न ? (**स्वगत**) आज की रात है, या तो मुझे बना देगी या बिल्कुल बिगाड़ देगी।

[प्रस्थान]

दृश्य २

[दुर्ग में शयनागार। डेसडेमोना शैय्या पर सो रही है। ऑथेलो दीप के साथ प्रवेश करता है।]

ऑथेलो : ओ मेरी आत्मा ! यही कारण है, यही कारण है; ओ पवित्र नक्षत्रो ! मैं तुम्हारे सामने इस जघन्य पातक को कहते हुए भी हिचकता हूँ। यह ऐसा ही कारण है। फिर भी मैं इसका रक्त नहीं बहाऊँगा। न इसकी हिम-श्वेत त्वचा की ही हानि करूँगा और न इसकी स्निग्ध-श्वेत मर्मर की सुघर प्रतिमा जैसी देह-यष्टि को ही विकृत करूँगा। किंतु इसे मरना ही होगा, अन्यथा यह न जाने कितने लोगों को छलेगी ! दीप बुझा दूं और फिर यह दीपक भी बुझा दूं। ओ ज्वलंत आलोक ! यदि मैं तुझे बुझाता हूँ और फिर मुझे खेद होता है तो फिर तुझे प्रदीप्त भी कर सकता हूँ। किंतु ओ प्रकृति के कौशल की पराकाष्ठा ! एक बार यदि मैंने तुझे बुझा दिया तो तुझे फिर से प्रदीप्त करने के लिये मैं फिर वह दैवी[1] ज्वाला कहाँ से लाऊँगा जो तू फिर लकलक कर उठे। एक बार गुलाब को तोड़ लेने के बाद तो वह मुरझायेगा ही, क्योंकि मैं उसे जीवंत शक्ति नहीं दे सकता। इसलिये मैं इसे सूंघ तो लूं ! (**डेसडेमोना का चुंबन लेता है।**) इससे पहले कि यह मुरझा जाये ! मैं इसे वृक्ष पर ही सूंघ लूं ! आह ! गंधित श्वास ! तू तो मुझे विवश कर रही है कि मैं न्याय के खड्ग का संचालन भी रोक दूं ! एक बार और ! यद्यपि न्याय कहता है कि मेरे लिये तेरी मृत्यु आवश्यक है, किंतु यदि मृत्यु के उपरांत भी तू ऐसी ही सुंदर दिखाई दी तो मैं तुझे फिर भी प्यार करूँगा। एक चुंबन और, और यही अंतिम

---

१. प्रोमेथियस एक देवता था, जिसने मनुष्यों को अग्नि दी थी। यहाँ प्रोमेथियन अग्नि का अर्थ दैवी ज्वाला है।

है ! तुझ जैसा रूप इतना घातक और भयानक तो कभी नहीं था ! तेरे भाग्य पर आँसू बहाये बिना मैं नहीं रह सकता, किंतु मेरे आँसू मेरे हृदय को नहीं पिघलाते कि मैं अपना दृढ़ निश्चय ही बदल लूं। आह निठुर आँसुओ ! कितनी दैवी वेदना है ! यह वहीं प्रहार करती है जहाँ इसका संचित प्रेम है ! यह तो जाग रही है !

डैसडेमोना : कौन है ? ऑथेलो ?

ऑथेलो : हाँ डैसडेमोना !

डैसडेमोना : क्या आप शैय्या पर आयेंगे स्वामी ?

ऑथेलो : आज रात तुमने प्रार्थना कर ली डैसडेमोना ?

डैसडेमोना : हाँ स्वामी !

ऑथेलो : यदि तुम्हें अपना कोई ऐसा अपराध याद आता है जिसकी तुमने ईश्वर से क्षमा याचना नहीं की है तो शीघ्र ही उसे समाप्त कर लो।

डैसडेमोना : क्या कहते हैं स्वामी ?

ऑथेलो : ऐसा ही करो और शीघ्र ही। मैं यहीं टहल रहा हूँ। मैं अनुद्यत आत्मा का नाश नहीं करूँगा। नहीं। ईश्वर क्षमा करे ! मैं तुम्हारी आत्मा का नाश नहीं करूँगा।

डैसडेमोना : क्या आप हत्या की बात कर रहे हैं ?

ऑथेलो : हाँ, हत्या ही।

डैसडेमोना : हे ईश्वर ! मुझ पर दया कर।

ऑथेलो : मेरे हृदय की आवाज़ है—आमीन !

डैसडेमोना : आप यह कहते हैं, तो शायद मुझे मारेंगे नहीं ?

ऑथेलो : हूँ।

डैसडेमोना : फिर भी मुझे आपसे डर लगता है, क्योंकि जब आपकी आँखें इस तरह घूमती हैं, मे जानती हूँ आप भयानक हो जाते हैं।

क्योंकि मैं निर्दोष हूँ और कोई कारण भी नहीं है, फिर मैं क्यों भयभीत रहूँ ? फिर भी न जाने क्यों मुझे भय लग रहा है !

ऑथेलो : अपने पापों का स्मरण कर लो।

डेसडेमोना : वे और कुछ नहीं, आपको प्रेम करना अवश्य एक है।

ऑथेलो : हाँ और उसी के लिये तुम्हें मरना होगा।

डेसडेमोना : किंतु तुम्हें प्रेम करने से मुझे मरना होगा। क्या यह अस्वाभाविक नहीं ? हाय ! तुम क्यों अपने होंठ चबा रहे हो ? अवश्य ही तुम्हारी हत्या करने का विचार है जो तुम इस तरह काँप रहे हो ! किंतु मुझे आशा है, मैं आशा करती हूँ, ये सब मेरे लिये तो नहीं है ?

ऑथेलो : चुप रहो। शांत। हिलो नहीं !

डेसडेमोना : मैं नहीं हिलूँगी ! लेकिन बात क्या है ?

ऑथेलो : वह रूमाल जिसे मैं इतना चाहता था और मैंने तुम्हें दिया था, वह तुमने कैसियो को दे दिया ?

डेसडेमोना : अपने जीवन और प्राणों की कसम खाकर कहती हूँ— नहीं। उसे बुलाओ और पूछ लो।

ऑथेलो : ओ सुंदर आत्मा ! अब मिथ्या शपथ से सावधान रहो ! तुम अपनी मृत्यु-शैय्या पर हो।

डेसडेमोना : नहीं, अभी से मृत्यु के लिये तो नहीं ?

ऑथेलो : हाँ-हाँ, अभी ! इसीलिये स्वतंत्रता से अपने पाप को स्वीकार कर लो ! क्योंकि यदि तुम एक-एक करके भी उन्हें अस्वीकार करती जाओगी, तब भी मेरे हृदय में से तुम्हारे अपराध की दृढ़ धारणा नहीं मिटेगी, जो मेरे हृदय को मथे दे रही है। तुम्हें मरना ही होगा।

डेसडेमोना : तब ईश्वर ही मेरा रक्षक है।

ऑथेलो : आमीन् !

डैसडेमोना : मुझ पर दया करो। मैंने तुम्हें जीवन में कभी भी क्रुद्ध नहीं किया। कभी भी कैसियो से प्रेम नहीं किया, उतना ही किया जितना ईश्वरीय नियमों से एक मनुष्य दूसरे से कर सकता है। मैंने कोई स्मृति-चिह्न नहीं दिया।

ऑथेलो : ईश्वर की शपथ ! मैंने उसके हाथ में अपना रूमाल देखा है। ओ झूठी कसम खाने वाली स्त्री ! तूने मुझे पाषाण-हृदय बना दिया है। तू मुझे हत्या की ओर प्रेरित कर रही है जब कि तेरे अंत को मैंने न्याय का बलिदान समझा था। मैंने स्वयं रूमाल देखा था।

डैसडेमोना : तो उसे मिल गया होगा। मैंने उसे कभी नहीं दिया। उसे बुलवाओ। उसे सत्य स्वीकार करने दो।

ऑथेलो : उसने स्वीकार कर लिया है !

डैसडेमोना : क्या ! मेरे स्वामी !!

ऑथेलो : कि उसने तेरा भोग किया।

डैसडेमोना : कैसे ? गैर कानूनी तरीके से ?

ऑथेलो : हाँ।

डैसडेमोना : वह ऐसा नहीं कह सकता।

ऑथेलो : हाँ। अब वह नहीं बोल सकता क्योंकि वह नहीं रहा। ईमानदार इआगो ने इसका बदला ले लिया है।

डैसडेमोना : मुझे भय है आपको छला गया है। क्या वह मर गया ?

ऑथेलो : यदि जितने उसके शरीर के बाल हैं उतने भी उसके जीवन होते तब भी मेरी प्रतिहिंसा इतनी बड़ी है कि उन सबसे बदला लेती।

डैसडेमोना : हाय ! वह धोखा खा गया और मैं बरबाद हो गई।।

ऑथेलो : चुप रह वेश्या ! मेरे सामने ही तू उसके लिये रो रही है ?

डेसडेमोना : मेरे स्वामी मुझे निर्वासित कर दें, पर मेरे प्राण न लें ।

ऑथेलो : पड़ी रह वेश्या !

डेसडेमोना : कल मुझे मार डालना । आज भर जीवित रहने दो !

ऑथेलो : नहीं, यदि तूने प्रयत्न किया ····

डेसडेमोना : केवल आध घंटा और ····

ऑथेलो : अब क्या देर जब निश्चय हो गया ····

डेसडेमोना : एक बार प्रार्थना तो कर लूँ ····

ऑथेलो : अब बहुत देर हो गई ।

[**गला घोंटता है ।**]

इमीलिया : (**नेपथ्य से**) स्वामी ! प्रभु ! स्वामी ! मेरे प्रभु !

ऑथेलो : कौन बुला रहा है ? क्या अभी नहीं मरी ? मैं जो इतना निर्दय हूँ फिर भी कितना दयालु हूँ ·· मैं तुझे वेदना में तड़पने नहीं दूंगा ···· ले ले ···!

[**फिर गला घोंटता है ।**]

इमीलिया : (**नेपथ्य से**) स्वामी ! सुनिये ! प्रभु !

ऑथेलो : कौन है ?

इमीलिया : (**नेपथ्य से**) मेरे स्वामी ! मैं आपसे एक बात कहना चाहती हूँ ।

ऑथेलो : हाँ, वही है, इमीलिया । ठहरो । वह मर गई है । मालूम देता है वह कैसियो की मौत की ख़बर देने आई है । हा ! अब यह बिल्कुल नहीं हिलती । क़ब्र की तरह ख़ामोश ! चुप ! क्या उसे भीतर बुला लूँ ? क्या यह ठीक होगा ? क्या यह फिर हिल रही है ? नहीं ! अब सबसे अच्छी बात क्या होगी ? यदि वह भीतर आयेगी तो वह ज़रूर मेरी स्त्री से बातें करेगी । मेरी स्त्री ! मेरी पत्नी ! कौन-सी पत्नी ! मेरी कोई पत्नी नहीं है। ओ असहनीय !

ओ भयानक क्षण ! ऐसा लगता है जैसे चंद्र और सूर्य्य को देर से ग्रहण ने ग्रस कर घोर अंधकार कर दिया है और भयभीत पृथ्वी मुँह खोल कर भयानक जमुहाइयाँ ले रही है।

इमीलिया : (**नेपथ्य से**) मैं प्रार्थना करती हूँ, मेरे स्वामी। मुझे भीतर आने दीजिये, मैं कुछ कहना चाहती हूँ।

ऑथेलो : अरे मैं तो तुझे भूल ही गया था! इमीलिया, भीतर आ जाओ। धीरे, ठहरो ! मुझे पर्दे खींच लेने दो। कहाँ हो तुम ?

[**द्वार का ताला खोलता है। इमीलिया का प्रवेश**]

क्या बात है ?

इमीलिया : मेरे प्रिय स्वामी ! वहाँ भयानक हत्या हो गई।

ऑथेलो : क्या इस समय ?

इमीलिया : हाँ देव। अभी।

ऑथेलो : यह तो चंद्रमा का ही दोष है। वही मनुष्यों पर अपना भयानक प्रभाव डालता हुआ अपना पथ छोड़ कर घूम रहा है।

इमीलिया : कैसियो ने, देव ! एक रोडरिगो नामक तरुण वेनिसवासी की हत्या कर दी है।

ऑथेलो : रोडरिगो मर गया। और कैसियो भी मर गया ?

इमीलिया : नहीं, कैसियो नहीं मरा।

ऑथेलो : क्या कैसियो नहीं मरा ! तब हत्या चूक गई और प्रिय प्रतिहिंसा कठोर और तीखी हो गई। आनंद नहीं आया।

डैसडेमोना : हाय मैं झूठ के लिये मारी गई।

इमीलिया : प्रभु ! यह कैसी पुकार है ?

ऑथेलो : क्या ? कैसी ?

इमीलिया : हाय ! वह तो मेरी स्वामिनी का स्वर था ! बचाओ ! बचाओ ! अरे ! बचाओ ! अरे ! स्वामिनी ! फिर बोलिये !

प्रिय डैसडेमोना ! ग्रो प्रिय स्वामिनी ! बोलो !

डैसडेमोना : मैं निर्दोष मरती हूँ ।

इमीलिया : हाय ! ऐसा काम किसने किया ?

डैसडेमोना : किसी ने नहीं ··· मैंने ही ···· बिदा ···· मेरे स्वामी से मेरी ग्रोर से कहो ···· ग्रल ··· बिदा ··

[मृत्यु]

ग्रॉथेलो : किस प्रकार इसकी हत्या हुई ?

इमीलिया : कौन जाने !

ग्रॉथेलो : तुम्हें याद है न, इसने कहा था कि मैंने ऐसा नही किया !

इमीलिया : हाँ, इन्होंने कहा था । मैं सत्य ही कहूँगी ।

ग्रॉथेलो : वह एक महान झूठी थी । वह नरक की ज्वालाग्रों में जलने के लिये चली गई है । मैंने ही उसकी हत्या की है ।

इमीलिया : तब तो वह वास्तव में कितनी महान देवी है ग्रौर तुम ग्रौर भी भयानक शैतान हो ।

ग्रॉथेलो : वह वासनामय स्त्री परपुरुषगामिनी थी, वेश्या की भाँति थी।

इमीलिया : कितनी नीचता से तुम उसकी व्यर्थ निंदा करते हो ग्रौर तुम पूरे शैतान हो !

ग्रॉथेलो : वह जल की भाँति चंचल थी ।

इमीलिया : ग्रौर तुम उसे विश्वासघातिनी कहते हुए ग्रग्नि की भाँति क्रूर ग्रौर हठी हो । वह देवी थी, पतिव्रता ।

ग्रॉथेलो : यदि मुझे इतने उग्र पथ पर चलने के ठोस कारण न होते तो मैं इतनी जघन्य धिक्कार का पात्र होता कि नरक की भी निम्नतम गहराई मुझे ग्रपने भीतर नहीं रख पाती । तुम्हारा पति सब जानता है ।

इमीलिया : मेरा पति ?

ग्रॉथेलो : हाँ तुम्हारा पति !

इमीलिया : कि वह अपने पवित्र वैवाहिक बंधन के प्रति विश्वास-घातिनी थी ?

ग्रॉथेलो : हाँ, इसके कैसियो से अनैतिक संबंध थे। यदि यह पवित्र होती तो भले ही परमात्मा ने मेरे लिये एक भिन्न संसार बनाया होता, एक ऐसा संसार जो केवल एक ही अद्भुत और अनुपम मरकतमणि को काट कर बनाया गया होता तो भी उसे मैं डैसडेमोना के बदले में स्वीकार नहीं करता।

इमीलिया : मेरा पति !

ग्रॉथेलो : हाँ ! उसी ने सबसे पहले मुझे बताया ! वह एक ईमानदार आदमी है और दुष्कर्म्मों पर चिपके कर्दम मे घृणा करता है।

इमीलिया : मेरा पति !

ग्रॉथेलो : ओ औरत ! तू क्या इसे बार-बार दुहराती है ! हाँ, तेरा पति ! तेरा पति !

इमीलिया : आह स्वामिनी ! नीचता प्रेम से अपना खेल खेल गई। मेरा पति कहे कि यह विश्वासघातिनी थी ?

ग्रॉथेलो : हाँ री स्त्री ! उसी ने कहा। मैं कहता हूँ तेरा ही पति था। समझती है न ? मेरा दोस्त, तेरा पति। ईमानदार सच्चा इआगो !

इमीलिया : यदि उसने ऐसा कहा है तो उसकी कुटिल आत्मा तिल-तिल कर सड़े। उसने गहरी झूठ बोली है। तुम जैसे गंदे पति को चुनने वाली वह स्त्री तुमसे ही बहुत प्रेम करती थी।

ग्रॉथेलो : हा . . . हा . . .

इमीलिया : जो भी बुराई कर सको करो। तुम उसके लिये ऐसे ही अयोग्य थे जैसे स्वर्ग के लिये तुम्हारा यह कार्य्य !

ग्रॉथेलो : बेहतर हो तू बोलना बन्द कर दे।

इमीलिया : जितना दुख मैं झेल सकती हूँ, मुझे नुकसान पहुँचाने की उससे आधी भी ताकत तुममें नहीं है। ओ मूर्ख ! ओ बोदे ! धूल और कूड़े की तरह अज्ञानी, व्यर्थ ! तूने कितना भयानक कार्य्य किया है, मैं तेरी तलवार से नहीं डरती, मैं संसार में तेरा नाम सबसे कह दूंगी, भले ही मुझे अपने बीस जीवन खोने पड़ें ... बचाओ .. बचाओ ... अरे बचाओ ... मूर ने मेरी स्वामिनी की हत्या कर दी है ... खून ... खून ...

[**मोनटानो, ग्रेशियानो, इत्यादि का प्रवेश**]

मोनटानो : क्या बात हुई ? क्यों जनरल ! क्या हुआ ?

इमीलिया : अच्छा इआगो ! तुम आ गये ! खूब किया तुमने ! अच्छा है कि लोग खून करके तुम पर ज़िम्मेदारी थोपें।

ग्रेशियानो : बात क्या है ?

इमीलिया : (**इआगो से**) यदि तुम आदमी हो तो इस नीच (**ऑथेलो**) की बात को काटो। यह कहता है कि तुमने इससे कहा था कि इसकी स्त्री विश्वासघातिनी थी। मैं जानती हूँ तुमने नहीं कहा होगा, तुम ऐसे कमीने नहीं हो। बोलो ! मेरा हृदय भर आया है।

इआगो : जो मैंने सोचा वही मैंने इनसे कहा था, जो मुझे सच और ठीक लगा उससे अधिक मैंने कुछ नहीं कहा।

इमीलिया : पर क्या तुमने कभी इससे कहा था कि वह कुटिला थी ?

इआगो : हाँ कहा था।

इमीलिया : तब तू भी झूठा है, घृणित है, झूठा शैतान है। परमात्मा की सौगन्ध यह एक भीषण झूठ है कि डैसडेमोना के कैसियो से अनुचित सम्बन्ध थे। क्या कहा था—कैसियो से ?

इआगो : हाँ कैसियो से ही। अब चुप रहो, अपनी जीभ पर काबू करो।

इमीलिया : मैं नहीं रुकूंगी। मैं तो जरूर बोलूंगी। मेरी स्वामिनी

बिस्तर में पड़ी है, उसकी हत्या हुई है।

सब : हे भगवान ! यह क्या हुआ !

इमीलिया : **(इआगो से)** तो तुम्हारी ख़बरों से आँथेलो ने भड़क कर यह हत्या की है ?

आँथेलो : नहीं सज्जनो ! इस तरह आँखें फाड़कर न देखिये। वास्तव में यह सच है।

ग्रेशियानो : कितना विचित्र सत्य है।

मोनटानो : कितना भयानक कार्य्य है !

इमीलिया : नीचता ! कमीनापन ! बदमाशी ! मुझे इसमें भयानक शैतानी दिखाई दे रही है। जी करता है, मैं तो इस पीड़ा से मर जाऊँ।

इआगो : क्या तुम होश में नहीं हो। मैं कहता हूँ घर चली जाओ।

इमीलिया : योग्य सज्जनो। मुझे बोलने की आज्ञा दो। यही उचित है कि मैं इसकी आज्ञा का पालन करूँ। किंतु इस समय नहीं। शायद इआगो अब कभी घर नहीं लौटेगा।

आँथेलो : ओह ! ओह !

[बिस्तर पर गिरता है।]

इमीलिया : नहीं। वहीं पड़े-पड़े अब दहाड़ो क्योंकि तुमने इस संसार के सबसे सुन्दर जीवित प्राणी की हत्या की है !

आँथेलो : **(उठ कर)** नहीं वह विश्वासघातिनी थी ! **(ग्रेशियानो से)** अरे चाचा ! मैं तो आपको पहँचान भी नहीं पाया। वह रही आपकी भतीजी ! मैंने ही अभी उसका गला घोंटा है। मैं जानता हूँ यह कार्य्य भयानक और राक्षसी प्रतीत होता है।

ग्रेशियानो : बेचारी डैसडेमोना ! मैं इसी बात से प्रसन्न हूँ, तेरे जिस पिता को तेरे विवाह से गहरा धक्का लगा था अचानक ही कुछ

समय पहले मर चुका है। अब यदि वह जीवित रहता तो इस दृश्य ने तो उसे पागल कर दिया होता। सच! उसमें से भलमनसाहत तो बिल्कुल ही चली गई होती और वह फिर बुरे ही बुरे कामों में लग जाता।

ऑथेलो : सच यह बहुत बुरी बात है। लेकिन इआगो जानता है कि डैसडेमोना के कैसियो से अनुचित संबंध थे। कैसियो ने इस बात को स्वयं स्वीकार किया था। और इसने अपने प्रेम की यादगार के तौर पर कैसियो को एक भेंट भी दी थी जो कि एक दफ़ा मैंने इसे दी थी। मैंने स्वयं अपना रूमाल देखा था—वह मेरे पिता ने मेरी माता को दिया था, वह कैसियो के हाथ में था।

इमीलिया : ओ दैवी शक्तियो! हे भगवान!

इआगो : चुप रहो! ज़बान पर काबू करो!

इमीलिया : अब तो सचाई को बाहर आना ही पड़ेगा। मैं क्यों न बोलूं। मैं तो निडर हो कर बोलूंगी। ऐसे जैसे उत्तर का निर्भीक प्रभंजन चलता है। चाहे परमात्मा, सारे मनुष्य और सारे शैतान मिल कर भी क्यों न मेरे विरुद्ध चिल्ला उठें ... 'धिक्कार है निर्लज्ज' ... किन्तु फिर भी मैं बोलूंगी।

इआगो : अक्ल से काम लो और घर जाओ।

इमीलिया : नहीं जाऊँगी!

[इआगो इमीलिया को तलवार से मारने का प्रयत्न करता है।]

ग्रेशियानो : क्या स्त्री पर तलवार उठाते हो? धिक्कार है!

इमीलिया : ओ मूर्ख मूर! तू उस रूमाल की कहता है? वह तो किस्मत से मुझे मिल गया था और मैंने अपने पति को दिया था क्योंकि अक्सर कर यह बहुत ही अनुनय करके, इतना कि इतनी-सी चीज़

के लिये कोई नहीं करता, मुझसे उसे चुरा लेने की प्रार्थना किया करता था।

इआगो : ओ बदमाश छिनाल !

इमीलिया : डैसडेमोना ने उसे कैसियो को दिया था! नहीं। हाय ! वह मुझे मिला था और मैंने उसे अपने पति को दिया था।

इआगो : नीच, तू झूठ बोलती है !

इमीलिया : ईश्वर की सौगंध ! मैं झूठ नहीं कहती, मै झूठ नहीं बोलती। सज्जनो ! अरे हत्यारे मूर्ख ! क्या ऐसा मूर्ख ऐसी कुलीन स्त्री के योग्य था !

ऑथेलो : क्या आकाश में अब ऐसा कोई वज्र नहीं जो इस जघन्य पर टूट सके ? ओ महान नीच ! नराधम !

[**इआगो पर हमला करने दौड़ता है। इआगो पीछे से इमीलिया के तलवार घुसेड़ कर भाग जाता है।**]

ग्रेशियानो : स्त्री गिर गई। निश्चित ही उसने अपनी स्त्री की हत्या कर दी।

इमीलिया : आह उसने मुझे मार डाला···मुझे मेरी स्वामिनी के पास ही लिटाना···

ग्रेशियानो : वह भाग गया किन्तु उसकी स्त्री मारी गई !

मोनटानो : यह तो बड़ा भारी बदमाश था ! यह लीजिये, यह शस्त्र जो मैंने अभी मूर से छीन लिया है। आइये, द्वार पर दृष्टि रखिये। उसे जाने न दें। अगर भागने की चेष्टा करे तो जान से मार डालें। मैं उसी बदमाश के पीछे जाता हूँ, कैसा नीच गुलाम है।

[**सब जाते हैं। ऑथेलो और इमीलिया रह जाते हैं।**]

ऑथेलो : अब मुझमें वह वीरता भी नहीं रही। एक तुच्छ व्यक्ति मेरे हाथ से मेरी तलवार छीन ले गया ! और ईमानदारी से हट कर

सम्मान रहे भी कहाँ ? जाने दो, सब कुछ जाने दो !

इमोलिया : तुम्हारे गीत ने क्या भविष्य की छाया दिखादी देवी ! सुनती हो ! क्या मेरी सुन रही हो ? मैं हंसिनी हूँ, संगीत में मेरा अंत है ।[1]

[गीत]

चीड़ के ऊँचे घने तरु की
सलोनी छांह में......
दीन मन कितनी न भर लीं आह हैं
गीत गाती जा सलोनी बेल से......

मूर ! वह पतिव्रता स्त्री थी ... वह तुम्हें प्यार करती थी निर्दय मूर ! मैंने सत्य कहा है, मेरी आत्मा पवित्र हो ... मैंने सत्य कहा है ... यही कहते हुए ... मैं मरती हूँ ... मैं मरती हूँ ...

[मृत्यु]

ऑथेलो : मेरे पास इस कमरे में एक और शस्त्र है । वह स्पेन की तलवार है, बर्फीले पानी में बुझा कर उसका लोहा तैयार किया गया है ... यह रही (**पुकार कर**) चाचा ! मैं बाहर आऊँगा ।

ग्रेशियानो : (**नेपथ्य से**) यदि तुम ऐसा प्रयत्न करोगे तो गहरा मोल चुकाओगे । तुम्हारे पास कोई आयुध नहीं और विवश होकर तुम्हें हानि उठानी पड़ेगी ।

ऑथेलो : इधर देखो और तब बात करो । क्या मैं आयुधहीन हूँ, लो मैं आक्रमण करता हूँ ।

[**ग्रेशियानो का प्रवेश**]

ग्रेशियानो : क्या बात है ?

ऑथेलो : यह देखो, मेरे पास शस्त्र है । किसी सैनिक के पास इससे

---

१. कहते हैं, मरते समय हंस गाता है ।

अच्छा शस्त्र नहीं था। एक दिन मैंने ऐसा भी देखा है जब इस छोटे-से तीखे खड्ग से मैंने ऐसे पथ की बाधाएँ दूर की हैं जो तुम जैसी बाधा से बीस गुनी भयानक थीं। किंतु अब यह सब व्यर्थ की प्रशंसा है। कौन अपने भाग्य पर विजय पा सकता है? अब वह सब नहीं रहा। किंतु मुझे सशस्त्र देख कर भयभीत न होओ। मैं अपनी जीवन-यात्रा के अंत तक आ पहुँचा हूँ। यही मेरी मंज़िल है और इससे आगे मेरा गंतव्य नही, यही मेरी गति का अंतिम लक्ष्य है। क्या तुम्हें इसका खेद है! अब यह सब एक विनष्ट भय-मात्र है। अब तो कोई भी आँथेलो को मार सकता है। आँथेलो अब कहाँ जाये? इस अपराध के बाद उसको कहाँ शरण है? **(डैसडेमोना के पास जा कर)** ओ हत भागिनी! क्या देख रही है तू! कैसी पीली पड़ गई है तू! जैसे तेरा अधोवस्त्र हो! क्या हम अब न्याय के दिन मिलेंगे? तेरी यह दृष्टि तो मेरी आत्मा को स्वर्ग से नीचे फेंक देगी और शैतान इसे पकड़ लेंगे। कैसी शीतल हो गई है, निर्जीव! जैसे तेरा पातिव्रत था। ओ नीच अभिशप्तदास! ओ शैतानो! मुझे मारो, मुझे कोड़े मारो! इतना मारो कि मैं इस दैवी दृश्य से दूर हो जाऊँ! मुझे तूफानों में तिनके की तरह उड़ाओ! मुझे खौलते हुए गंधक में उबालो! मुझे अथाह तरल अग्नि की खाड़ियों में बार-बार भिगो कर पछाड़ो! ओ डैसडेमोना! डैसडेमोना! तू मर गई है · · · हा-हा-हा · · · ·

[लोडोविको, मोनटानो, कैसियो को एक कुर्सी में उठाये कुछ लोग तथा अन्य अफ़सर इआगो को बंदी बना कर लाते हैं।]

लोडोविको : वह आतुर और अत्यंत हतभागी कहाँ है?

आँथेलो : क्या तुम्हारा मतलब उससे है जो पहले आँथेलो कहलाता था! लो वह मैं हूँ!

लोडोविको : ग्रौर वह धोखेबाज़ कहाँ है। पकड़ के लाग्रो उस नराधम को।

ग्रॉथेलो : मैं उसके पाँव तो देख लूं[1] ! लेकिन वह तो एक दंतकथा है। किंतु एक शैतान मैं स्वयं हूँ, मैं तुझे कैसे मारूँ · · · ·

[इग्रागो को घायल करता है।]

लोडोविको : इससे वह तलवार छीन लो।

इग्रागो : मैं घायल हो गया हूँ श्रीमान् मगर मरा नहीं हूँ।

ग्रॉथेलो : मुझे इसका खेद नहीं है। मैं यही चाहता हूँ कि तुम जीवित रहो। क्योंकि मेरी राय में मृत्यु तो छुटकारा है। ग्रानंद है।

लोडोविको : ग्ररे ग्रॉथेलो ! एक समय तुम इतने वीर ग्रौर उदात्त थे किन्तु तुम इस ग्रभिशप्त दास के कुटिल षड्यंत्र में फंस गये। तुम्हारे बारे में क्या कहा जाये ?

ग्रॉथेलो : मुझसे कुछ भी क्यों न कहा जाये श्रीमान् · · · मैं एक सम्माननीय हत्यारा हूँ · · · क्योंकि मैंने घृणा से हत्या नहीं की। ग्रात्मसम्मान के लिये की है · · ·

लोडोविको : इस नीच ने कुछ हद तक तो ग्रपनी बदमाशी को मंजूर कर लिया है। क्या तुमने ग्रौर इसने मिल कर कैसियो की हत्या का ग्रायोजन किया था ?

ग्रॉथेलो : हाँ।

कैसियो : किन्तु प्रिय जनरल ! मैंने तो ग्रापका कुछ नहीं बिगाड़ा था ?

ग्रॉथेलो : मैं मानता हूँ, ग्रौर क्षमा चाहता हूँ। क्या तुम मनुष्य के रूप में छिपे इस (**इग्रागो**) शैतान से पूछोगे कि किस लिये इसने मेरे शरीर ग्रौर ग्रात्मा को ग्रपने जाल में फँसाया ?

---

१. शैतान के पांव नहीं खुर होते हैं।

इआगो : मुझसे कुछ मत पूछो। जो तुम जानते हो वही जानो। अब से मैं एक भी शब्द नहीं बोलूंगा।

लोडोविको : प्रार्थना भी नहीं करोगे ?

ग्रेशियानो : यातना मिलेगी न, तो आप बोलने लगेगा। वही इसकी जीभ खुलवायेगी।

ऑथेलो : यही सबसे अच्छा रहेगा।

लोडोविको : मैं जहाँ तक समझता हूँ आप नहीं जानते, पर अब सब समझ जायेंगे। यह मृत रोडरिगो की जेब से निकला हुआ एक पत्र है और यह एक और है। इनमें से एक पत्र से ज्ञात होता है कि रोडरिगो ने कैसियो की हत्या करने का भार उठाया था।

ऑथेलो : ओह कैसा बदमाश था !

कैसियो : शैतान ! भयानक ! क्रूर !

लोडोविको : यह दूसरा पत्र है, जिसमें रोडरिगो इआगो से शिकायत करता है कि इसने डैसडेमोना के सम्बन्ध में अपने वादे पूरे नहीं किये। यह पत्र रोडरिगो इस नीच बदमाश इआगो को भेजना चाहता था लेकिन बीच में ही इआगो उससे मिला और इसने उसे किसी तरह समझा-बुझा दिया।

ऑथेलो : ओ कमीने बदमाश !! सुनो कैसियो ! तुमको मेरी पत्नी का रूमाल कैसे मिला ?

कैसियो : वह मुझे अपने कमरे में पड़ा मिला, पर अब तो इसने स्वीकार ही कर लिया है कि इसी ने अपना उल्लू साधने को उसे विशेषकर मेरे कमरे में डाला था।

ऑथेलो : सुन ले मूर्ख ! सुन ले ! मूर्ख ! नितांत मूर्ख !

कैसियो : रोडरिगो के पत्र में इआगो को बुरा-भला भी कहा गया है, क्योंकि इसने उसे उत्सव की रात को मुझसे ड्यूटी के वक्त भिड़ा

दिया था जिसकी वजह से मेरी नौकरी जाती रही। और अभी-अभी रोडरिगो जो काफ़ी देर तक ज़ाहिरा तौर पर मुर्दा-सा पड़ा रहा, कुछ देर को उठा था और उसने बताया था कि मुझ पर हमला करके घायल करने वाला इआगो ही था।

लोडोविको : आप अब इस कमरे को छोड़ें और हमारे साथ आयें। आप साइप्रस के अधिकार से वंचित किये जाते हैं और आपकी जगह कैसियो शासन करेंगे। और जहाँ तक इस गुलाम इआगो का सवाल है, इसको तो भयानक से भयानक दण्ड दिया जायेगा जिसमें इसे बहुत ही कड़ी यातना झेलनी पड़े। आप तब तक बंदी बनाकर रखे जायेंगे जब तक आपके अपराध की सूचना वेनिस सरकार तक नहीं पहुँचा दी जाती।

ऑथेलो : आपके जाने के पहले मै दो शब्द कहना चाहता हूँ। जाने के पहले मुझे बोलने की आज्ञा दीजिये। वे जानते हैं कि मैंने राज्य की क्या-क्या सेवाएँ की हैं और अब मैं उनका गर्व भी नहीं करूँगा। मैं आपसे केवल यही प्रार्थना करता हूँ कि इस हतभाग्य घटना का वर्णन करते समय आप जब मेरे विषय को लें तब वही लिखें जैसा कि मै वास्तव में था। न कुछ कम करें, न विद्वेष से कुछ बढ़ायें ही, तब आपको यही लिखना होगा कि मैंने बुद्धिमानी से नहीं, वरन् बहुत गहराई से प्रेम किया था। मेरी ईर्ष्या मामूली बातों से नहीं जाग सकती थी, किंतु जब एक बार वह भड़क उठती थी तो वह मुझे पराकाष्ठा की यातना देती थी। मैं ऐसा था जिसने एक अमूल्य और अद्वितीय स्त्री खो दी थी, जैसे कोई नीच भारतीय अपनी जाति से भी मूल्यवान मोती को फेंक देता है। मैं ऐसा था जिसकी आंखें नहीं बरसती थीं, किंतु अब जब रोने को

मजबूर किया गया हूँ तो आँसू ऐसे टपक रहे हैं जैसे अरब के वृक्षों का गोंद टपका करता है। यह सब लिखना और अंत में लिखना कि एक बार एलप्पो में जब एक ईर्ष्यालु साफा बाँधे तुर्क ने एक वेनिसवासी को मारा और हमारे राज्य को गाली दी, तब मैंने उस सुन्नत किये हुए कुत्ते की गर्दन पकड़ ली और इस तरह से उसे मार डाला जैसे अब मैं अपने को मारता हूँ....

[आत्महत्या करता है।]

लोडोविको : कैसा भयानक समय है !

ग्रेशियानो : हमारा सारा विवाद ही ऑथेलो की आत्महत्या से व्यर्थ हो गया....

ऑथेलो : (डेसडेमोना से) मैने तेरी हत्या करने के पहले तेरा चुंबन लिया था .. इसी तरह जैसे अब लेता हूँ ... अब मैं भी मरता हूँ....एक चुबन पर न्यौछावर होकर....

[शैय्या पर गिरकर मृत्यु]

कैसियो : मुझे तो इसका पहले ही डर था। पर मै समझता था इसके पास आयुध नहीं है अतः अपने को मार नहीं सकेगा। निस्संदेह इसका हृदय महान् था !

लोडोविको : (इआगो से) अरे बर्बर कुत्ते ! तू बुभुक्षा, उन्नद्ध सिंधु और विक्षोभ से भी अधिक क्रूर है। देख इस शैय्या पर कितनी वेदना संचित पड़ी है। यह तेरा कार्य्य है : देखकर ही नयनों में विषाक्त छाया पड़ती है। इन्हें ढँक दो। इन्हें ढँक दो। ग्रेशियानो ! तुम इस घर की देखभाल करो। मूर की संपत्ति पर अधिकार कर लो, क्योंकि तुम ही इसके उत्तराधिकारी हो। श्रीमन्त गवर्नर ! अब यह आप पर निर्भर है कि इस कमीने शैतान को आप कैसी सज़ा दें—इसे यातना देने का समय, स्थान और तरीका आपकी मर्ज़ी

पर है और कृपया खूब कड़ाई से काम लीजियेगा। और जहाँ तक मेरा सवाल है मैं जहाज़ में बैठकर लौट जाता हूँ और यह दुखद घटना भारी हृदय से राज्य को सुनाऊँगा।

[प्रस्थान]